स्थापित - 1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

मार्च 2024, पृष्ठ : 52, मूल्य 6:00 रूपये

होली चातुर्मास महापर्व

होली चातुर्मास के आगमन पर आप सभी आध्यात्मिक आराधना कर
धर्मरूपी रंगों से अपनी आत्मा को रंगें।
सबका मंगल हो...! सबका भला हो...! सबका कल्याण हो...!
जगत् के समस्त प्राणी सुखी रहें।
इन्हीं भावों को भाते हुये अधिकाधिक
जप - तप स्वाध्याय धर्म अराधना कर पर्व को सार्थक करें।

जैन धर्म दिवाकर, राष्ट्रसंत, आचार्य सम्राट्, पूज्य गुरूदेव

श्री आनन्दऋषि जी म. सा.

32वाँ पुण्य स्मृति दिवस

28 मार्च 1992 पर

कोटिशः वन्दन नमन - पावन स्मरण

।। विनम्र श्रद्धांजलि ।।

-: जन्म :-
1 मार्च 1934

-: स्वर्गवास :-
27 फरवरी 2024

सरलमना - धर्मपरायणा - सुश्राविका

श्रीमती कमला बाईजी मेहता

धर्मपत्नी : स्व. सेठ श्री सुल्तानसिंह जी मेहता बडी सादड़ी

मातुश्री श्री अशोकजी मेहता - सूरत - (राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष जैन कांफ्रेंस, नई दिल्ली)

पूज्य मातुश्री के श्रीचरणों में समस्त मेहता परिवार की ओर से

भाव नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि

।। नमनकर्ता ।।

स्व. करणसिंह - शशिलता, अमरसिंह - तृप्ति, अशोक कुमार - मंजू,
अभयकुमार (पूर्व ब्लॉक कांग्रेस, अध्यक्ष) संगीता
राकेशकुमार - सरिता (पुत्र - पुत्रवधु), स्व. श्यामलालजी - संतोष (पुत्री - दामाद)
रौनक - चांदनी, शौतल - सलोनी (पौत्र - पौत्रवधु), भव्य रचित, संभव (पौत्र)
कीति - मनीष, पारूल - प्रणय, प्राची - जैनम, अपेक्षा - मयंक (पौत्री - दामाद)
एंकाक्ष, पार्श्वी, धृति, (प्रपौत्र - प्रोत्री) अरविन्द, अनिल (दौहिता)
एवं समस्त मेहता परिवार ।

।। पीहर पक्ष ।।

श्री माणकचन्द, अमृतलाल, संजयकुमार कण्ठालिया परिवार, बड़ीसादड़ी
फर्म : सूची इन्डस्ट्रीज लिमिटेड, सूची सेमिकोन प्रा. लि., सूरत
रंगत एनेक्स, सूरत

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 03 | मार्च- 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक

अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

डॉ. भद्रेश कुमार जैन, चेन्नई
93822 91400

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

SHRI ALL INDIA S S JAINCONFERENCE

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

सम्पादकीय	- श्री अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री	09
अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	10-11
परिणामी बुद्धि के उदाहरण	- आचार्य सम्राट् श्री आत्मारामजी म.सा.	12-13
अध्यात्म की यात्रा	- आचार्य सम्राट् श्री शिवमुनिजी म.सा.	14
श्रमण संघीय पक्खी पत्र		15
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	16-17
विवेकपूर्ण सेवा का महत्व	- प्रवर्तक पू. श्री गणेशमुनिजी म.सा.	18-20
होली पर्व का आध्यामिक ...	- प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.	21-22
वचन गुप्ति की साधना	- प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि म.सा.	23
न्याय के मार्ग पर चले	- उप-प्रवर्तक पू. श्री उपेन्द्रमुनिजी म.सा.	24
दस श्रमण धर्म	- पू. श्री उत्तममुनिजी म.सा.	25
पू. श्री शांतिस्वरूपजी म.सा.	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	26-31
महासती ब्राह्मी		32
सेवामूर्ति श्रवणकुमार	- श्री गौतमचंद गुगलिया जैन, चेन्नई	33
बढ़ते मोबाईल, घटते संस्कार	- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई	34-35
जिन रिफ्लेक्सोलॉजी ...	- श्री अनिल जैन, संभाजीनगर	36-39
दूल्हे के दोस्तों की अनर्गल	- श्री एन. सुगालचंद जैन, चेन्नई	40
शेरे राजस्थान हमारे	- श्री मोतीलाल टेवाली, सुमेरपुर पाली	41
माँ-बाप इस दुनिया की ...	- श्री सुमति छल्लाणी जैन, चेन्नई	42
छोटी - छोटी बातें	- श्री इन्दरचंद कोठारी जैन, कोयम्बतूर	43-44
माँ स्वरूपा बहना	- सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	45
घर को घर वही बनाती है	- सौ. रत्नीबाई मेहता जैन, बैंगलोर	46
राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा फरवरी माह में सम्पन्न		47
समाचार प्रकाश		48-49
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : *लेखक / प्रेषक द्वारा लिखे गए विचारों, सामग्री एवं विषय व उसकी प्रमाणिकता के लिए सम्पादक या जैन कॉन्फ्रेंस जिम्मेदार नहीं है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी रचनाएं मौलिक एवं आवश्यकतानुसार सन्दर्भ-युक्त हों। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।*

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री ज्ञानप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई	98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत	98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे	98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर	93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर	93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई	98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर	98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद	92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई	98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई	94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर	98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली	98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर	78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली	98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता	98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना	70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे	98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई	98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी	87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर	94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद	99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली	98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे	98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे	98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर	93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर	98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत	70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई	98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर	94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर	99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर	93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर	98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर	92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती	98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर)	98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर	93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर	98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद	92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना	98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर	98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत	98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता **12 वर्ष**	**रु. 1000/-**

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्‌म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर	99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे	88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर	99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर	93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद	95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई	99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना	98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत	99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर	98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत	93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली	94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक	83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर	98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर	98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर	98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद	98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई	98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना	99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल	98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद	95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर	97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम	94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद	98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर	98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली	98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर	94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे	98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर	98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली	99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर	96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली	97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना	95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर	98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना	98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी	90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर	98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर	98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर	98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर	98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी	98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक	95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली	98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा	94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर	89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर	89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक	98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु	98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब	88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा	92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश	87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली	99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान	94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश	94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र	94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे	79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात	93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक	98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना	98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु	98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब	99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा	94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश	93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली	98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान	94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश	98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र	92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे	93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत	93745 44139

सम्पादकीय

समाज सेवा धर्म साधना जैसी हो।

E-mail: ajvk1973@gmail.com

- अतुल जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

आदरणीय पाठकगण-आत्मप्रिय बंधुओं,

सादर जयजिनेन्द्र!

समाज में पिछड़ गए बंधुओं को मुख्य धारा में लाने, उनकी समस्याओं को समाधान की दिशा देने और परेशानियों को सुलझाने को ही समाज सेवा कहते हैं। समाज सेवा एक साधना है, जितना ही इसे हम साधना की भावना से करेंगे उतना ही आनंद, आत्म संतोष, और आत्म तृप्ति मिलेगी और मिलेगा जन मानस की श्रद्धा और विश्वास का प्रतिसाद, जो सस्ती वाहवाही, दिखावटी संतोष से लाखों गुना कीमती है। समाज सेवा को जब तक कोई आध्यात्मिक साधना के रूप में नहीं देखता तब तक वह समाज सेवा से केवल अपने अहंकार को ही बढ़ाएगा, पर समाज सेवा को आध्यात्मिक कृत्य समझकर ही सेवा से सम्यक् लाभ उठाया जा सकता है।

लोगों के विकास की गति एक समान नहीं है, जहाँ एक व्यक्ति जीवन लगाकर किसी बीमारी का इलाज खोज लेता है तो उसी वक्त पर कोई व्यक्ति किसी पत्थर पर सिंदूर चढ़ाकर अपनी बीमारी ठीक करने की प्रार्थना कर रहा होता है। मनुष्य विचार के स्तर पर अलग-अलग स्तर पर हैं। आर्थिक स्थिति भी अलग-अलग है, सामाजिक स्थिति भी सबकी अलग-अलग है। किसी के विचारों में उदारता तो किसी के विचारों में क्षुद्रता होती, कोई आर्थिक स्तर पर कुबेर से होड़ करता है तो कोई बिचारा हाड़ तोड़ मेहनत करके एक दिन की रोटी-सब्जी जितना ही कमाता है, एक व्यक्ति देश-विदेश घूमता हुआ बड़े कुलीन लोगों में बैठक करता है तो दूसरी ओर एक व्यक्ति नौकरी न लग पाने की चिंता में घुलता रहता है।

रहन-सहन के स्तर पर भी बड़े भेद समाज में नजर आते ही हैं। अब बात यह है कि क्या इस भेद को मिटाया या समाप्त किया जा सकता है तो अब जिस युग में हम पहुंच गए हैं वहाँ तो असम्भव जैसा ही है। मेरा जो आग्रह है वो ये नहीं है कि समाज सेवा के नाम पर सभी को एक जैसा बना दो, बस इतना ही आग्रह है कि समाज में किसी भी प्रकार का भेद राई और पहाड़ जैसा न होने पाए। एक बच्चा पढ़ना चाहता है तो ऐसा न हो कि उसे कूड़ा बीनना पड़े, प्रत्येक मनुष्य को अपने विकास के समुचित अवसर मिले यह पूरे समाज का दायित्व है और यदि ऐसा हो नहीं रहा तो करुणा पूर्ण हाथ बढ़ाकर उन्हें उचित धारा में लाना यह हम सबका कर्तव्य है।

समाज सेवा एक आध्यात्मिक साधना है पर जैसे आजकल आध्यात्मिक साधना में भी अधिकतर आडंबर और दिखावा रह गया है वैसे ही बहुत से लोगों ने अपने-अपने हीन आचरण और अनुदार चित्त से समाज सेवा को भी दूषित कर दिया है। समाज सेवा करके उसका प्रदर्शन करना, समाज सेवा करने से ज्यादा समाजसेवी कहलाने का सुख लेना ये सब विकृति है। जब हम ध्यान, साधना, सामायिक, स्वाध्याय करते हैं तो हम ये थोड़ी सोचते हैं कि मुझे कोई देख रहा है या नहीं, कोई देखेगा तो ही ध्यान, सामायिक आदि करूंगा नहीं तो नहीं करूंगा। समाज सेवा का अर्थ भी यही है कोई देखे या न देखे, कोई जाने या न जाने, कोई प्रशंसा करे या न करे, हमें बस करुणा, दया से भर कर जरूरतमंद तबके तक पहुँच कर उन्हें आवश्यक अवसर और सुविधा पहुँचा दें।

बहुत से लोगों को समाज सेवा के लिए दौड़ भाग करते हुए देखा जा सकता है, आज अनाथ आश्रम में भोजन बांट रहे, आज हॉस्पिटल में फल वितरण का काम कर रहे, आज उस संस्था में बुजुर्गों की सेवा पर व्यख्यान है पर अपने बिल्कुल आसपास देखना जैसे उन्हें बंद ही हो गया होता है। देखा जाये तो ऐसे लोग समाज सेवा से केवल वाहवाही चाहते हैं जो उनके झूठे अहंकार को पोषण देता रहता है। असली समाज सेवा करुणा से जन्म लेती है जो आध्यात्मिक साधना बनकर समाजसेवी को आत्म-कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ाती है। समाज सेवा से आत्म उन्नति होगी ही होगी और अगर ऐसा नहीं हो रहा तो समझों समाज सेवा के नाम पर गड़बड़ी चल रही है।

बहुत से समाज सेवानिष्ठ लोग आज भी उदार भाव से चुपचाप अपने सद्कार्य में लगे हैं। आप और हम संसार भर को नहीं संभाल सकते, परन्तु जैसे दीपक संसार भर का अंधेरा दूर नहीं करता पर जहाँ भी जलता है वहाँ से सारा अंधेरा हटा देता है। हम भी अपनी सेवाओं से आवश्यक अवसर और सुविधा पहुँचाकर सबकी उन्नति के निमित्त बनें। इन्हीं भावनाओं के साथ पुनः सादर जय जिनेन्द्र! ❖❖

अध्यक्षीय उद्‌गार

आचार्य श्री विद्यासागरजी म.सा. का संपूर्ण जीवन : प्रेरणा से परिपूर्ण

E-mail : rjachallani@gmail.com

– आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

जैन धर्म के महामना संत आचार्य श्री विद्यासागरजी म. सा. 78 वर्ष की आयु में छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में तीन दिन के संथारा एवं संलेखना धारण कर समाधि के साथ इहलोक से परलोक की ओर महाप्रयाण किया। उनकी देह को चौबीस घंटों में ही अग्नि ने अपने में समा लिया। मीडिया के द्वारा आप सभी ने आचार्यश्रीजी के जीवन के बारे में बहुत कुछ देखा-सुना ही होगा।

आपका जीवन अस्ताचल की ओर था तो आचार्यश्रीजी ने अपने पिच्छी से जनसमूह में आशीर्वाद देते मानो मूलाचार की इस गाथा की अभिव्यक्ति दी –

खमामि सव्व जीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्व भूदेसु, वेरं मज्झं ण केण वि ।।

आचार्यश्री ने कठोर तपश्चरण एवं अनुशासन में जीवन जिया। आचार्यश्री कहते थे-'जैन धर्म में संकल्प कठोर नहीं' अपितु दृढ़ संकल्प होता है। बचपन की एक घटना है –

किशोर विद्याधर के मन में मुनि दीक्षा लेने के भाव आये। उनको उस समय आचार्यश्री ज्ञानसागरजी म.सा. के पास जाना था, घर वालों को उक्त बात बताते तो वे जाने नहीं देते, जब उनके मित्र मारुति को यह बात किसी परिचित के द्वारा ज्ञात हुई तो उस समय उनके मित्र ने कठिन मेहनत करके मूंगफली बेचकर 12 रुपये कमाये थे, जब सोना सौ रुपये तोला होता था (वर्तमान के 7800 रूपये हुए), मित्र मारुति, ने वे रुपये विद्यासागरजी को देने चाहे तो विद्यासागरजी ने लेने से स्पष्ट मना कर दिया तो मारुति रोने लगे और उनके चरण छू लिए और कहा – ले लो, मोक्ष-मार्ग के उपहार के तौर पर ले लो, विद्याधरजी (दीक्षा पूर्व का नाम) ने पैसे लेकर कहा- मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुकाऊँगा मित्र! मारुति बोले- दोस्ती में ऋण नहीं होता, फर्ज़ होता है, बस, तुम खूब साधना करना, मेरा सारा ऋण चुक जाएगा। जब श्री विद्यासागरजी के परिवार वालों को यह बात पता चली, तब उन्होंने मारुति को पैसे लौटाने की बहुत कोशिश की पर मित्र ने यह कहकर पैसे नहीं लिए कि यह मेरे मित्र का ऋण है, उनकी साधना से ही चुकेगा, धन्य है ऐसी मित्रता, मारुति के वहीं परम मित्र जगत् पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी बनें।

शास्त्रों में आता है कि 'निर्ग्रन्थ लिंगो निरावेक्खो' यह पंक्ति उनके जीवन में अक्षरशः चरितार्थ होती थी। उन्हें अपने गुरु से स्नेह नहीं, अपने शिष्यों से मोह नहीं, जगत् में किसी से भी मोह नहीं था, निर्लिप्त थे।

आचार्यश्री कहते थे– 'अगर किसी की प्रशंसा नहीं कर सकते तो एक नियम ले लो कि किसी की निंदा भी नहीं करेंगे।' विभिन्न विपरिस्थितियों से ग्रस्त लोगों को प्रेरणा देते हुए आचार्यश्री कहते थे– 'सुनते है भगवान्, कुछ देर से सुनते हैं, परीक्षा करते हैं, तुम बस पुरुषार्थ करते रहो, सब ठीक हो जायेगा।' जीवन के अंतिम अवसान के बारे में आप कहा करते थे – इस देह की एकमात्र यही रीत है, यह पक्का है, इसको जाना है –

'जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपनो कोय ।'

विहार-यात्रा के संस्मरण बताते कहते थे – 'लोग पूछते हैं, महाराज! कहाँ जा रहे है? तो मैं कहता हूँ- 'मुझे तो मोक्ष जाना है, मोक्ष जा रहा हूँ।' सभासदों से प्रतिप्रश्न – 'नहीं जा रहे हैं क्या?' सभासद – 'जा रहे हैं!' आचार्यश्री – 'तो फिर आप क्यों नहीं बोलते कि मैं मोक्ष जा रहा हूँ। यह भाव कितना उत्साहवर्द्धक है।' आचार्यश्री का उपदेश था – 'मनुष्य पर्याय को समझो, मोह का त्याग करते रहो, स्वाध्याय करो, दान करो और साधुओं की वैय्यावृत्य करो, अगर जैन धर्म के ये संस्कार आपके घर में नहीं हैं तो बच्चों का भाग्य कैसे फलेगा?' आपका भारत प्रेम सर्व विदित है। आप भारत का सदैव उन्नयन चाहते थे – 'देश को इंडिया नहीं 'भारत' कहना चाहिये, संस्कृति और भारत को बचाना हैं तो पुरातन संस्कृति का उन्नयन करना ही होगा।'

आचार्यश्री का अभिमत था कि संथारा-संलेखना करने वाला भव्य प्राणी 2-3 भव में ही मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

1968 में दीक्षा ली, 1972 में आचार्य पद मिला। आचार्य श्री जी का पूरा परिवार ही दीक्षित हो गया। उन्होंने 398 भव्य मुमुक्षुओं को अपने कर कमलों से दीक्षा प्रदान की। 56 जनों

ने आपके व्यक्तित्व-कृतित्व पर पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा सौ से अधिक लोगों ने स्नातकोत्तर डिग्रियों में लघु शोध प्रबंधों का आलेखन किया।

किसी कवि के शब्दों में -

न होते सूर्य और चन्दा, ना भौतिक यंत्र ये होते ।
न होता सारा ये ब्रह्माण्ड, ना ज्योतिष-मंत्र ये होते ।।
समन्दर सूख ही जाता, जमाना जल चुका होता ।
अगर धरती पे गुरुवर से, दिगम्बर संत ना होते ।।

आचार्य श्री के धार्मिक-कार्य एवं समाज सुधार की दिशा में उनके बढ़ते कदम वस्तुतः स्तुत्य आचरणीय हैं -

हाँ, वही जिन्होंने हथकरघा से,
स्वरोजगार और मातृभाषा के स्वाभिमान को बढ़ाया ।
चकाचौंध वाला इंडिया नहीं, विश्व गुरु भारत सिखाया ।।
हाँ, वही जिन्होंने बेटियों के लिए, प्रतिभा-स्थली बनवाई ।
हाँ, वही जिन्होंने जेल के कैदियों को अहिंसा की गली दिखाई ।।
हाँ, वही जिन्होंने उग्रादित्याचार्य की चिकित्सा को संजोया ।
हाँ, वही जिन्होंने पूर्णायु से चरक-सुश्रुत को फिर से बोया ।।
अरे वे आसमान से ऊँचे हैं, उनसा ऊँचा कौन मिलेगा ।
विद्यासागर धरती पर एक हुए हैं, उनसा दूजा कौन मिलेगा ।।

आचार्यश्री कभी वाद-विवाद में नहीं पड़ते, एक बार प्रधानमंत्री मोदीजी दर्शनार्थ पधारे, वार्तालाप हुआ। किसी के द्वारा यह पूछने पर कि हमारे तीर्थों के संरक्षण के बारे में कोई बात मोदीजी से हुई क्या? तो आचार्यश्री ने कहा - ''लोग हमारे तीर्थ छीन सकते हैं, हमारी आस्था नहीं छीन सकते, वाद-विवाद में मत पड़ो!'' तदनंतर कहा - जैन समाज के लोग जितने परोपकार के कार्य करते जायेंगे, परमार्थ के कार्य करेंगे, बेरोजगार लोगों को रोजगार देंगे तो उतनी ही जैन धर्म की उन्नति होती जायेगी। ऐसे सकारात्मक विचार किसी सुलझे हुए चिंतन से ही अभिव्यक्त हो सकते हैं।

आचार्यश्री कहते थे - 'इस दुनियाँ में जितनी भी अच्छी बातें हैं, वे सब कही जा चुकी हैं, अब सिर्फ अमल करना बाकी है।' बस, हमें भी अब यही करना है, आचार्यश्री के उपदेश को आचरण में लाना है। माँ भारती के सपूत को यही हमारा वंदन-नमन होगा, यही हमारी विनयांजलि होगी।

शंकराचार्यश्री अभिमुक्तेश्वरजी ने कहा - आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज जैनों के ही नहीं जन-जन के संत थे।

विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी भाजपा का दो दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन चल रहा था, जैसे ही आचार्यश्री ने महाप्रयाण किया, पार्टी अध्यक्ष जे.पी.नड्डा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आचार्यश्री को दो मिनिट का मौन रखकर विनयांजलि प्रकट की तथा अपने-अपने उद्गार व्यक्त किये। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़लाजी ने कहा- ''आचार्य भगवंत हमारे मध्य नहीं रहे तथापि हम सबका सौभाग्य है कि हमें उनके जीवन काल में जन्म लेने एवं जीने का अवसर मिला। आचार्यश्री को हम जैन समाज के सीमित दायरे से नहीं जोड़ सकते, उनका दायरा व्यापक था। उन्होंने समाज के बच्चों, विद्यार्थियों एवं आदिवासियों को अपने दिव्य अलौकिक ज्ञान से उन लोंगों के जीवन में सद्परिवर्तन किया एवं सम्पूर्ण समाज का दिव्य दृष्टि से उत्थान का कार्य किया। देश में ही नहीं अपितु पूर विश्व में भगवान महावीर के सिद्धान्तों को पहुँचाया। उनकी दिव्य तप साधना हमें हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।'' इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ विधान सभा में भी विनयांजलि अर्पित की गई। कई नगरों एवं शहरों में सर्व धर्म के प्रतिनिधियों ने भी आचार्यश्री जी विनयांजलि दी।

आचार्यश्री को विनयांजलि देते हुए सरदार श्री सुरेन्द्रसिंहजी ने कहा- ''यदि जैन समाज को जरा भी कोई समस्या होती हैं तो उज्जैन का सिख समाज अपने रक्त की एक-एक बूँद देकर भी साथ देगा। पंडित टोडरमलजी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि यदि ईश्वर सुनता है तो अगले जन्म में मुझे जैन परिवार में जन्म दें।'' आचार्य श्री की विनयांजलि सभा में अब्दुल करीम अंसारी ने आजीवन मांसाहार त्याग किया। आचार्यश्री के ही भक्त सागर निवासी सफीक खान ने कहा- गुरुजी चमत्कार नहीं करते, लेकिन चमत्कार होते हैं।आचार्यश्री जी का संक्षिप्त जीवन इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित है।

अंत में यही लिख सकता हूँ कि ऐसे संत न तो हुए हैं और न ही निकट भविष्य में होगें। पुनः उनको सश्रद्ध स्मरण करते हुए मेरी ओर से एवं जैन कॉन्फ्रेन्स-नई दिल्ली के सभी पदाधिकारियों तथा सदस्यों की ओर से भावपूर्ण शत्-शत् विनयांजलि! वन्दनांजलि!! भावांजलि!!!

जैन कॉन्फ्रेन्स-नई दिल्ली की समस्त गतिविधियाँ सोत्साह चल रही हैं। विहार-सेवा में अपनी सहभागिता निभाएं, संत-सतीवृन्द की वैय्यावृत्य का लाभ लिरावें। फाल्गुनी चातुर्मास सन्निकट है। आप सभी से हार्दिक क्षमायाचना के साथ समस्त पाठकों को, धर्ममय उन्नत जीवन की मंगल-मनीषा !

परिणामी बुद्धि के उदाहरण

- आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्मारामजी म.सा.

परिणामिकी बुद्धि - अनुमान, हेतु और दृष्टान्त से कार्य को सिद्ध करने वाली, आयु के परिपक्व होने से पुष्ट, लोकहित करने वाली तथा कल्याण-मोक्षरूप फल वाली बुद्धि पारिणामिकी बुद्धि कही गयी है।

1. अभयकुमार - मालव देश में उज्जयिनी नाम की एक नगरी थी। राजा चण्डप्रद्योतन वहाँ राज्य करता था। एक बार उसने राजगृह नगर में महाराजा श्रेणिक को दूत द्वारा कहला भेजा कि यदि अपना और राज्य का कल्याण चाहते हो तो प्रसिद्ध बंकचूड़ हार, सैचनक गन्ध हस्ती, अभयकुमार मंत्री और चेलना रानी को मेरे पास शीघ्र भेज दो। चण्डप्रद्योतन का यह सन्देश लेकर दूत राजगृह में पहुंचा और राजा श्रेणिक की सभा में उपस्थित होकर सन्देश को सुनाया। महाराजा श्रेणिक यह सुनकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए और दूत से कहा-क्योंकि दूत अवध्य होता है, इसलिए तुम्हें क्षमा करता हूँ तथा तुम अपने राजा से जाकर कहना कि यदि वह अपनी कुशलता चाहता है तो अग्निरथ, अनिलगिरि हाथी, वज्रजंघ दूत तथा शिवादेवी रानी इन को शीघ्र मेरे यहाँ पर भेज दे। महाराजा श्रेणिक की आज्ञा दूत ने चण्डप्रद्योतन को जाकर सुनायी। इसको सुनकर राजा बहुत क्रुद्ध हुआ और अपने अपमान का बदला लेने के लिए राजगृह पर बड़ी भारी सेना से चढ़ाई कर दी। राजगृह नगर के बाहर जाकर घेरा डाल दिया। युद्ध की तैयारी का समाचार सुनकर अभयकुमार अपने पिता श्रेणिक के पास आए और निवेदन किया-महाराज ! आप युद्ध की तैयारी का कष्ट न कीजिए। मैं ऐसा उपाय करूंगा कि जिससे मौसा चण्डप्रद्योतन स्वयं प्रातःकाल ही पीछे लौट जायेगा। राजा ने अभयकुमार की बात स्वीकार कर ली।

रात्रि को अभयकुमार अपने साथ पर्याप्त धन लेकर राजभवन से निकला और नगर के बाहर जहां पर चण्डप्रद्योतन के सेनापति और अधिकारी वर्ग पड़ाव डाले हुए थे, उनके पीछे वह धन गड़वा दिया। इसके पश्चात् वह राजा चण्डप्रद्योतन के पास पहुंचा। प्रणाम करके बोला- मौसाजी! आप और पिता जी मेरे लिए समादरणीय हैं। अतः आप से हित की एक बात कहना चाहता हूँ। मैं नहीं चाहता कि किसी के साथ धोखा हो। राजा चण्डप्रद्योतन ने उत्सुकता से पूछा वत्स! मेरे साथ क्या धोखा होने वाला है शीघ्र बताओ? अभयकुमार ने उत्तर दिया-पिताजी ने आप के बड़े-बड़े सेनापतियों और अधिकारियों को रिश्वत देकर अपने वश कर लिया है और प्रातःकाल होते ही वे आपको बन्दी बनाकर पिताजी के पास ले जायेंगे। यदि आपको विश्वास न हो तो उनके पास आया रिश्वत का धन गड़ा हुआ दिखा सकता हूँ। यह कहकर अभयकुमार ने चण्डप्रद्योतन को अपने साथ ले जाकर धन दिखा दिया। यह देखकर राजा को विश्वास हो गया और वह शीघ्रता से रातों-रात घोड़े पर सवार हो कर उज्जयिनी में वापिस लौट गया।

प्रातःकाल होते ही जब सेनापति और मुख्याधिकारियों को यह ज्ञात हुआ कि राजा भागकर उज्जयिनी चला गया है तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। नायक के बिना सेना लड़ नहीं सकती यह सोचकर सेना समेत सभी उज्जयिनी वापिस लौट आए। वहां जाकर जब वे राजा से मिलने गए तो उसने धोखेबाज समझकर उनसे मिलने से इन्कार कर दिया। बहुत प्रार्थना और अनुनय-विनय करने पर राजा ने उन्हें मिलने की आज्ञा दी। राजा से मिलने पर अधिकारियों ने राजा से लौटने का कारण पूछा। राजा ने सारी बात उन्हें सुनायी। सुनकर वे बोले-महाराज! अभयकुमार बड़ा चतुर और बुद्धिमान है, उसने आपको धोखा देकर अपना बचाव किया है, अन्य कोई ऐसी बात नहीं है। यह सुनकर चण्डप्रद्योतन बहुत क्रोध में आ गया और उन्हें आज्ञा दी कि जो अभय कुमार को पकड़ कर मेरे पास लाएगा, मैं उसे बहुत-सा इनाम दूंगा।

राजा चण्डप्रद्योतन की यह आज्ञा एक वेश्या ने सुनी और कपट-श्राविका बन कर राजगृह में गई। वहां जाकर रहने लगी। कुछ समय के बाद एक दिन उसने अभयकुमार को अपने यहां भोजन के लिए निमन्त्रित किया। श्राविका समझ कर अभयकुमार ने उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया तथा भोजन का समय आने पर उसके घर पर चला गया। वेश्या

ने भोजन में किसी मादक द्रव्य का प्रयोग कर रखा था, जिसे खाने के पश्चात् अभयकुमार मूर्छित हो गया। मूर्छित होते ही वेश्या उसे रथ पर बैठाकर उज्जयिनी ले गयी और राजा चण्डप्रद्योत की सेवा में उपस्थित कर दिया। अपने पास अभयकुमार को देखकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे कहा-अभयकुमार! तूने मेरे साथ धोखा किया, किंतु मैंने भी किस चातुर्य से तुझे यहाँ मंगवा लिया। अभयकुमार ने उत्तर दिया - मौसाजी! आप अभिमान क्यों करते हैं, यदि मैं उज्जयिनी के बाजार के बीचों-बीच आपके सिर पर जूते मारते हुए राजगृह ले जाऊं तब मुझे अभयकुमार समझना। राजा ने अभयकुमार के इस कथन को उपहास में टाल दिया।

कुछ दिन बाद अभयकुमार ने राजा जैसे स्वर वाले किसी व्यक्ति की खोज की। जब ऐसा पुरुष मिल गया तो उसे अपने पास रखकर सारी बात उसे समझा दी। एक दिन अभय कुमार उस व्यक्ति को रथ पर बैठाकर उज्जयिनी के बाजार के बीचों-बीच उसके सिर पर जूते मारता हुआ निकला। वह व्यक्ति चिल्ला कर कहने लगा-अभयकुमार मुझे जूतों से पीट रहा है, मुझे छुड़ाओ! मुझे बचाओ! राजा जैसी आवाज सुनकर लोग उसे छुड़ाने को आए। लोगों के आते ही वह व्यक्ति और अभयकुमार खिलखिला कर हँसने लगे। यह देखकर लोग स्वस्थान चले गए।

अभयकुमार लगातार पाँच दिन तक इसी प्रकार करता रहा। लोग समझते कि अभयकुमार बाल-क्रीड़ा करता है, इस कारण उस व्यक्ति को छुड़ाने के लिए कोई भी नहीं आता। एक दिन अवसर देखकर अभयकुमार ने चण्डप्रद्योतन को बान्ध लिया और अपनी कुशलता से रथ पर बैठाकर बाजार के बीच उसके सिर पर जूते मारता हुआ निकला। चण्डप्रद्योतन चिल्लाने लगा-दौड़ो! दौड़ो!! पकड़ो! पकड़ो!! अभयकुमार मुझे जूते मारते हुए ले जा रहा है। लोगों ने इसे भी प्रतिदिन की भांति बाल-क्रीड़ा ही समझा और कोई भी उसे छुड़ाने के लिए नहीं आया। अभयकुमार चण्डप्रद्योतन को बन्दी बनाकर राजगृह ले आया। इस व्यवहार पर चण्डप्रद्योतन मन ही मन में बहुत लज्जित हुआ। राजा श्रेणिक की सभा में उसे ले जाया गया और श्रेणिक के पाँव में पड़कर अपने किए अपराध के लिए चण्डप्रद्योतन ने क्षमा मांगी। राजा श्रेणिक ने उसे सम्मान पूर्वक वापिस उज्जयिनी में पहुँचाया और वहाँ पर वह अपना राज्य करने लगा। चण्डप्रद्योतन को इस प्रकार पकड़ कर लाना यह अभयकुमार की पारिणामिकी बुद्धि थी। ❖❖

घर का स्वाद ....

चाय और मुरमुरे

सर्दियों में दिन में चाय कई बार बनती है और ऐसे में बहुत से लोग होंगे, जिन्हें चाय के साथ कुछ न कुछ चाहिए होता है।

कॉर्पोरेट कंपनी में काम करने वाले सेठ तो चाय के साथ महंगे बिस्किट भी खाते हैं, लेकिन जो नहीं खाते वो चिप्स या कुरकुरे खाते हैं और उनमें भी एक तबका ऐसा है, जो अपने गांव से जुड़ा है। गांव और छोटे शहरों में आज भी चाय के साथ लाई की बनी नमकीन दी जाती है, जो लोग इसे खाए हैं, उन्हें तो कुछ बताने की जरूरत नहीं है। जो लोग कभी इसका अन्न नहीं लिए हैं उनके साथ इसका अनुभव बताऊंगा।

दो बड़े-बड़े पैकेट भर के भी अगर इसे खा लो तो भी पेट में भारीपन नहीं लगेगा। टेस्ट ऐसा की घंटों जबान पर चिपका रहे। घर के शुद्ध आइटम से बना है इसलिए साइड इफेक्ट कुछ भी नहीं हैं। बनाने में इतना आसान मात्र 5 मिनट में बनता है और महीनों खा सकते हैं। इसे बनाने के लिए 1 चम्मच देसी घी गर्म कीजिए, उसमें 20-30 कड़ी पत्ते डाल दीजिए, 2 चुटकी हल्दी और अब लाई (मुरमुरा) डाल कर 2 मिनट पकाइए। काली मिर्च और नमक डाल दीजिए, चटपटा पसंद हो तो लाल मिर्च भी डाल सकते हैं।

इसे खाने के बाद कुरकुरे, अंकल चिप्स, लेस जैसे चिप्स खाना भूल जाएंगे। गांव और छोटे शहरों में आज भी ये बहुत बड़ी मात्रा में खाया जाता है।

गांव से शहर गए लोग भी हल्दीराम-बीकाजी जैसे ब्रांड के मुरमुरे लेते हैं लेकिन यकीन मानिए जो टेस्ट घर के बने मुरमुरे का है वो कहीं और नही।

अध्यात्म की यात्रा

- आचार्य सम्राट पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

अध्यात्म वर्ष में प्रत्येक साधक मिथ्यात्व से सम्यक्त्व की ओर आगे बढ़े। जीव अनादिकाल से चार गति चौरासी लाख जीव योनि में जन्म-मरण कर रहा है तो उसका मूल कारण मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व के अन्तर्गत सुख पाने के लिए जीव पुरुषार्थ कर रहा है पर वह जहाँ सुख ढूंढ रहा है, वहाँ सुख है ही नहीं।

प्रथम मिथ्यात्व है, जीव का अपने को जड़ शरीर मानकर, इसके सुख को अपना सुख मानना और इसके दुःख को अपना दुःख मानना, इस मिथ्या मान्यता के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति पौद्‌गलिक सुखों की प्राप्ति के लिए रात-दिन श्रम करके धन कमाकर साधन जुटाता है। साधनों के उपयोग के लिए सम्बन्ध बनाता है और समझता है कि ये धन, ये सम्बन्ध, ये सुख सुविधा के साधन मुझे सुख देंगे, किन्तु उसे सुख की जगह दुःख मिलता है। जिसे आध्यात्मिक भाषा में आर्त-रौद्र ध्यान कहते है और सारा जीवन वह इन दो ध्यान में कर्म बन्धन करता है, आरम्भ-समारम्भ करता है, जब तीव्र कर्म उदय आते है तब वह कर्म को नहीं स्वीकार कर पाता और कर्म दबाने का पुरुषार्थ करता है।

ऐसे समय में अज्ञानी व्यक्ति तनाव, चिन्ता, डिप्रेशन में चला जाता है और उसे दूर करने के लिए वह मनोरंजन का मार्ग पकड़ता है, नशे के मार्ग पर चला जाता है, जीवन पर्यन्त मन के पीछे लग जाता है, संकल्प-विकल्प में पड़ जाता है और कर्म बन्धन करता रहता है। ऐसे समय में पुण्य उदय से जीवन में कोई गुरु मिल जाते है तो उनकी प्रेरणा से वह धर्म-ध्यान की ओर मुड़ता है।

वहाँ वह अशुभ से शुभ की ओर मुड़ता है। देव-गुरु, धर्म के प्रति श्रद्धावान होकर मंत्र, जाप, पाठ, स्तोत्र, स्वाध्याय में लग जाता है। उससे उसको तत्कालिक लाभ होता है, मन की शांति मिलती है, कर्म भी दब भी जाते है, किन्तु आध्यात्मिक यात्रा प्रारंभ नहीं होती।

आध्यात्मिक यात्रा तब प्रारंभ होती है जब उसे सद्‌गुरु मिल जाते है तब उसे सत्य का बोध होता है, अपने बारें में ज्ञान होता है, मैं कौन हूँ?, कहाँ से आया हूँ?, लक्ष्य क्या है?

अत्थि में आया उव्वाइए ...
से आयावादी, लोयावादी, कम्मावादी,
किरियावादी ।। 1/1/1/ ।। आचारांग सूत्र

यह मेरी आत्मा औपपातिक है, कर्मानुसार पुनर्जन्म ग्रहण करती है ...

आत्मा के पुनर्जन्म संबंधी सिद्धान्त को स्वीकार करने वाला ही वस्तुतः आत्मवादी, लोकवादी, कर्मवादी एवं क्रियावादी है।

मैं आत्मा हूँ, अनादि काल से मैं आत्मा अपने स्वरूप बोध के अभाव में, कर्मों के अनुसार जन्म-मरण ग्रहण करता है। जब वह आत्मा पर श्रावन करता है तब वह आत्मवादी बनता है। उसके पश्चात् लोक पर श्रावान करता है, कर्म सिद्धान्त को मानता है। कर्म का कारण क्रियाएँ है। इन्हें जानकर सत्य का ज्ञान प्राप्त करता है।

यही बात स्थानांग सूत्र में कही है -

एगे आया - स्वरूपदृष्टि से सब आत्माएं एक समान हैं।

स्वरूप दृष्टि से जगत् की सभी आत्माएँ समान है। कोई छोटा-बड़ा नहीं, कर्म कैसे भी हो आध्यात्मिक दृष्टि से हम सब जीव समान है, इससे ऊँच-नीच का भेद समाप्त हो जाता है, राग-द्वेष छूटता है, आत्म सुख की प्राप्ति प्रारंभ होती है।

साधक आत्म-ध्यान के द्वारा अपने स्वरूप का बोध पाकर शाश्वत् सुख का अनुभव करते हैं। आत्मा के अष्ठ गुणों की शोध प्रांरभ करते है और अन्ततः विषय भोगों से विरक्त होकर अध्यात्म में प्रवेश करते हैं। आप और हम सबका एक ही लक्ष्य है। इस संसार से पार आत्मा में स्थित होकर, जीव से शिव बने। जीव को सिद्धगति का लक्ष्य देकर शाश्वत सुख को प्राप्त करे। ❖❖

जय महावीर　　श्रमणसंघ जयवंत हो　　जय सीमंधर स्वामी
जय आत्म　　जय आनंद　　जय देवेन्द्र　　जय शिव

श्रमण संघीय पक्खी पत्र

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ तिथि निर्णायक समिति द्वारा
संशोधित निर्णयसागर पंचांगानुसार

श्रमण संघीय आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के निर्देशानुसार

वीर सम्वत् 2550–51 विक्रम सम्वत् 2081 सन् 2024–25 का पाक्षिक पत्र

क्र.सं.	मास–पक्ष	तिथि	घड़ी पल	घंटा/मिनट	दिनांक	क्षय	वृद्धि
1	चैत्र शुक्ल	15 मंगलवार	57–51	29–18	23 अप्रेल 2024	×	×
2	वैशाख कृष्ण	14 मंगलवार	14–14	11–41	7 मई 2024	7	1
3	वैशाख शुक्ल	14 बुधवार	32–21	18–48	22 मई 2024	2	8
4	ज्येष्ठ कृष्ण	30 गुरूवार	30–47	18–07	6 जून 2024	10	×
5	ज्येष्ठ शुक्ल	14 शुक्रवार	04–15	07–32	21 जून 2024	×	11
6	आषाढ़ कृष्ण	30 शुक्रवार	56–22	28–27	5 जुलाई 2024	1–14	दोनों क्षय है।
7	आषाढ़ शुक्ल	14 शनिवार	29–57	18–00	20 जुलाई 2024	×	3
8	श्रावण कृष्ण	30 रविवार	26–26	16–43	4 अगस्त 2024	4	×
9	श्रावण शुक्ल	15 सोमवार	44–10	23–55	19 अगस्त 2024	13	7
10	भाद्रपद कृष्ण	30 सोमवार	60–00	दिन–रात	2 सितम्बर 2024	6	30
11	भाद्रपद शुक्ल	14 मंगलवार	13–12	11–44	17 सितम्बर 2024	×	×
12	अश्विन कृष्ण	30 बुधवार	44–22	24–19	2 अक्टुबर 2024	1	×
13	अश्विन शुक्ल	15 गुरूवार	25–37	16–56	17 अक्टुबर 2024	12	3
14	कार्तिक कृष्ण	30 शुक्रवार	28–36	18–17	1 नवम्बर 2024	4	11
15	कार्तिक शुक्ल	15 शुक्रवार	49–55	26–58	15 नवम्बर 2024	14	×
16	मार्गशीर्ष कृष्ण	14 शनिवार	08–16	10–30	30 नवम्बर 2024	×	13
17	मार्गशीर्ष शुक्ल	15 रविवार	17–54	14–31	15 दिसम्बर 2024	9	×
18	पौष कृष्ण	30 सोमवार	51–09	27–56	30 दिसम्बर 2024	×	×
19	पौष शुक्ल	15 सोमवार	51–04	27–56	13 जनवरी 2025	13	×
20	माघ कृष्ण	14 मंगलवार	30–21	19–36	28 जनवरी 2025	×	5
21	माघ शुक्ल	15 बुधवार	30–10	19–23	12 फरवरी 2025	5	×
22	फाल्गुन कृष्ण	14 गुरूवार	04–30	08–55	27 फरवरी 2025	30	6
23	फाल्गुन शुक्ल	14 गुरूवार	09–19	10–36	13 मार्च 2025	×	×
24	चैत्र कृष्ण	14 शुक्रवार	33–17	19–55	28 मार्च 2025	×	×

भगवान महावीर जयन्ति – चैत्र शुक्ल 13, दिनांक 21 अप्रैल 2024, रविवार

चैत्र ओली – चैत्र शुक्ल 7 दिनांक 15 अप्रैल 2024 सोमवार से चैत्र शुक्ल 15 दिनांक 23 अप्रैल 2024 मंगलवार

अक्षय तृतीया वर्षीतप पारणा महोत्सव – वैशाख शुक्ल 3, दिनांक 10 मई 2024, शुक्रवार

आद्रा नक्षत्र – ज्येष्ठ शुक्ल 14, दिनांक 21 जून 2024, शुक्रवार

चातुर्मास प्रारम्भ – आषाढ़ शुक्ल 14, दिनांक 20 जुलाई 2024, शनिवार

पर्युषण पर्व प्रारंभ – भाद्रपद वदि 14, दिनांक 1 सितम्बर 2024, रविवार

सम्वत्सरी महापर्व – भाद्रपद शुक्ल 5, दिनांक 8 सितम्बर 2024, रविवार
घटी 33–56 घंटा–रात 19–58 मिनट

आसोज ओली पर्व – आसोज शुक्ल 6, दिनांक 9 अक्टुबर 2024, बुधवार से
आसोज शुक्ल 15, दिनांक 17 अक्टुबर 2024, गुरूवार

चातुर्मास समापन, लोंकाशाह जयन्ति – कार्तिक शुक्ल 15, दिनांक 15 नवम्बर 2024, शुक्रवार

फाल्गुन चातुर्मास – फाल्गुन शुक्ल 14, दिनांक 13 मार्च 2025, गुरूवार

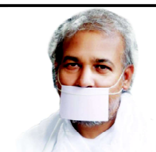

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

जैन जगत की पूर्णता का प्रतिनिधि संगठन है चतुर्विध संघ। इसमें पूज्य साधु-साध्वीजी म. अग्रिम एवं मार्गदर्शक हैं। वहीं श्रावक-श्राविका, संयम पालन सहायक, सहयात्री एवं अनुशरणकर्ता हैं।

असि मसि और कृषि विधा विद्या के प्रणेता श्रमण भगवान ऋषभदेव के शासन काल से श्रमण भगवान महावीर के वर्तमान शासन में भी यही संघीय व्यवस्था आज तक चली आ रही है। इसमें समय-समय पर विचार, परामर्श एवं समाधान बिन्दुओं को चिन्हित, करंने का कार्य होता रहा है। जब-जब भी वैचारिक ज्योति मंद पड़ने लगती है तब तक पुनर्चिन्तन करने के लिए चतुर्विध-पर्षदा बुलाकर तात्कालिक बिन्दुओं का, समसामयिक प्रश्नों का समाधान निकाला जाता है। इसी प्रक्रिया का नाम है

साधु-सम्मेलन।

आचारगत शैथिल्य का समाधान हो या संघीय विचारद्वंद का, या व्यवस्थापन का प्रश्न, या धूमिल हो रही दिशा का, इनका समाधान कभी भी एकपक्षीय नहीं हो सकता। इसका एकमात्र व सर्वमान्य समाधान मंच साधु सम्मेलन ही है।

श्रमण संघ के अतीत में भी संघीय व्यवस्था के समग्र विचार हेतु ऐसे सम्मेलन होते रहे हैं। परम्परा के अंग रूप ये विचार सम्मेलन आगम वाचना के रूप में विश्रुत हैं। ये वाचनाएं भगवान महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् प्रारम्भ हुई। प्रथम वाचना वीर निर्वाण के 160 वर्ष बाद पाटलीपुत्र में हुई थी। उसी समय द्वादशवर्षीय भीषण दुष्काल के कारण श्रमण संघ छिन्न-भिन्न हो गया था। अनेक बहुश्रुत वीर श्रमण क्रूर-काल के गाल में समा गए थे। अनेकों विघ्न बाधाओं के कारण व्यवस्थित रूप से श्रुत साहित्य का परावर्तन भी नहीं हो सका था। इस कारण से आगम की अनेक कड़ियाँ विश्रृंखलित हो गई थी। ऐसे समय में आचार्य श्री हरिभद्र कृत उपदेशों के प्रकाश में जितने भी समकालीन आचार्य विद्यमान थे, वे सभी संकटापन्न स्थिति में पाटलिपुत्र में एकत्र हुए। जहाँ उन्होंने ग्यारह अंग शास्त्रों का संकलन एवं व्यवस्थापन करके जिन वाणी का प्रकाश ज्योतित किया गया। उस समय सुखद संयोग से जिन बारहवें दृष्टिवाद के ज्ञाता श्रुति-मति और अवधिज्ञान के धारक श्रुत केवली पूज्य आचार्य श्री भद्रबाहू स्वामी जो कि नेपाल स्थित हिमालयी उपत्यकाओं में महाप्राण ध्यान की साधना कर रहे थे। उन्होंने भी बारहवें अंग की वाचना देना स्वीकार कर लिया था। अतः श्रमण संघ के इतिहास में यह काल खण्ड, एक स्वर्णयुग के रूप में महिमा मंडित है। यह सम्मेलन श्रमण भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् प्रथम वाचना सम्मेलन था, जो प्रयासपूर्वक यशस्वी रहा।

द्वितीय वाचना : द्वितीय सम्मेलन आगम संकलन की दृष्टि से द्वितीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। तब सम्राट खारवेल जैन धर्म के परम उपासक थे। हाथी गुफा अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि उन्होंने उडिया के (अमारी) या उमारी पर्वत पर जैन मुनियों का एक संघ बुलाया था और मौर्य काल में जो अंग विस्मृत हो गए थे, उसका पुनः प्रस्तुत सम्मेलन में उद्धार कराया गया था। **'हिमवन्त थेरावली'** ग्रन्थ में भी महाराजा खारवेल के द्वारा जिनवचन का उद्धार करवाने का स्पष्ट उल्लेख है।

माथुरी वाचना : तृतीय सम्मेलन आगम संकलन की दृष्टि से वीर निर्वाण वर्ष 827 से 840 के मध्य में मथुरा में हुआ था। तब द्वादशवर्षीय भीषण दुष्काल के कारण श्रमण संघ की स्थिति बहुत ही गंभीर हो गई थी। प्रासुक आहार के अभाव में अनेक वृद्ध और बहुश्रुत मुनि आयु पूर्ण कर गए थे और युवक मुनि आहार अन्वेषण हेतु बिहार प्रान्त को छोड़कर अन्य दूर प्रदेशों में चले गए थे। क्षुधा परिषह से संत्रस्त मुनि अध्ययन-अध्यापन, धारणा और ध्यान प्रत्यावर्तन नहीं कर सके जिससे अंग उपांग साहित्य का अर्थ की दृष्टि से बहुत सारा भाग नष्ट हो गया था। दुर्भिक्ष समाप्त होने पर श्री स्कन्दिलाचार्य के नेतृत्व में यह सम्मेलन हुआ। जिन-जिन श्रमणों को जितना-जितना स्मरण था, उसका संकलन किया

गया। यह सम्मेलन मथुरा में होने से इस आगम वाचना को **'माथुरी वाचना'** कहते हैं और आचार्य स्कन्दिल के नेतृत्व में होने से यह स्कन्दिली वाचना भी कही जाती है। नन्दी सूत्र की चूर्णि और वृत्ति के अनुसार ऐसा भी माना जाता है कि श्रुत ज्ञान किंचित मात्र भी नष्ट नहीं हुआ था। दुर्भिक्ष में आचार्य स्कन्दिल को छोड़कर शेष जितने भी अनुयोग विज्ञ श्रमण थे वे सभी स्वर्गवासी हो चुके थे। इसलिए आचार्य स्कन्दिल ने पुनः अनुयोग का प्रवर्तन किया था।

वल्लभी वाचना : चतुर्थ सम्मेलन वल्लभी सौराष्ट्र में हुआ था। यह सम्मेलन जिस समय हुआ उससे पूर्व और मध्य भारत में विचरण करने वाले श्रमणों का सम्मेलन मथुरा में हुआ था। उसी समय अर्थात् वीर निर्वाण 827 से 840 के बीच दक्षिण और पश्चिम में विचरण करने वाले श्रमणों का एक सम्मेलन वल्लभी में हुआ था। इस सम्मेलन का नेतृत्व आचार्य नागार्जुन ने किया था। वहाँ पर जो संत एकत्रित हुए थे, उन्होंने इस सम्मेलन में आगमवाणी को संकलित किया। यह वाचना, वल्लभी वाचना और नागार्जुनीय वाचना के रूप में जानी जाती है।

पाँचवा श्रमण सम्मेलन : आगम वाचना की दृष्टि से पाँचवां सम्मेलन वीर निर्वाण की दसवीं शताब्दी 940 वर्ष या 993 (ईस्वी सन् 454-466) में वल्लभी में हुआ। इस सम्मेलन के अध्यक्ष देवर्धिगणि क्षमा श्रमण थे। देवर्धिगणि क्षमा श्रमण 11 अंग और एक पूर्व से भी अधिक श्रुत के ज्ञाता थे। स्मृति की दुर्बलता, परावर्तन की शून्यता, धृति का ह्रास और परंपरा की कमीं आदि अनेक कारणों से श्रुत साहित्य का अधिकांश भाग नष्ट हो गया था। अतः मान्यताओं का महत्व स्थापित करने की दृष्टि से इस सम्मेलन में विस्मृत श्रुत को संकलित, संग्रहीत करने का प्रयास किया गया।

देवर्धिगणि क्षमा श्रमण ने अपनी प्रखर प्रतिभा से उस संकलित श्रुत को पुस्तकारूढ़ किया। उसके पूर्व जो मथुरा और वल्लभी में सम्मेलनों के अवसर पर वाचनाएं हुईं थी, उन दोनों वाचनाओं का समुच्चय कर उसमें एकरूपता लाने का प्रबल प्रयास किया गया, जिन बिन्दुओं पर मतभेद की अधिकता रही, वहीं माथुरी वाचना को मूल में स्थान देकर वल्लभी बाचना के पाठों को पाठान्तर में स्थान दिया गया। यही कारण है कि आगमों की व्याख्या ग्रन्थों में यत्र-तत्र 'नागार्जुनीय पठन्ति' इस प्रकार का उल्लेख मिलता है।

यह आगम वाचना की दृष्टि से अंतिम सम्मेलन था। इसके पश्चात् आगमों के संकलन की दृष्टि से कोई सर्वमान्य वाचना कहीं नहीं हुई। देवर्धिगणि के पूर्व जो आगम वाचनाएं हुई उनमें आगमों का लेखन हुआ हो ऐसा भी स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है। उस समय तक आगम श्रुति रूप में ही चलते रहे। योग्य शिष्य के अभाव में गुरु ने वह ज्ञान शिष्य को प्रदान नहीं किया, जिससे जिनवाणी रूप वह श्रुत साहित्य धीरे-धीरे विस्मृत होता चला गया।

यह एक ज्वलंत सत्य है कि दुष्काल के कारण जिस प्रकार - श्रुत साहित्य छिन्न-विछिन्न हुआ, उसी तरह आचार में भी शिथिलताएं आई फलस्वरूप भी समय पर क्रियोद्धार हुए, ये क्रियोद्धार शास्त्रीय आचार क्रान्ति के प्रतीक हैं। वही ये वाचनाएं (परस्पर-विमर्श) जिनवाणी की विलुप्तता से भिन्न-भिन्न विषयों पर परस्पर विचारों और क्रियाओं को आदर देते हुए सम्पन्न हुए हैं। चूंकि संगठन में असहमतियों का होना कोई अनहोनी बात नहीं है, वहीं समाज का विकास बिना संगठन के हो पाना कोरे कपाट के सदृश है। क्योंकि बिना संगठन के न संस्कार शुद्ध होते हैं और न ही सहभागी ही बन पाते हैं। संगठन रहित जीवन नीरस व स्वार्थी जीवन है। असंगठित जीवन पर किसी का विश्वास नहीं होता। समवेत संघीय जीवन ही सुसंस्कृत-परिष्कृत तथा सधा हुआ जीवन है। इस सधे हुए, जीवन को ही 'संघे शक्तिः कलौयुगै' कहा गया है। बिना संगठन के कोई भी धर्म, संप्रदाय और राष्ट्र विकास के पथ पर नहीं बढ़ सकता। यह एक स्पष्ट यथार्थ है।

(क्रमश :)

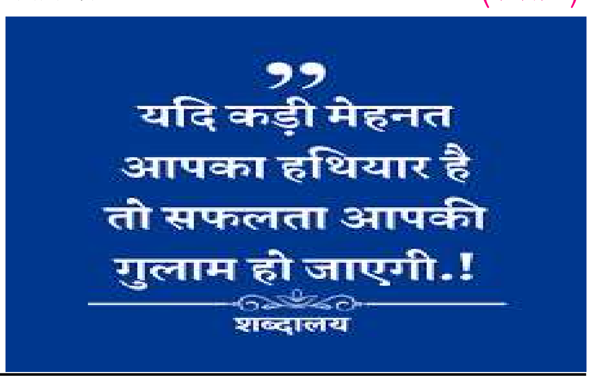

विवेकपूर्ण सेवा का महत्व

- राष्ट्रसंत प्रवर्तक पू. श्री गणेशमुनिजी म. सा.

इस विराट् जगत् में सेवा ही सबसे बड़ा पुण्य कार्य है। आपके समक्ष भले ही घर-गृहस्थी के हजार काम हों, यदि सेवा का अवसर हो तो पहले सेवा कार्य पूरा करना ही मानव-धर्म है। सेवा का कार्य किसी प्रार्थना से कम नहीं होता है। वज्जालग्ग में आया है -

सेविज्जइ विणएणं एसच्चिय पत्थणा लोए !

अर्थात् मैं विनयपूर्वक सेवा करता रहूँ - संसार में यही मेरी प्रार्थना है। सेवा में सुख कम, कष्ट अधिक हो सकते हैं, पर जिन्होंने सेवा के सुफल को जान लिया है, उनको कष्ट उठाकर सेवा करने में भी आनन्द की अनुभूति होती है। सेवा अथवा परहित सभी धर्मों का सार है। अतः जिन्होंने स्वयं को धर्मपथ का पथिक बना लिया हो, वे पर-सेवा में आये कष्टों की परवाह कभी नहीं करते। लेकिन सेवा तभी धर्म का रूप लेती है, जब वह विवेकपूर्ण हो। विवेकपूर्ण सेवा ही कल्याण का पथ प्रशस्त करती है। सूर्यास्त होने पर अंधकार को दूर करने के लिए दीपक जलाया जाता है। एक छोटा-सा दीपक रातभर अंधकार से लड़ता हुआ अपना आलोक, अपना प्रकाश धरती पर बिखेरता रहता है। ठीक इसी प्रकार मनुष्य के जीवन में जो अज्ञानताएँ और कष्ट है, उनके निराकरण के लिए वह स्व-कल्याण के साथ पर-कल्याण की भावना रखते हुए 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' सिद्धान्त के आधार पर सेवा में लगा रहता है।

सेवा श्रेष्ठ कर्म : सेवा करना तो मानव का कर्त्तव्य है। कोई हमारी सेवा करता है तो हमें अत्यंत आनंद की अनुभूति होती है। यही आनन्द हम भी किसी दूसरे की सेवा करके उसे दे सकते हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि क्रिया-प्रतिक्रिया के नियम के अनुसार पर-सेवा से जो आनन्द आप दूसरे को देंगे, वह आनन्द लौटकर आपके पास आयेगा और आपको भी आनन्दित करेगा। जब आप दीवार पर गेंद फेंकेंगे तो वह गेंद लौटकर आपके पास आयेगी। इसी तरह सुख बाँटने से सुख भी लौटकर आयेगा। इसलिए अपनी बुद्धि के अनुसार निर्लेप-निर्पेक्ष भाव अथवा निष्काम भाव से फल की आकांक्षा रखे बिना पर-सेवा करना ही श्रेष्ठ कर्म है। शिवकोटि आचार्य ने भगवती आराधना में सेवाभाव को तीर्थंकर प्रकृति के बंध का कारण बताया है। पंचाध्यायी में आचार्य ने इसके साथ एक शर्त जोड़ दी है कि यथा सम्भव आरम्भ-समारम्भ का ध्यान रखकर और हिंसा से बचते हुए सेवा-कार्य उचित है। ऐसी विवेकपूर्ण सेवा से उत्तरोत्तर स्वच्छ व निर्मल भावनाएँ आती रहेंगी। ये निर्मल भावनाएँ ही मनुष्य के लिए शान्ति का हेतु बनती जायेंगी और विवेकपूर्ण सेवा से उपलब्ध शांति साधक के लिए सर्वाधिक सुख देने वाली बनेगी।

विवेकरहित सेवा : यों तो इस देश में अनेक संतों का जीवन ही सेवा में बीता है, पर सेवा कर्म को समझने के लिए महात्मा गाँधी का उदाहरण हमारे सामने है। दुःखी-पीड़ित और दरिद्र की सेवा को वे प्रभु की सेवा मानते थे। यही कारण था कि वे दरिद्र नारायण और जनता जनार्दन की सेवा जीवन भर करते रहे। यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य होने के नाते हम केवल मनुष्य की ही सेवा करें। पशु-पक्षी की सेवा करना भी पुण्य का कार्य है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज का उस पर बहुत बड़ा ऋण होता है। वह ऋण सेवा-कार्य से ही चुकाया जा सकता है। समाज आगे बढ़े, इस हेतु सेवा में विवेक की जरूरत है। समाज की सेवा हम तन-मन और धन किसी भी माध्यम से कर सकते हैं। शिष्य गुरु की सेवा करता है मगर विवेक रहित सेवा अर्थ का अनर्थ कर सकती है।

एक गुरु के दो शिष्य थे। दोनों गुरु के परम भक्त और गुरु सेवा में तत्पर रहने वाले थे। एक बार गुरुजी लम्बी यात्रा करके आये तो शिष्यों ने उनके पाँव दबाने को कहा। गुरु ने शिष्यों की भावना जानकर एक को दायाँ व दूसरे को बायाँ पाँव दबाने को कहा। शिष्य बड़े प्रसन्न हुए। एक ने कहा- "दायाँ पाँव मेरा है।" दूसरा बोला - "अच्छा यह बायाँ पाँव मेरा है।" दोनों पाँव दबाने लगे। कुछ ही समय में गुरु को निद्रा ने घेर लिया। करवट बदलते समय उनका दायाँ पाँव

बायें पाँव के नीचे आ गया। प्रथम शिष्य ने कहा – "तुम अपना पाँव हटाओ।" दूसरा बोला – "मैं क्यों हटाऊँ, यह तो गुरुजी ही हटायेंगे। यदि मैंने कोशिश की तो नींद टूट जायेगी।" पहला शिष्य बोला – "पाँव तुम्हारा है। सेवा तुम कर रहे हो। हटा दो वरना ठीक नहीं होगा।" दूसरा बोला – "तू क्या कर लेगा ?" "मैं इसे डंडे से पीट दूँगा।" पहला बोला – "अच्छा मैंने क्या चूड़ियाँ पहन रखी हैं? यदि तूने मेरे पाँव को पीटा तो मैं तेरे पाँव को पीट दूँगा।"

बात बढ़ गई, पहले ने डंडा उठाकर बायें पाँव पर मारा तो दूसरे ने दायें पाँव पर चोट की। पाँव पर प्रहार होते ही गुरुजी जाग उठे और बोले – "अरे नालायको ! यह क्या कर रहे हो?" शिष्यों ने सारी बात बताई तो गुरु ने कहा – "मूर्खो! पाँव तो दोनों ही मेरे हैं। तुम परे हटो। मुझे तुम्हारी सेवा की जरूरत नहीं है। ऐसी सेवा अविवेकपूर्ण सेवा है।

कृतज्ञता : सेवा की सार्थकता तभी है, जब वह सेव्य का हित कर सके। मुझे पण्डित मदन मोहन मालवीय के जीवन का एक प्रसंग याद आ रहा है। एक बार मालवीय जी सड़क पर चले जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक ऐसे कुत्ते को देखा जिसकी पीठ पर घाव हो रहे थे। उसमें कीड़े बुलबुला रहे थे। लोग बस कुत्ते के पास से नाक बन्द करके चले जा रहे थे। मालवीय जी कुत्ते की यह दश दशा देखकर पुनः घर आये। घर से दवा, रूई, गरम पानी लेकर के पास जाकर घाव को साफ किया और दवा लगाई। कुत्ते की सेवा करते देख लोग मालवीय जी को धन्य-धन्य कहने लगे। कुछ ही दिनों में कुत्ते का घाव ठीक हो गया। वह आराम से दौड़ने-फिरने लग गया। मालवीय जी निश्चित समय विश्वविद्यालय को जाते थे। कुत्ता प्रतिदिन निश्चित समय सड़क के किनारे खड़ा हो जाता और जैसे ही मालवीय जी दिखाई देते, उनके चरणों में लौटकर कृतज्ञता प्रदर्शित करता। मालवीय जी का यह सेवा कार्य सम्पूर्ण मानव जगत् के लिए उच्च कोटि का उदाहरण है। यदि सेवा का भाव मन में हो तो पग-पग पर सेवा के अवसर मिल जाते हैं किन्तु जिनका भाव ही सेवा का नहीं होता, उन्हें सामने आया अवसर भी कभी दिखाई नहीं देगा।

सेवा अमर धन : सेवा से ही संसार चल रहा है। माता अपने पुत्र का पालन-पोषण करती है। यही पुत्र वृद्धावस्था में माता-पिता की सेवा करता है। गुरुजन शिष्यों को ज्ञान देकर सेवा करते हैं। चिकित्सक रोगियों को रोगमुक्त कर उनकी सेवा करते हैं। सैनिक सीमा पर प्राण-न्योछावर कर राष्ट्र की सेवा करते हैं। कहीं सेवा के पीछे कामना होती है तो कहीं धर्म-भावना होती है। सेवा का कार्य कर्त्तव्य समझकर करने से ही जीवन का उत्थान संभव है। कुछ सेवा-कार्य सामूहिक रूप से आयोजित होते हैं तो कुछ व्यक्तिगत स्तर पर भी पूरे किये जा सकते हैं।

सेवामूर्ति मदर टेरेसा के नाम से आप सभी परिचित हैं। वह विदेशी महिला भारत भ्रमण हेतु आई थी। कलकत्ता में घूमते समय गरीब लोगों को देखकर उसके अन्तर में करुणा का स्रोत फूट पड़ा। उसी समय उसने उन गरीबों की सेवा का व्रत ले लिया। मानव-सेवा के शान्तिपूर्ण कार्यों के लिए मदर टेरेसा को अनगिनत पुरस्कारों से नवाजा गया। जिसने सेवा में जीवन लगा दिया हो, उसके लिए धन की क्या कमीं रह सकती है? पुरस्कारों से प्राप्त करोड़ों की राशि भी उन्होंने अपने आश्रम को प्रदान कर त्याग का उच्च एवं आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। जरूरतमन्दों की सेवा करके वह नारी अमर हो गई।

अतीत का आईना : भारत के धर्मग्रन्थ तो महापुरुषों के अनगिनत सेवा-कार्यों से भरे पड़े हैं। महर्षि दधीचि ने देवत्व की रक्षा के लिए जीते जी स्वयं का आत्मोत्सर्ग कर हड्डियों का दान कर दिया। उनका यह त्याग मनुष्य द्वारा देवों के लिए किया गया अद्भुत त्याग था। जिस देश के नागरिकों में सेवा और सहयोग के भाव हो, कर्त्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति सजगता हो, वह देश सदैव प्रगति की ओर उन्मुख होता है। अतीत के आईने में ऐसे सैकड़ों महापुरुषों की छवि को देखा जा सकता है।

कर्त्तव्य-पालन करना प्रत्येक मानव का धर्म है। जो सेवा-कार्य में जुट जाता है, वह पीछे मुड़कर नहीं देखता। यदि कोई साधन जुटाकर सेवा की योजना बनाता है तो समझों उसका कार्य कभी सफल नहीं हो सकता, क्योंकि अभी उसका सेवा का भाव बना ही नहीं है। कार्य करने वालों के लिए साधन स्वयं जुट जाते हैं।

आप सब उस देश के वासी हैं, जहाँ राम-कृष्ण-महावीर

जैसे महापुरुषों ने जन्म लिया। उन्होंने जो आलोक हमें दिया है, उसकी रश्मियाँ आज भी सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ के रूप में कार्य कर रही है। कितने ही तूफान उठे हो, पर वह दिव्य प्रकाश कभी भी मंद नहीं हो पाया। संसार के सभी धर्म सेवा को महत्त्व देते हैं। कोई हमारी सेवा करता है तो हमारा भी यह दायित्व है कि हम दूसरों की सेवा करके इस कार्य को गति प्रदान करें। दूसरे के दुःख को अपना दुःख मानने वाले ही सेवा कर्म में आगे आ सकते हैं, ऐसे लोगों के लिए तो मेरा मन कहता है -

पराये दुःख को जो अपना दुःख मानता है, वह महान् है। अपने दुःख को जो दुःख नहीं मानता है, वह इंसान है। मेरे मत में अपने सुख को जो पराये सुख के लिए यहाँ - स्वेच्छा से और शान्ति से त्याग देता है वह भगवान है।

सेवा और विवेक : भगवान बनने की भावना है तो सेवा को अपने दैनिक जीवन का अंग बताना होगा। स्काउट संस्थाएँ अपने स्काउटों की सेवा कार्य करने पर जोर देती हैं। उसमें एक नियम है कि प्रतिदिन कम-से-कम एक सेवा का कार्य अवश्य करों।

यहीं एक बात विचारणीय है कि हम सेवा तो करें, किन्तु हमारे द्वारा सेवा विवेकपूर्ण हो तथा उसमे शुद्ध भावनाओं का आविर्भाव होना चाहिए। आज हम सेवा के आदर्शों की व्याख्या तो करते हैं, पर सेवा की प्रवृत्ति में स्वयं को प्रवृत्त नहीं कर पाते। हमारी कथनी और करनी में जब तक सामंजस्य नहीं होगा, तब तक हम सेवा का वास्तविक मूल्य नहीं जान सकेंगे। सेवा की शुरूआत छोटे-छोटे कार्यों से करें। कार्य भले ही छोटा हो, किन्तु सच्ची निष्ठा के साथ किया जाये तो कार्य क्षमता बढ़ने के साथ सफलता भी आप-से-आप मिलती चली जायेगी।

जिस प्रकार शिखर पर चढ़ने के लिए एक-एक कदम आगे बढ़ाया जाता है, उसी प्रकार सेवा के क्षेत्र में भी धीरे-धीरे आगे बढ़ें और बढ़ते जाएँ। आप अनुभव करेंगे कि जैसे-जैसे कदम बढ़ेंगे, वैसे-वैसे क्षमता, शक्ति और सेवा कार्य के प्रति रुचि भी बढ़ती चली जायेगी। तब आप एक असीम आनंदानुभूति से आप्लावित हो उठेंगे और सेवा के महाशिखर को सहजता से छू लेंगे। सेवा के सूत्र को आप अन्तर मन से अपनाएँ तथा दूसरों को भी सेवापथ का अनुगामी बनाएँ, इसी में आप सभी के जीवन की सार्थकता है। ❖❖

गुरु शब्द गौण हो गया और ग्रुप शब्द प्रचलित हो गया

अलवर में विराजमान आचार्य श्री विजयमुनिजी म.सा. से एक श्रावक ने पूछा कि आज जैन संघ में हर साल इतनी दीक्षाएं हो रही हैं मगर फिर भी जैन धर्म दिन-प्रतिदिन हर क्षेत्र में पिछड़ता जा रहा है, इसका क्या कारण है? इसके उत्तर में आचार्यश्री ने कहा कि इसमें सबसे बड़ा कारण स्वयं साधु-साध्वी हैं, उन्हीं के कारण से यह पिछड़ापन आया है। क्योंकि वो क्रियाकांड के नाम पर श्रावकों को निंदक बना रहे हैं और दूसरों को वंदना नहीं करनी, इस प्रकार उनको अड़ियल और कठोर बना रहे हैं। जैन धर्म का मूल मार्ग सेवा, भक्ति, विनम्रता छूटता जा रहा है, जिसकी वजह से श्रावक दोष दृष्टि वाले बन गए हैं और गुरु मंत्र, गुरु धारणा देकर के अपने अनुयायी बना रहे हैं।

जबकि जैन धर्म गुणग्राही है और गुणग्राही ही मोक्ष का राही है। अब मोक्ष का मार्ग छूट गया और सब ग्रुप्स में बंट गए। पहले स्थानक में कोई संत आता तो सब एक दूसरे से पूछते थे कि कौन से गुरुदेव आए हैं। मगर आज पूछते हैं कौन से ग्रुप के संत आए हैं। यानि आज 'गुरु' शब्द गौण हो गया और 'ग्रुप' शब्द प्रचलित हो गया। हर एक क्षेत्र में दो गुट हो गए। इसलिए भक्ति सेवा विनम्रता खत्म हो गई है और व्यक्तिगत सेवा रह गई। धर्म से लगाव ना रहकर व्यक्तिगत लगाव रह गया। इसलिए पिछड़ रहे हैं, जबकि सनातन के संत सेवाभक्ति सिखाकर धर्म से जोड़ रहे हैं। अगर हमें भी जैन धर्म को आगे बढ़ाना है तो सेवा, भक्ति, विनम्रता का मार्ग देना पड़ेगा; क्योंकि ये मार्ग सरल बनायेगा कठोर नहीं, यही मार्ग मोक्ष का मार्ग है।

संकलन : श्री चेतनमुनि जी म.सा.

होली पर्व का आध्यात्मिक व सामाजिक महत्व

- श्रमण संघीय प्रवर्तक पू. डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा.

भारतवर्ष पर्व त्यौहार का वर्ष रहा है। सप्तवार नौ त्यौंहार लोकोक्ति के अनुसार भारतभूमि में वार कम है और त्यौंहार ज्यादा है। त्यौंहारों में लौकिक व लोकोत्तर दोनों प्रकार के मुख्य है। होली के त्यौंहार का सामाजिक धार्मिक, आर्थिक सभी दृष्टि से महत्व रहा है। होली-होलिका आदि नाम से यह त्यौंहार जन साधारण में प्रचलित प्रायः ऐतिहासिक काल से चला आ रहा है। होली का संबंध किसी जाति विशेष से न होकर वर्तमान में सार्वजनिक सार्वभौमिक है। यह प्रेम प्यार सद्व्यवहार का त्यौंहार है जो सभी जाति व धर्म में मनाया जाता रहा है। क्योंकि इससे पारस्परिक स्नेह सद्भावना का संचार होता है। आर्थिक दृष्टि से गांव के लोग इस दिन गेहूँ, चने आदि की कटाई प्रारंभ करते हैं। किसान अपनी फसल को फलती-फूलती देखकर प्रसन्नता का अनुभव करता है। अन्न अन्ततः व्यापारियों के लिए लाभप्रद होता है।

पौराणिक रूप से देखा जाए तो प्रहलाद भक्त के पिता हिरण्यकश्यप अपने आप को भगवान मानते थे, किन्तु उनका बेटा ऐसा मानने को तैयार न था। परिणाम स्वरूप अहंकारी पिता ने अपनी बहिन होलिका के माध्यम से प्रहलाद को मरवाने की तैयारी करता है। होलिका को आग में न जलने का वरदान प्राप्त था। वह अपनी गोदी में प्रहलाद को लेकर आग में प्रवेश कर गयी, पर जाको राखे साईयां मार सके न कोय। प्रभु कृपा से जिस चद्दर के कारण वह सुरक्षित थी वह चद्दर हवा के झोंके से उड़कर प्रल्हाद पर गिर पड़ी। परिणाम स्वरूप प्रल्हाद तो बच गया, होलिका जलकर मृत्यु का वरण करती है। अन्ततः हिरण्यकश्यप का भी वही हुआ व जनता आतंक, अत्याचार से मुक्ति को प्राप्त करती है। निःसंदेह यह पर्व बुराईयों पर अच्छाईयों की विजय का प्रतीक है।

मानव मन में काम, क्रोध, मद, मोह, रागादि अनेकानेक दुर्गुण भरे पड़े हैं। इस पर्व पर बाहरी अग्नि में सामग्री न जलाकर अपने भीतर भरे पड़े विकारों को जलाना है। जीवन को पूर्णतः विशुद्ध पवित्र बनाने का संकल्प धारण करना है। मात्र गुलाल लगाकर या मिष्ठान खाकर ही पर्व की इतिश्री न करके वसुधैव कुटुम्बकम् की भावनानुसार समस्त जीवों के प्रति स्नेह सद्भाव का आदान-प्रदान कर आदर्श उपस्थित करना है। अपने परिवार, संघ, समाज, राष्ट्र के प्रति मंगल भाव व्यक्त करने का यह पर्व हमें संदेश देता है। हमारा आचार-विचार शुद्ध बना रहे, भाषावाद, प्रांतवाद, सम्प्रदायवाद पर होने वाले हिंसक कार्य बंद हो, सम्पूर्ण जीवात्मा व मानव जाति को एक मानकर आगे बढ़े, यही पवित्र त्यौंहारों का पवित्र संदेश है।

आध्यात्मिक दृष्टि से भी होली पर्व का जिनशासन में अत्यधिक महत्व रहा है। कारण यह है कि वर्ष भर में तीन चातुर्मासी पर्वों में होली चातुर्मासी पर्व पर संत-सतीजन एक स्थान पर विराजमान रहकर धर्म आराधना में जप-तप स्वाध्याय में रत रहते है एवं चार माह में किए हुए पापों का प्रायश्चित किया जाता है। इसी का अनुसरण करते हुए श्रावक-श्राविकाजन भी अपने सांसारिक कार्यों से निवृत्त होकर साधनारत रहकर 4 गति 84 लाख जीवात्माओं से क्षमापना करते हैं। मिच्छामि दुक्कडं, कहकर पापों से निवृत्त होने का प्रयास किया जाता हैं। होली पर्व वसंतऋतु का संदेश वाहक माना जाता है।

कामदेव की पत्नी रति को अपने पति के पुनर्जीवन का वरदान और शिवजी का पार्वती से विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने की खुशी में देवताओं ने इस दिन को खुशी के रूप में मनाया। यह दिन फाल्गुनी पूर्णिमा का दिन था। इस प्रसंग के आधार पर काम की भावना को प्रतीकात्मक रूप से जलाकर सच्चे प्रेम की विजय का उत्सव मनाया जाता है। होली रंगों का तथा हंसी-खुशी का त्यौंहार है। यह भारत का एक प्रसिद्ध त्यौंहार जो वर्तमान में विश्व स्तर पर मनाया जाने लगा है। लोग इस दिन अग्नि जलाते हैं। इसका इतिहास सदियों पुराना है। होली दो दिनों तक मनाई जाती है, प्रथम दिवस होलिका का दहन होता है, जिसे छोटी होली भी कहते हैं। दूसरे दिन रंगों का त्यौहार होता है। जिसमें लोग मिल-जुलकर होली खेलते हैं। जो मानव जाति को और अधिक रंगीन बनाने की

बातें करती है। भगवान विष्णु ने नरसिंह का अवतार लेकर हिरण्यकश्यप का वध किया। मान्यतानुसार होलिका पूजन से घर में सुख शांति व लक्ष्मी की वृद्धि होती है। सार सारांश रूप में होली समाज को एक साथ लाने, शत्रु को मित्र बनाने, अमीरी, गरीबी की रेखा को मिटाने, मिलनसार भाईचारे को बनाए रखने हेतु इस पर्व का यही शुभ संदेश रहा हैं। लोग तरह-तरह के मधुर पकवान मिठाईयाँ बनाकर खाते व खिलाते रहते हैं।

होलिका के पति इलोजी जो होलिका से प्रेम करते थे। होलिका के जलने से इलोजी की प्रेम कहानी अधूरी रह गई। उन्होंने जीवन भर शादी न करके होलिका के प्रति अपना प्रेम मरणोपरांत भी बनाए रखा। होलिका के पिता महर्षि कश्यप व माता दीति थी। जिनका जन्म जनपद कासगंज के सोरा शुकर क्षेत्र नामक स्थान पर हुआ। सनातन धर्म में पूर्णिमा का बड़ा महत्व है। इसकी अग्नि की राख का भी पवित्र महत्व है। इस दिन भूलकर भी मांस, मदिरा का सेवन नहीं करना चाहिए। अन्यथा धन हानि व रोगों की वृद्धि होती है। इस दिन राधा - कृष्ण की पूजा की जाती है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से होलिकाष्टक में आठ दिन पहले से ही शुभ काम वर्जित माने जाते है। इस लोकप्रिय त्यौंहार को कुछ लोगों ने गलत रूप से लेकर इसका स्तर गिराने का प्रयास किया है। इस पवित्र त्यौंहार को पवित्र रखने का प्रयास करेंगे तो यह पर्व मनाना हमारा सफल, सार्थक होगा। यह बच्चे, जवान, बूढ़े सभी के लिए प्रेरणादायी है। अन्त में बुरा न मानो होली है के मुहावरे को जीवन में आत्मसात् करने का यह पर्व हमें प्रेरणा प्रदान कर रहा है। ❖❖

बंद करिये सौदेबाजी

एक बार एक महिला ने एक बूढ़ी औरत से पूछा, ''आप साग कितने रुपए किलो बेच रही हो?''

बूढ़ी विक्रेता ने जवाब दिया - 35 रुपए किलो। महिला ने उस बूढ़ी विक्रेता से कहा - ''मुझे 25 रुपए दो, नहीं तो मैं नहीं लूंगी।''

विक्रेता ने जवाब दिया - ''आप इसे अपने मनचाहे दाम पर लीजिये। हो सकता है कि यह मेरे लिए एक अच्छी शुरुआत हो, क्योंकि आज इतनी सर्दी है मैं एक भी किलो नहीं बेच सकी और मुझे जीने के लिए इसकी जरूरत है।''

उसने अपनी मनचाही कीमत पर साग खरीदा और इस भावना के साथ कि वह जीत गई। वह अपनी खूबसूरत कार में बैठी और अपने दोस्त के साथ एक पॉश रेस्टोरेंट में गई। उसने और उसकी सहेली ने आर्डर दिया जो वे चाहते थे। उन्होंने थोड़ा खाया और जितना उन्होंने मांगाया था, उसमें से बहुत कुछ छोड़ दिया। इसके लिए उन्होंने ऑनलाइन भुगतान किया, जो 899 रुपए था।

महिला ने 899 दिए और पॉश रेस्टोरेंट के वेटर को 50 रुपए टिप के रूप में रखने के लिए कहा।

यह कहानी लक्ज़री रेस्टोरेंट के मालिक को बहुत सामान्य लग सकती है, लेकिन साग विक्रेता के लिए बहुत अनुचित है।

प्रश्न है : ''हमें हमेशा यह दिखाने की आवश्यकता क्यों है कि हमारे पास शक्ति है जब हम जरूरतमंदों से कुछ खरीदते हैं?''

और **''हम उन लोगों के साथ उदार क्यों होते हैं, जिन्हें हमारी उदारता की आवश्यकता भी नहीं है?''**

मेरे पिता गरीब लोगों से ऊंचे दामों पर सामान खरीदते हैं, भले ही उन्हें उनकी जरूरत न हो। कभी-कभी वह उन्हें अधिक भुगतान करते हैं ।

मैं दंग रह गया और उनसे पूछा कि वह ऐसा क्यों करते हैं ?

मेरे पिता ने उत्तर दिया - ''मेरे बेटे, यह परोपकार है, जिसे मर्यादा में समेटकर किया गया है।''

तो, **''अगर मैं आपको अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए एक टिप दे सकता हूँ, तो यह क्या होगा?'' - योग्य के लिए उदार और जरूरतमंद के साथ सौदेबाजी बंद करिये।**

❖❖

वचन गुप्ति की साधना

- श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीषमुनिजी म.सा.

आत्मार्थी साधकों के अध्यात्म की साधना में तीव्र गति लाने के लिए प्रभु महावीर ने तीन गुप्ति की साधना एवं प्रवृत्ति के लिए भेद-विज्ञान के साथ समिति की साधना बताई है। देह की व धर्म की क्रिया करनी हो तो समिति पूर्वक करें, पाँच समिति में सारी प्रवृत्ति आ गई। चलना हो तो ईर्या समिति, संवाद करना हो तो भाषा समिति, आहार आदि लाना, करना हो तो एषणा समिति, उपकरणों को कैसे रखना जिससे कर्म आश्रव न हो तो आयाण भंडमत्त निक्षेपण समिति एवं शरीर से निहार करना हो तो उच्चार प्रस्रवण खेल जल्ल मल सिंघाण परिष्ठापनिका समिति। इन पाँच समितियों में जीवन भी सारी प्रवृतियाँ भले वे देह की हो या धर्म की हो आ जाती है।

इन प्रवृत्तियों के पहले सम्यक्त्व का बोध, सत्य का बोध, स्वरूप का बोध करवाया जाता है। मिध्यात्व का, असत्य का, स्व-पर का भेद करवा कर, पुद्गल के संसार को मात्र साधन मानकर, कर्मक्षय के लिए उपयोग करना बतलाया जाता है।

अनादि काल के अज्ञान के कारण, जीव ने सबसे बड़ी भूल की, पर तत्व को, पुद्गल के पिण्ड को अपना मान लिया, और निज तत्व को गौण कर लिया। इस भूल का सुधार ही सम्यक्त्व है। इस भूल के सुधार के बिना की हुई, धर्म की व देह की सभी क्रियाएँ कर्म के बन्धन देती है।

कर्म बन्धन से मुक्त होने के लिए जैन दर्शन की शुरुआत कहाँ से होती है ये प्रश्न आपका हो सकता है। वर्तमान में हम नमस्कार से यात्रा शुरु करवाते हैं अर्थात् हम आने वाले धार्मिक व्यक्ति को धार्मिक बनाने के लिए नमस्कार मंत्र, तिक्खुत्तो का पाठ, सामायिक के पाठ सिखाते हैं। आगे बढ़ा तो हम उसे प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि में लगाकर नियम-प्रत्याख्यान करवाते हैं और हम समझते हैं ये व्यक्ति धार्मिक है इतनी धर्म की क्रियाएं करता है। अरिहंत परमात्मा फरमाते है - किसी भी साधक को धर्ममय बनाना है तो सबसे पहले उसे सत्य का ज्ञान, स्वरूप का ज्ञान, जीव और अजीव के भेद का ज्ञान दो। जीव अलग है और शरीर अलग है।

भेद-विज्ञानी होने के बाद, धर्म की प्रत्येक क्रिया कर्म निर्जरा की हो सकती है। जब साधक मन, वचन काया, तीनों योगों को शरीर का भाग मानकर, पराया जानकर, इनका गोपन करता है अर्थात् इनके द्वारा होने वाले कर्म आश्रवों को रोककर इनसे पार अपने अस्तित्व में, स्वरूप में ठहरता है वहाँ से साधक धर्ममय होना शुरु होता है।

मनुष्य के पास वचन की शक्ति मिली है। इस वचन से वह बचपन से अपनी बुद्धि में बाहर से विचार एकत्रित करता है, जिसे हम संस्कार कहते है। बुद्धि को संस्कारों से भर कर, जब वह चिन्तन करता है, वचन से बोलता है तब अगर उसे सत्य का बोध नहीं है तो वह विभाव में चला जाता है। तब वह कर्कश कठोर, परप्राणी को पीड़ाकारी, छेदकारी, भेदकारी, कलहकारी भाषा बोल कर कर्म के बन्धन कर लेता है तभी भाषा समिति में इस प्रकार की भाषा बोलने को मना किया गया है। इसीलिए आत्मार्थी साधक को सर्वप्रथम वाणी का मौन करवाया जाता है, ताकि वह निरर्थक संवाद से बचे और अति आवश्यक बोलना हो तो वचन गुप्ति का ध्यान रखें, भाषा समिति से बोले। और धीरे-धीरे भीतर प्रवेश कर मन का मौन घटित करे। आत्म-ध्यान साधना के प्रयोग से अभ्यास करते हुए भीतर का मौन घटित होगा। अतः प्रत्येक साधक को अपनी साधना में तीव्रता लाने के लिए एकान्त मौन साधना का अभ्यास करना होगा। आत्म-ध्यान शिविरों में साधकों को अध्यात्म की गहराई में ले जाया जाता है।

शिवाचार्य आत्म ध्यान फाउंडेशन द्वारा निरंतर आत्म-ध्यान शिविरों का आयोजन करवाया जा रहा है। आत्मार्थी साधक पंचम काल में चतुर्थ काल की आध्यात्मिक साधना के प्रयोग कर धन्य हो रहे है।

साधकों को सम्यक्त्व का बोध करवाते हुए, सत्य का अनुभव करने के प्रयोग, गहन आत्मानुभूति के प्रयोग करवाये गए। भेद विज्ञान, आत्म-ध्यान, विभाव से स्वभाव की पात्रता जीव-अजीव आदि 9 तत्वों का ज्ञान देकर प्रत्येक जीव को कर्मबन्धन रोककर कर्म निर्जरा की सरलतम विधि बताई गयी, उन्हें अपने जीवन का लक्ष्य सिद्धालय का परिचय करवाया और उस लक्ष्य की ओर बढ़ने भी साधना करवाई गयी। ❖❖

गरीबों के मसीहा, शान-ए-जिनशासन, गुरुदेव श्री प्रेमसुखजी म.सा. की रजत जयंति के अवसर पर

न्याय के मार्ग पर चलें ...

- उप-प्रवर्तक श्रद्धेय पू. श्री उपेन्द्रमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'

संसार के बहुतायत लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें जीवन के मूल्यों का, सिद्धांतों का कोई अता-पता नहीं होता। उन्हें इस बात का भी बोध नहीं होता कि यह मानव जीवन हमें क्यों मिला है? किसलिए मिला है, इसका मूल उद्देश्य क्या है? किस ढ़ंग से जीवन जीया जाए, जिसके कल्याण के उच्च शिखर को छुआ जा सके। व्यक्ति सिद्धांतनिष्ठ होना चाहिए, सिद्धांतनिष्ठ व्यक्ति ही जीवन के उच्चत्तम मूल्यों और आदर्शों को जानता व मानता है। महात्मा भर्तृहरि के मार्मिक शब्दों में यूँ समझेंगे -

निन्दतु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः सम्प्रविशतु, गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अर्घेववा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।।

नीतिनिपुण लोग सिद्धांतनिष्ठ व्यक्ति के जीवन की निन्दा करें या प्रशंसा करें, लक्ष्मी चाहे आती हो या जाती हो। मृत्यु चाहे आज और अभी आने वाली हो या युग-युग तक जिन्दगी चले, किन्तु सिद्धांतनिष्ठ धीर पुरुष न्यायसंगत मार्ग से एक कदम भी विचलित नहीं होते। चाहे जीवन में कितनी ही कठिनाईयाँ अएं, उसके साथी, मित्र-स्वजन-परिजन उसका साथ छोड़ दें, चाहे भयंकरातिभयंकर विपत्तियों का पहाड़ ही क्यों न टूट पड़ें, किन्तु न्यायप्रिय सिद्धांतवादी अपने सिद्धांतों के साथ कभी समझौता करने के लिए तैयार नहीं होता। नीतिकारों ने सिद्धान्तनिष्ठ व्यक्ति के जीवन का विवेक सूत्र दिया -

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे, ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ।
ग्रामः जनपदस्यार्थे, आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत् ।।

कुल के हित के लिए एक व्यक्ति के हित को छोड़ें, ग्रामहित के लिए कुलहित छोड़ दें और देशहित के लिए ग्रामहित को छोड़ें तथा आत्महित के लिए सारी पृथ्वी का परित्याग कर दें।

'आट्ठिमिजं पेमाणुरागरन्ते'

सिद्धांतवादी व्यक्ति की हड्डियाँ और रगों, नसों, धर्म, प्रेम, सिद्धांतानुराग के रंग में रंगी हुई होती हैं। परिणाम स्वरूप कोई भी भय या प्रलोभन उसे जीवन में स्वीकृत सिद्धांतों से जरा भी विचलित नहीं कर पाता।

कभी कन्फ्यूशियस ने कहा था- वह व्यक्ति केवल सिद्धांतों को जानता है, उसकी तुलना नहीं कर सकता, जो उन सिद्धांतों से अगाढ़ प्रेम करता है। जैसे अर्हन्नक श्रावक। सिद्धांत किसे कहते हैं ? सिद्धांत क्या है? जिसके लिए प्रशंसा के इतने फूल चढ़ाए जाते हैं, जिसे अपनाने के लिए सिद्धांतनिष्ठ व्यक्ति तत्पर रहते हैं, अपने प्राणों की बाजी भी जिनके लिए लगा देते है वह है क्या चीज?

वादी-प्रतिवादीभ्यां निर्णीतोऽर्थः सिद्धः ।
सिद्धः अन्ते योऽसौ सिद्धांतः ।।

विद्वद्जनों ने सिद्धांत की व्याख्या इस प्रकार की है - वादी और प्रतिवादी दोनों के द्वारा जमकर वाद-विवाद करने के बाद जो अर्थ - जो बात निश्चित की जाती है, वह है सिद्ध-अर्थ, बहरहाल, जो अन्त में सिद्ध अर्थ हो, वही सिद्धांत है। योगी लोग सदैव सिद्धांत के मार्ग पर चलते हैं।

जं मयं सव्व साहूणं, तं मयं सल्लकत्तभं

जो सिद्धांत सभी धर्मनिष्ठ साधकों द्वारा मान्य है, वही माया निदान और मिथ्यादर्शन शल्य रूप शल्य को छेदन करने वाला है, वही सिद्धांत सच्चा है जो वीतराग पुरुषों द्वारा मान्य हो, मुक्ति सिद्धि का मार्ग हो, निर्वाण व आत्म निर्माण की ओर ले जाने वाला हो। अतः न्याय के मार्ग पर चलें।

शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है, शिक्षा ही जीवन है।
कोई भी व्यक्ति शिक्षा के बिना, ऊंचाईयों को नहीं छू सकता।
शिक्षा का उद्देश्य एक खाली दिमाग को,
एक खुले दिमाग में बदलना होता है।
शिक्षा इंसानियत की नींव है।
शिक्षा हमें अंधेरों से उजालों की और लाते है।
शिक्षा दुनिया में सबसे ज्यादा शक्तिशाली होती है।
इंसान की सफलता की पहली सीढ़ी शिक्षा है।
अपने समाज को और बेहतर बनाने के लिए शिक्षा सबसे जरुरी चीज है। ❖❖

दस श्रमण धर्म

– तत्वचिंतक पू. श्री उत्तममुनिजी म.सा.

श्रमण धर्म या यति धर्म दस प्रकार के बताये गये हैं। हर श्रमणों को इन दस यति धर्म का सम्यक् प्रकार से पालन करना चाहिए ।

1. खंती (क्षमा) : क्रोध रूपी शत्रु पर विजय पाने का सुन्दर तरीका क्षमा है। क्षमा के अभाव में कोई भी सद्‌गुण टिकते नहीं है। प्रतिकूल अपमानित शब्द या व्यवहार होने पर भी सदा शांत रहकर सकारात्मक ही सोचना। सोचना-सामने वाला ठीक ही कह रहा है फिर रोष क्यों ? जिसके पास जैसी वस्तु होगी, वैसा ही तो दे पायेगा। यह तो मेरा सौभाग्य है-गाली देकर और मारपीट कर मेरे निर्जरा में सहयोगी बन रहा है। चिंतन करें-किये कर्म का फल भोगे बिना मुक्ति नहीं।

2. मुत्ति (निर्लोभता) : लोभ को जीतने के लिए सन्तोषी बनना जरूरी है। जितनी वस्तु प्राप्त होने का अनुबंध होता है, उतनी ही वस्तु प्राप्त होती है। तृष्णा रखने से कुछ भी लाभ होने वाला नहीं। बल्कि उल्टे कर्म बंध ही होते हैं। आदमी को कितनी भी ऋद्धि क्यों न मिले, पर तृष्णा बढ़ती ही चली जाती है। चक्रवर्ती की ऋद्धि मिलने पर भी संभूम चक्रवर्ती को संतोष नहीं। सातवें खण्ड पर विजय पाने निकला। पर उसे समुद्र में ही डूबकर मरना पड़ा और मरकर सातवें नरक में चला गया। तृष्णा आग के समान है। ज्यों-ज्यों भोग-सामग्री बढ़ाते हैं, त्यों-त्यों तृष्णा बढ़ती चली जाती है। सुखार्थी को सदा संतोष धारण करना चाहिए।

3. अज्जव (सरलता) : कपट का त्याग ही सरलता है। सरल हृदय में धर्म ठहरता है। भीतर और बाहर से एक सा होना चाहिए। जो मन में है, वही वचन से कहें। जो वचन से कहते हैं, वही काया से करें। कोई कहे तो अपनी दुर्बलता को तुरन्त स्वीकार करें। यदि साधु वेष में रहकर गृहस्थ जैसा कार्य करता है तो किल्विषी जाति के तुच्छ देव बनता है। वहाँ से निकल कर बकरा-मुर्गा बनकर संसार परिभ्रमण करता है।

4. मद्दव (विनम्रता) : अहंकार दूर कर विनम्रता/ विनयवान बनना मार्दव धर्म है। विनय महान् गुण है। सद्‌गुणों का प्राण है। विनय से ज्ञान की वृद्धि होती है। जाति-कुल-बल आदि आठ मदों का सेवन कभी नहीं करना चाहिए। चिंतन करें - 14 पूर्व के आगे मेरी हस्ती क्या है ? क्योंकि पूर्व का ज्ञान 16383 हाथी डूबे इतनी स्याही से लिखित ज्ञान होता है।

5. लाघव (लघुता) : ममत्व भाव को समाप्त करना ही लाघव धर्म है। छोटी नदी पार करने के लिए भी एक लंगोट के सिवाय और कुछ रखते नहीं है। संसार रूपी महा दुस्तर समुद्र पार करने के लिए तो और अधिक हल्कापन चाहिए। लकड़ी मिट्टी से लेपित हो तो डूबती है। लेप दूर होते ही पुनः तैरने लग जाती है। आत्मा भी आठ कर्मों से लिप्त होने के कारण भारी बनी है। भारीपन संसार में डूबाता है। जीव से ज्यों-ज्यों ममत्व और आसक्ति दूर होगी, आत्मा त्यों-त्यों ऊपर उठती है। संसार के दुःख का कारण ममता है।

6. सच्चं (सत्य) : असत्य रूपी बुराइयों को दूर करने के लिए सत्य का सहारा लिया जाता है। सत्य को तो भगवान कहा है। सत्य धर्म का मूल है। सभी सद्‌गुण सत्य के आधीन है। सत्यवादी कभी डरता नहीं है। सत्य के बल पर यशःकीर्ति चारों ओर फैलती है। सत्यवादी ही स्वर्ग और मोक्ष का अधिकारी है। अतः सदा सत्य बोलना चाहिए।

7. संजमं (संयम धर्म) : मन और इन्द्रियों को अपने वश में रखना संयम है। संयम मुक्ति का प्रमुख कारण है। संयमी हर परिस्थिति में अपनी शांति और समाधि बनाता है। सामान्य व्यक्ति भी संयम लेता है और संयम में जीता है तो वह नरेन्द्र व देवेन्द्र द्वारा पूजा जाता है। अज्ञानी व्यक्ति करोड़ों वर्षों तक मासखमण-मासखमण कर पारने में कुशाग्र में आवे इतना अनाज और पानी को ग्रहण करता है, ऐसे अज्ञानी साधक की साथना की अपेक्षा सम्यक् दृष्टि संयमी आत्मा की छोटी सी तपस्या ही श्रेष्ठ और महान् निर्जरा का कारण है।

8. तप (तप धर्म) : मिट्टी युक्त सोना तपने के बाद ही तो कुंदन बनता है। आत्मा में लगे हुए कर्म मल दूर करने के लिए तपस्या अग्नि रूप है, जो पाप मल से स्वच्छ करती है। लाखों लीटर पानी और साबुन की टिकिया से धोने पर भी कोयले में से कालिमा को दूर नहीं किया जा सकता है, पर उसे अग्नि में डाला जाये तो तत्काल कालिमा दूर होती है। हर सफलता के पीछे तप ही प्रमुख कारण है।

9. चियाए (त्याग धर्म) : त्याग के बिना सद्‌गुण ठहरते नहीं है। त्याग का अर्थ है - ममता, आसक्ति को छोड़ना। ममता का प्रमुख कारण शरीर है। संसारी जीव ने सभी पदार्थ को अपना मान रखा है। पर यही ममता दुःख का कारण है। संयोग एक दिन वियोग दिलाने वाला है। ममता रखते हैं तो वस्तु के वियोग होने पर दुःख होगा। दुःख और शोक से आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान होता है । आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान से कर्म बन्ध होता जाता है। अतः इस लोक और परलोक के सुख और सफलता के लिए त्याग आवश्यक है।

10. बंभचेर गुत्तीओ (ब्रह्मचर्य धर्म) : काम पर विजयी होने के लिए ब्रह्मचर्य व्रत जरूरी है। ब्रह्मचारी लोग देव, दानव, गन्धर्व आदि द्वारा पूजित होते हैं। शुद्ध मन से ब्रह्मचर्य पालने से संसार तिर जाते हैं। ❖❖

स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति ...

उत्तर भारतीय प्रवर्तक प. पू. श्री शांतिस्वरुपजी म. सा.

महापुरुषों का जीवन प्रकाश स्तम्भ की तरह होता है। जैसे प्रकाश स्तंभ आँधी-तूफान, बवंडर आदि से मार्ग भटकते हुए जहाजों के लिए उसका गन्तव्य बताता है, दिशा निर्देशन करता है, उसी तरह संसार के मोह-ममता-विषय-कषाय के तूफानों में फंसी हुई आत्माओं के लिए महापुरुष उनका गन्तव्य दर्शाने वाले होते हैं ।

उत्तर भारतीय प्रर्वतक, शासन सूर्य, आध्यात्मयोगी, पूज्य श्री शान्तिस्वरूपजी म. सा. का जीवन भी लाखों-लाखों दिग्भ्रमित लोगों को मुक्ति मंजिल का मार्गदर्शक था । आपका जन्म अमींनगर सराय (मेरठ, यू.पी.) के सुप्रसिद्ध जमींदार श्री खूबसिंहजी यादव की धर्मपत्नी सौ. चुनियादेवी (घर के तीन सदस्यों) का देहावसान श्री खूबसिंहजी के लिए संसार की क्षणभंगुरता एवं संसारी सम्बन्धों की नश्वरता का भान कराने वाला बना। अतः वे अपने नौ वर्षीय पुत्र हरिसिंह एवं सात वर्षीय पुत्र दीवानसिंह को साथ लेकर गांव की बड़ी जमींदारी तथा गांव के मुखिया पद को छोड़कर कठोर संयमी श्री गैंडेरायजी म.सा. के श्रीचरणों में पहुँचकर जैन भागवती दीक्षा (वि.सं. 1982) लेकर **श्री खूबचन्दजी महाराज** बनें। उसके दो वर्ष पश्चात् श्री हरिसिंह की भी दीक्षा हो गई, नामकरण हुआ - **श्री फूलचन्दजी म. सा.** ।

गुरु-चरणों में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद किशोर दिवानसिंह को अध्ययन के लिए श्री महावीर जैन महाविद्यालय, दिल्ली में प्रविष्ट कराया गया, वहाँ के प्रधानाध्यापक ने आपका नामकरण कर दिया - शान्तिस्वरूप । ज्ञानार्जन की लालसा, अथक परिश्रम, गुरुजनों के प्रति विनम्रभाव, कुशाग्र बुद्धि तथा वक्तृत्व कला आदि विशेषताओं के कारण स्वल्पसमय में ही शान्तिस्वरूप गुरुजनों का कृपापात्र व सहपाठियों का विश्वासपात्र विद्यार्थी बन गया । विभिन्न विद्यालयों की वक्तृत्व स्पर्धा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए विद्यालय की ओर से श्री शान्तिस्वरूप को नियुक्त किया जाता था। उन कार्यक्रमों में विशिष्ट योग्यता से गोल्ड मेडल आदि प्राप्त कर, आप अपना एवं महावीर विद्यालय का नाम रोशन करते थे।

विद्यालय के अवकाश के समय श्री शान्तिस्वरूपजी म. सा., तपस्वी श्री निहालचन्द्रजी म. सा., श्री खूबचन्दजी म. सा. (सांसारिक पिताश्री) के चरणों में उपस्थित होकर जैन दर्शन का अध्ययन करने लगे। तपस्वी श्री निहालचद्रजी म. सा. की प्रबल प्रेरणा से आप महावीर के महामार्ग पर अग्रसर हो गए। वि. सं. 1992 मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी को आपश्री दीक्षित होकर **'श्री शान्तिस्वरूपजी म. सा.'** बन गये ।

ज्ञानार्जन की अतृप्त पिपासा एवं अथक परिश्रम के कारण आपश्री शीघ्र ही सम्पूर्ण भारतीय दर्शन के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् बनें। जैनागम तो आपश्री के रग-रग में समाहित था ही, साथ ही आप संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाओं के ज्ञाता बनें। आपश्री में छोटी उम्र से ही विद्वत्ता व अकाट्य तर्क शक्ति ऐसी थी कि समाज में कभी विवाद खड़ा होने पर या शास्त्रार्थ की स्थिति बनने पर पंजाब के मूर्धन्य मनीषी गुरु भगवन्त आपश्री को ही उस उलझन को सुलझाने के लिए नियुक्त करते थे। आप भी अपनी अनूठी प्रतिभा व दूर दृष्टि से सामाजिक वितंडावाद को शान्त करते थे, शास्त्रार्थ में विजय वैजयंती फहराते थे ।

समन्वय के मसीहा -

सन् 1947 का भारत विभाजन का विद्वेष पूर्ण समय जब सारा पंजाब साम्प्रदायिकता की ज्वालाओं में जल रहा था, मानव ही मानव के रूधिर का प्यासा बना हुआ था, ऐसे दुःखद समय में मालेरकोटला के हिन्दू-मुसलमान भाइयों में साम्प्रदायिकता की भीषण अग्नि को दूर रखकर मानव मात्र के प्रति प्रेम व भाइचारें का आपने जो पाठ पढ़ाया, अमन-चैन व सामाजिक सौहार्द का जो भाव बनाया, वह एक मिशाल है। एक ओर मालेरकोटला में हिन्दू मुस्लिम एकता बनाया, तो दूसरी ओर आपश्री के अग्रज श्री फूलचन्द्रजी म. सा., गुरुदेव श्री निहालचन्द्रजी म.सा. के साथ आपने स्यालकोट, रावलपिण्डी, पसरूर, गुजरावाला लाहौर, नारोवाल आदि स्थानों से विस्थापित (अपनी जान बचाकर निकले) 250 के करीब जैन परिवारों को पश्चिम उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में जैन नगर के रूप में बसा कर एक नया इतिहास

बनाया।

स्वनाम धन्य -

एक ओर आपका हृदय प्राणी मात्र के प्रति दया, करुणा, वात्सल्य, प्रेम के भावों से सराबोर रहता, तो दूसरी ओर आप अन्याय-अत्याचार, पाखण्ड, अंधविश्वास से जन-जन को दूर रखने में कटिबद्ध थे। आपके तन में शक्ति, मन में शान्ति, वाणी एवं व्यवहार में शान्ति समाहित थी । आप शान्ति के मसीहा थे । शान्तिवादी नीति केवल वाणीविलास नहीं अपितु आपके जीवन की खुली पुस्तक का प्रथम अध्याय था। आपश्री शान्ति को व्यवहार में चरितार्थ करने के कारण आप स्वनाम धन्य हो गये थे। विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी आप अपनी शान्ति को खोकर क्रोधित होते हुए नहीं दिखते, स्वयं शान्ति सरोवर में गोता लगाकर आगन्तुकों को भी शान्ति का ही पाठ पढ़ाते थे।

अनुपम ध्यान योगी -

आपश्री अनुपम ध्यान योगी थे। **''पढमं पोरसि सज्झायं, बीयं झाणं झियायई''** शास्त्र की इस लुप्त होती हुई ध्यान परम्परा को आपश्री ने आगे बढ़ाया। ध्यान साधना में आपश्री इतना तल्लीन होते थे कि उस समय आपके अपने शरीर की भी सुध नहीं रहती थी। दिन-रात के 24 घण्टों में लगभग 8-9 घण्टे आपके ध्यान-साधना में ही व्यतीत होते थे। आपश्री की ध्यान साधना इतनी सबल व सशक्त होती थी कि सैंकड़ों या हजारों अनागत घटनाएं पहले ही परिलक्षित होती थी। प्रकरणवश गुरुदेव फरमाया करते थे - साधनाकाल में मैंने देखा कि उत्तर-पूर्व दिशा (नेपाल) से कुछ आत्माएँ आकर मेरे पास साधना-पच पर आगे बढ़ रही हैं, तो आज वह साकार हो रहा है। उपाध्याय प्रवर डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा., प्रश्नमंच प्रणेता श्री विचक्षणमुनिजी म. सा., श्री अचलमुनिजी म. सा., श्री उत्तममुनिजी म. सा., श्री सौरभमुनिजी म. सा, श्री मणिभद्रमुनिजी म. सा., श्री पुनीतमुनिजी म.सा, श्री पद्ममुनिजी म. सा. आदि सुयोग्य 15 संत तथा श्री राधाजी म. सा., श्री लक्ष्मीजी म. सा., श्री गीताजी म. सा, श्री पूनमजी म. सा. आदि 25-26 साध्वियाँ नेपाल के ब्राह्मण परिवार से आकर जैन धर्म में दीक्षित हो गई। आचार्य भद्रबाहु स्वामी, आचार्य स्थूलभद्र स्वामी के बाद शायद यह प्रथम अवसर होगा जो नेपाल (विदेश) से आकर 40 से अधिक युवक-युवतियाँ महावीर के शासन में दीक्षित हो गई। आपकी शासन प्रभावना का यह एक अनूठा उदाहरण है ।

आप श्रीजी विशिष्ठ साधक होने के कारण जिज्ञासु वैज्ञानिक आदि भी श्री चरणों में शंका समाधानार्थ आते थे, तो दुःखी, संतप्त एवं आर्तुत लोग भी उपस्थित होते थें। आपके चरणों में आकर आपके निर्देशानुसार साधना कर सुख समृद्धि पाते थे। मुझे (आशीष मुनि) भी लगभग 12 वर्ष श्री चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवधि में शायद ही कोई दिन ऐसा गया हो जिस दिन किसी न किसी तरह की आश्चर्यजनक घटना न घटी हो । पूज्यवर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जानकर कोई चमत्कार नहीं करते थे, लेकिन उनकी साधना ही ऐसी थी कि उनके श्रीमुख से निकली वाणी पत्थर की लकीर बन जाती थी। अनहोनी बात भी होनी होती थी ।

नामनाजयी - प्रसिध्द वक्ता -

आपश्री सार्वजनिक सभा में धारा प्रवाह बोलने वाले ओजस्वी वक्ता थे। आपश्री रक्षाबन्धन, विजयादशमी, दीपावली, स्वतन्त्रता दिवस आदि प्रसंगों पर मेरठ के मिलट्री अफसरों की प्रार्थना पर हमारे जवानों को सम्बोधित कर राष्ट्ररक्षा व धार्मिकता में आगे बढ़ाने हेतु संबोधित किया करते थे। आप मिलट्री कैम्प में पधार कर 10000-12000 सैनिकों को सम्बोधित कर उनमें देश प्रेम की भावना, नैतिकता, करुणा व संयम के महत्त्व पर ऐसे प्रभावोत्पादक ढंग से सम्बोधित करते कि वो लोग गद्-गद् हो जाते थे ।

आपके लेख इतने विद्वत्तापूर्ण होते थे कि बड़े-बड़े विद्वान् भी आपकी विद्वता का लोहा मानते थे। आपश्री वक्ता, लेखक ही नहीं बल्कि आपकी कविता भी रसधारा बहाती थी और बहा रही है। आपश्री की विषय-प्रतिपादन की कला इतनी आश्चर्यजनक थी कि प्रश्नकर्ता कितना ही जटिल से जटिल प्रश्नों को क्यों न पूछता हो, आप श्री ऐसे वैज्ञानिक पद्धति से शास्त्रों का पूट देकर समझाते तो प्रश्नकर्ता भाव विभोर हो जाता था । प्रश्नकर्ता को आप महावीर स्वामी की अहिंसा, अनेकान्तवाद, कर्मवाद व अपरिग्रह सिद्धान्त का ज्ञान ऐसे सरल व सुबोध भाषा में देते थे कि आगन्तुक स्वतः आपका

हो जाता। प्रभावशाली वक्ता, सिद्धहस्त लेखक, अनुपम ध्यानयोगी एवं लब्धि निधान होने पर भी आपने अपने नाम का नाममात्र का भी प्रचार-प्रसार नहीं किया। आप श्री का कहना था- नामना-कामना-यश कीर्ति की इच्छा संसार के मूल को सींचना है। लोकैषणा से आत्मगुणों का हनन होता है। छह खण्ड पर एक छत्र राज्य करने वाले चक्रवर्तियों का नाम भी नहीं रहा तो और किसका नाम रहेगा ?

था मुल्क जिनके जेरे नगी साफ मिट गये,
हम इस ख्याल में हैं कि नामो निशां बाकी रहे ।।

अनूठी सूझबूझ -

आप श्रीजी बचपन से ही ऐसे प्रतिभा सम्पन्न थे कि पंजाब केसरी आचार्यदेव श्री कांशीरामजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री आत्मारामजी म. सा., गणावच्छेदक श्री बनवारीलालजी म. सा., व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म. सा. अपने अंतरंग मीटिंग में आपको सम्मिलित कर परामर्श लेते थे । आपके सुझाव पूज्यवरों को मान्य होते थें। आचार्य श्री काशीरामजी म.सा. को मुम्बई की ओर विहार करना था। संघ व्यवस्था के लिए आचार्यदेव आपश्री से परामर्श लेना चाहते थे। उस समय आप अमृतसर में विराजमान थे अतः आप श्रीजी के पास आचार्य देव की आज्ञा पहुँची कि आप शीघ्र दिल्ली पहुँचो। आचार्य भगवन् की आज्ञानुसार ही प. पू. श्री खूबचन्द्रजी म. सा. एवं प. पू. श्री फूलचन्द्रजी म. सा. के साथ आप श्री दिल्ली आचार्यदेव के श्रीचरणों में पहुँचे। बहुत-सी चर्चा संघ व्यवस्था के संदर्भ में होने के बाद आचार्य श्री ने पूछा - शान्ति ! इस समय क्या करना चाहिये? तब आप श्री ने विनम्रता से कहा - भगवन् ! मैं बहुत छोटा सा सेवक हूँ और हूँ अनुभवहीन, फिर भी कहना पड़ता कि आप श्री की गैर हाजरी में कोई साधु सारे पंजाब श्रीसंघ की व्यवस्था संभाले ऐसा मुझे नजर नहीं आता है। अतः आपश्रीजी श्रीसंघ की व्यवस्था का भार गणि श्री उदयचन्द्रजी म. सा., उपाध्याय श्री आत्मारामजी म. सा., गणावच्छेदक श्री गोकुलचन्द्रजी म. सा., गणावच्छेदक श्री बनवारीलालजी म. सा. तथा महासती श्री राजमतीजी म. सा. पर डालें । इधर की सब व्यवस्था ये पांचों मिलकर सम्भाल लेंगे, इससे संघ में ऐक्य बना रहेगा और व्यवस्था भी सुचारू रूप से चलती रहेगी। आप श्री का सुझाव सभी को पसंद आया। किसी ने भी विरोध नहीं किया । यह था - आपकी सूझ-बूझ का कमाल ।

सेवाभावी संयम रक्षक -

जहाँ आपश्री के जीवन में स्वावलम्बन के भाव भरे थे, वहीं सन्त सेवा व संयम रक्षा के लिए कैसा भी कष्ट क्यों न हो सहन करने के लिए तैयार रहते थे । जिसका ज्वलंत उदाहरण - शारीरिक अस्वस्थता एवं एकाकीपन से पीड़ित संयम जीवन को छोड़ने में तत्पर श्री टेकचंदजी म. सा. की सूचना पर आपश्री 104 डिग्री बुखार में प्रतिदिन 18-20 माइल का विहार करते हुए 300 कि.मी. की दूरी को पार कर जीरा (पंजाब) श्री टेकचन्दजी म.सा. (ब्रह्मऋषिजी) के पास पहुँचे और ऐसे सहृदयता से उनकी सेवा कर उनके मनोबल को बढ़ाया कि वे वर्षों-वर्षों तक संयम पालते हुए कुंभकोणम् में स्वर्ग सिधार गये ।

आप श्रीजी के चरणों में कोई राजा-महाराजा आया हो या सामान्य नागरिक सेठ साहूकार आया या दीन हीन रंक, ऊँचे कुल से सम्बन्धित आया या सामान्य कुल का, किसी जाति-पंथ का हो, कोई भी भाषा-भाषी क्यों न हो, सब ने वही प्यार, वही स्नेह एवं वही सहानुभूति, वात्सल्य पाया।

तेरी खिदमत में जो पहुंचा, उसका दामन भर गया ।
चाहे इक कतरा गया, चाहे एक सागर गया ।

आपश्री के चरणों में डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर, चिन्तक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक, परामनोवैज्ञानिक आदि विद्वद्वर्ग जिज्ञासा लेकर आते थे, आपश्री से सन्तोषजनक समाधान पाकर आनंदित हो जाते थे। दीर्घावधि तक प्रवर्तक भगवन्त का सान्निध्य, श्रीजी से मार्गदर्शन व आध्यात्म तथा देव देवी, दर्शन सम्बन्धी शंकाओं का हृदय ग्राह्य समाधान पाने से जिन का रोम-रोम कृतज्ञ हो गया था, ऐसे कलम कलाधर, विद्वद्रत्न मनीषी श्री नेमीचन्द्रजी म. सा. ने आप श्रीजी के बारे में लिखा है -

मेरे आध्यात्मिक गुरु -

मेरे दीक्षा दाता गुरुदेव श्रमण संघ के तत्कालीन उपाचार्य स्व. श्री गणेशीलालजी म. सा. थे, किन्तु आपश्री जी मेरे आध्यात्मिक जीवन मन्दिर के जगमगाते दीपक थे, जो स्वयं

भी प्रकाशित थे और आध्यात्मपिपासु साधकों के जीवन को प्रकाशित करते थें। आपकी कृपा दृष्टि से मुझे अलौकिक आध्यात्मिक प्रकाश और बल प्राप्त हुआ। मैं उन दिनों को भूल नहीं सकता, जिन दिनों मैं पहली ही बार आपके निकट सम्पर्क में आया था। मुझे आध्यात्म के मार्ग पर चढ़ाने का श्रेय भी आप श्रीजी को ही है।

आपने मुझे इष्ट देव के जप, ध्यान और तप की त्रिवेणी में स्नान करवा कर आत्मशुद्धि का अमोघ उपाय बताया, जिसे प्राप्त कर मैं धन्य-धन्य हो गया। जो आत्म-साधना एक नौसीखिये साधक की, वर्षों तप-जप करने पर भी सफल नहीं होती है, आपने मुझ पर कृपा करके वही साधना 60 दिवसों में फलीभूत करा दी ।

उस आध्यात्मिक साधना का चमत्कार भी मेरे जैसे तर्कशील साधक ने देखा, जिसमें मेरी और मेरे साथ ही अन्य कई साधकों की श्रद्धा दृढ़ीभूत हुई। मैं उस अलौकिक आनन्द को विस्मृत नहीं कर सकता जो मुझे उस आध्यात्म-साधना के फलस्वरूप प्राप्त हुआ था। देवा वितं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो - (जिसका मन सदा धर्म में रत रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।) दशवैकालिक शास्त्र के इस अनुभूति युक्त सूक्त का भी उक्त साधना के दौरान साक्षात्कार हुआ। मुझसे अकिंचन पर आपकी महती कृपावृष्टि हुई, जिससे मैं अतीव उपकृत हुआ। जैसे एक कुशल माली नन्हें-नन्हें पौधों को जल सिंचन और रात-दिन उसका संरक्षण करके विशाल वृक्ष के रूप में परिवर्तित कर देता है, वैसे ही सद्गुरुवर्य भी ज्ञान जल सिंचन करके छोटे-छोटे अपरिपक्व साधकों को महान साधक के रूप में परिवर्तित करने में सिद्धहस्त थें।

''सर्वांग मधुर जीवन'' -

जैसे मधुमक्खी विविध कुसुमों से सार लेकर मधु का निर्माण करती है, वैसे ही आपने अपने जीवन में अनेक महान श्रमणों, आचार्यों, उपाध्यायों की सेवा से विविध गुणों का सार लेकर अपने जीवन को सर्वांग मधुर बना लिया है। मैंने कई प्रसंगों में देखा है कि दो पक्षों में जहाँ कटुता एवं विवाद बढ़कर कलह उत्पन्न हो सकता था वहाँ आपने व्यवहार से मध्यस्थ बन कर मधुरता का वातावरण उत्पन्न कर दिया।

अनाग्रह व्यावहारिक जीवन का सौन्दर्य है, जैन संस्कृति का हार्द है, भारतीय धर्मों का सार है। जहाँ एकान्त आग्रह का आश्रय लिया जाता है, वहाँ पारस्परिक सौहार्द एवं माधुर्य दूरातिदूर होता चला जाता है। किस बात को किस अपेक्षा से कितना तूल देना, यह अनाग्रही का लक्षण है। जीवन की सरसता के लिए अनाग्रही होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी सिद्धान्त को जीवन में चरितार्थ किया - प्रवर्तक पूज्य **श्री शान्तिस्वरूपजी म. सा.** ने ।

जो साधु आत्म गवेषक बनकर अपनी आत्म शुद्धि और आत्मविकास करना चाहता है, उसे आप ध्यान योग का प्रशिक्षण भी देते थें ।

मेरठ चातुर्मास के दौरान ध्यान साधना की मेरी (पूज्य श्री नेमीचन्दजी म.सा.) जिज्ञासा देखकर उन्होंने मुझे ध्यान योग का व्यवस्थित रीति से अभ्यास कराया। समय-समय पर आने वाली अड़चनों एवं विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिए मुझे मार्गदर्शन दिया। आपका मानना है कि ध्यान-योग से ही साधु जीवन में आत्म-निरीक्षण, आत्म-आलोचना, आत्म-निन्दना एवं प्रतिक्रमण यथार्थ रूप से हो सकता है। आपके भव्य और दिव्य चेहरे को देखकर ऐसा लगता था कि आपने गध्यान-साधना से बहुत कुछ पाया था।

आडम्बर एवं प्रचार से दूर -

पूज्य प्रवर्तक श्रीजी म. सा. को आडम्बर प्रदर्शन एवं प्रपंचमय प्रचार बिल्कुल पसन्द नहीं था। आपको दम्भ, दिखावा, शब्दाडम्बर या प्रपंच में विश्वास नहीं था । वैसे आप बड़ी-बड़ी सभाओं में व्याख्यान देते थे, आपके सार्वजनिक प्रवचन भी अत्यन्त प्रभावशाली होते थे, किन्तु आप प्रचारबाजी एवं प्रसिद्धि से दूर रहते थें । आपको शान्ति से जीना एवं आत्म साधना में रत रहना ही अधिक पसन्द था। प्रचार के नाम से जो साधक संयम को ताक पर रख देते हैं, उन्हें आप अच्छा नहीं समझते। आपका मन्तव्य था कि आचार के अभाव में प्रचार में संचार नहीं हो सकता। जितना आचार तेजस्वी होगा, जीवन बोलता हुआ होगा, उतना प्रचार स्वतः हो जायेगा। उसके लिए प्रदर्शन की नहीं स्वदर्शन की आवश्यकता है।

जप साधना के अग्रणी -

ध्यान से मन की और जप से वचन की शुद्धि होती है। भारत के एक तत्त्वज्ञ मनीषी ने कहा है- **'जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिः जपात् सिद्धिर्न संशयः।'** अर्थात् जप से सब प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं। जप एक आभ्यंतर तप है, स्वाध्याय का एक प्रकार है। जप आधि-व्याधि और उपाधि को नष्ट करके समाधि उत्पन्न करता है इसीलिए जप में महान् शक्ति निहित है। श्रद्धेय प्रवर्तक श्रीजी म.सा. को जप और ध्यान की साधना अपने गुरुवर श्री निहालचन्द्रजी म.सा. से प्राप्त थी ।

आपकी जप-साधना के विषय में जिज्ञासावश एक बार मैंने पूछा - 'जैसे कबीर के दोहे में अनहदनाद सुनाई पड़ता था, मीरा को श्री कृष्ण की भक्ति का रस पीने को मिला था, श्री कृष्ण का साक्षात्कार भी उसे होता था, आनन्दघन जी आदि वरिष्ठ संतों और भक्तों को भी दिव्य दर्शन हुए थे, वैसे क्या आपको भी जप साधना के अनुभव हुए हैं ?' उन्होंने मधुर मुस्कान बिखेरते हुए कहा- 'मुनि जी! मुझे भी कुछ उपलब्धियाँ जप और ध्यान से प्राप्त हुई है पर वे योग्य जिज्ञासु अधिकारी के समक्ष बताई जा सकती हैं, आप स्वयं विचारक विद्वान् एवं अधिकारी हैं इसलिए मैं आप को जप और ध्यान के दिव्य अनुभव भी बता सकता हूँ और करा भी सकता हूँ।'

इससे पूर्व मैं जप और ध्यान में इतना समय लगाना निरर्थक समझता था परन्तु आप श्री ने उदारता पूर्वक कृपा करके जब मुझे जप और ध्यान से हुई उपलब्धियों को रोचक तथा दिव्यदर्शन के प्रसंग सुनाये, तो मेरी अभिरूचि बढ़ी और मैं स्वयं आपके मार्ग निर्देशनानुसार जप साधना में प्रवृत्त हुआ। मुझे कुछ ही दिनों में दिव्य और अलौकिक प्रकाश के दर्शन हुए । समय-समय पर अन्तःस्फुरित प्रश्नों के यथोचित एवं यथार्थ उत्तर भी स्फुरित हुए ।

प्रतिभा सम्पन्नता -

जिस प्रकार आपकी ज्ञान साधना किशोरवय से ही उत्तरोत्तर तेजस्वी होती गई, उसी प्रकार आपकी प्रतिभा भी उत्तरोत्तर विकसित होती गई । आपकी प्रतिभा का प्रथम स्फुरण धर्मचर्चा के रूप में हुआ । धर्मचर्चा वही कर सकता है जो मेधावी हो, प्रतिभाशाली हो और हाजिर जवाबी हो। श्रद्धेय महाराज श्रीजी में चर्चावादी के सभी गुण साधना के प्रारम्भकाल से ही विद्यमान थें ।

प्रारम्भ में जब दया-दान विरोधी अपनी मान्यताओं का यत्र-तत्र प्रचार करने लगे तब उन क्षेत्रों में श्रावक वर्ग की श्रद्धा प्ररूपणा को सुरक्षित करने के लिए पूज्यवरों ने आपको ही यत्र-तत्र भेजा था। शास्त्रार्थ चाहे आर्य समाज के साथ हो, चाहे जैन समाज के किसी कट्टर सम्प्रदाय के साथ हो अथवा अन्य किसी तर्कबाज के साथ शास्त्रार्थ करने हेतु आप सदैव तैयार रहते थें।

वि. सं. 2002 में मूनक (पंजाब) में भयंकर विस्फोटक वातावरण बन गया था, उस समय वहाँ 45-48 मुनिवरों की उपस्थिति में आप श्रीजी ने साम्प्रदायिक धर्मान्ध लोगों की चुनौती स्वीकार करके उन्हें पूर्णतः परास्त कर सामाजिक वातावरण को शान्त किया। इसी से प्रभावित होकर आर्य समाज जारवल ने आपका हार्दिक स्वागत किया। समाना मंडी (पंजाब) में भी शास्त्रार्थ करके जैन समाज को पुनः प्रतिष्ठा प्रदान करने का श्रेय आपश्री को ही था।

वि. सं. 2002 में भारत केसरी आचार्य श्री काशीरामजी म. सा. का चातुर्मास जो (पंजाब) इसी विशेष उद्देश्य को लेकर कराया था । बड़े-बड़े विद्वानों को शास्त्रार्थ में परास्त करके सम्यक् दर्शन की ज्योति को उस क्षेत्र में प्रज्वलित रखना आपश्री की अद्वितीय प्रतिभा का परिचायक था। रोहतक मंडी (हरियाणा) को सम्यक् दर्शन से आप्लावित करके जैनत्व की स्थापना करना आपके ही अद्‌भुत बुद्धि कौशल का सुपरिणाम था ।

प्रवर्तक पद के लिए सर्वथा योग्य -

ऐसे महामना श्रद्धेय पूज्य श्री शान्तिस्वरूपजी म.सा. पंजाब के ही नहीं, उत्तर भारत के प्रवर्तक पद के सर्वथा योग्यतम हैं ।

आज प्राचीन मान्यताएं द्रुत गति से ढह रही हैं, नये मूल्य और नव्य मानदण्ड बनते जा रहे हैं, ऐसी संक्रमण वेला में श्री वर्द्धमान स्थानकवासी श्रमण संघ की जड़ों को सुदृढ़ करने तथा प्राचीन एवं नवीन दोनों विचार धाराओं या परम्पराओं में तालमेल बिठाकर संयमानुकूल सिद्धान्त सम्मत

राजमार्ग का दिशा निर्देशन करने में उत्तर भारत में ऐसे ही कुशल, विचक्षण, विचारक, अनेक जन मान्य प्रवर्तक श्री जो चतुर्विध संघ को अशुभ से निवृत्त कर सके, अज्ञान अन्धकार मिटाकर सज्ञान का प्रकाश दिखा सके, उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चला सके, असंयम से संयम की ओर समाज को मोड़ सके, मिथ्या क्रिया से सम्यक् क्रिया की ओर संघ को अंगुली निर्देश कर सके, अकल्पनीय कृत्यों से विमुख करके कल्पनीय कृत्यों के सम्मुख कर सके । ऐसे महामनस्वी युगपुरुष का नेतृत्व संघ को स्वल्प काल ही प्राप्त हो सका । आपश्री जिनशासन की गौरवशाली ढंग से सेवा करते आ रहे थे, अब उत्तरभारत प्रवर्तक के रूप में नियुक्त होने पर शासन के चार चांद लगने की पूर्ण आशा थी पर नियति को यह मंजूर नहीं था। आप श्री दिनांक 25-04-1985, वि.सं. 2042 वैशाख शुक्ला पंचमी को चरम पचक्खाण के साथ इह लीला संभार गये ।

आलेखन - श्रमणसंघीय मंत्री प. पू. श्री आशीषमुनिजी म. सा.

तेरे गुण की गौरव गाथा, धरती के जन-जन गायेंगे ।
और सभी कुछ भूल जायेंगे, पर तुम्हें भूल नहीं पायेंगे ।।
छोड़ जाता है कोई चेहरा तो कुछ ऐसे नक्श ।
देर लगती है जिन्हें, दिल से मिटाने में ।।

❖❖

परम पूज्य गुरु भगवंतों को वंदन, नमन !

मंगलमय जन्म दिवस

गणाधीश श्री उमेशमुनिजी म.सा. 'अणु'	10 मार्च
मेवाड़ प्रवर्तक श्री मदनमुनिजी म.सा.	14 मार्च
प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म.सा.	14 मार्च
आचार्य श्री चंपकमुनिजी जी म.सा.	25 मार्च
पूज्य श्री तिलोकऋषिजी म.सा.	28 मार्च
उपाध्याय श्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल'	17 अप्रैल
धर्मप्राण श्री लोकाशाहजी म.सा.	19 अप्रैल
आचार्य श्री धर्मदासजी म.सा.	19 अप्रैल

आत्मोद्धारक दीक्षा दिवस

आचार्य श्री घासीलालजी म.सा.	22 फरवरी
प्रवर्तक श्री रूपचंदजी म.सा.	22 फरवरी
युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.	22 फरवरी
महामंत्री श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. 'कुमुद'	24 फरवरी
उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म.सा. 'वागीश'	24 फरवरी
आचार्य श्री अमोलकऋषिजी म.सा.	26 फरवरी
उपाध्याय श्री मूलमुनिजी म.सा.	29 फरवरी
मुधर व्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.	29 फरवरी
आचार्य श्री एकलिंगदासजी म.सा.	11 मार्च
आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा.	12 मार्च
जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.	12 मार्च
आचार्य श्री भूधरजी म.सा.	14 मार्च
घोर तपस्वी श्री निहालचंदजी म.सा.	22 मार्च
प्रवर्तक श्री गणेशमुनिजी म.सा.	25 मार्च
आचार्य श्री अमरसिंहजी म.सा.	04 अप्रैल

पुण्य स्मृति दिवस

अभिग्रहधारी श्री रोड़जी स्वामी	04 मार्च
आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.	06 मार्च
आचार्य श्री आनंदऋषिजी म.सा.	28 मार्च
स्वामी श्री हजारीमलजी म.सा.	04 अप्रैल
स्वामी श्री छगनलालजी म.सा.	10 अप्रैल
आचार्य श्री खूबचंदजी म.सा.	11 अप्रैल
प्रवर्तक श्री मगनमुनिजी म.सा.	13 अप्रैल
स्वामी श्री रंगलालजी म.सा.	14 अप्रैल
साधकरत्न श्री फूलचंदजी म.सा.	16 अप्रैल
आचार्य श्री धन्नाजी म.सा.	18 अप्रैल
उपाध्याय श्री पुष्करमुनिजी म.सा.	19 अप्रैल

हम सभी गुरु भगवंतों के पुनीत दिवस तप-त्याग एवं सामायिक आराधन, धर्माचरण, आयम्बिल-एकासना दिवस के रूप में मनाकर गुरु भगवंतों के श्रीचरणों में अपनी श्रद्धा भक्ति का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण कर स्वयं के जीवन को सुरभित करें ।

जिनशासन की श्रेष्ठ मणियाँ ...

प्रथम : महासती ब्राह्मी

प्राचीन युग की बात है। क्षितिप्रतिष्ठ नामक एक अत्यन्त ही सुन्दर नगर था। उस नगर के राजकुमार का नाम महीधर था। राजकुमार के पाँच मित्र थे - मंत्री पुत्र सुबुद्धि, वैद्य पुत्र जीवानन्द, श्रेष्ठी पुत्र पूर्णचन्द्र, शीलपुंज एवं केशवकुमार। इन छः मित्रों में एक-दूसरे के प्रति अत्यन्त प्रगाढ़ प्रेम था। वे जहाँ भी जाते, सदैव साथ-साथ जाते थे।

एक बार यह मित्र मंडली नगर के बाहर घूमने निकली। उन्होंने देखा कि सुदूर पेड़ पौधों से घिरे सघन वन में ध्यान में लीन एक मुनिराज खड़े हैं। श्रद्धापूर्वक छहों मित्र मुनि के निकट पहुँचे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। ध्यान में मग्न मुनि कुष्ठ रोग से पीड़ित थे। उनके पूरे शरीर से रक्त एवं पीव पानी की तरह टपक रहा था। करुणा से उनका हृदय भर आया। वैद्य पुत्र बोला-मित्रों ! मैं इन मुनिराज की चिकित्सा करने में समर्थ हूँ। मगर इनकी चिकित्सा के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता है-लक्षपाक तेल, गौशीर्ष चन्दन एवं रत्न कम्बल। लक्षपाक तेल तो मेरे पिता के औषधालय से प्राप्त हो जायेगा। लेकिन गौशीर्ष चन्दन एवं रत्न कम्बल के लिए हमें अन्यत्र कहीं प्रयास करना पड़ेगा।

नगर के अनेक व्यापारियों के पास पूछताछ करने के पश्चात् एक वृद्ध श्रेष्ठी की दुकान में उन्हें ये दोनों वस्तुएँ प्राप्त हो गयीं। मगर इतनी बेशकीमती वस्तुओं की आवश्यकता इन नौजवानों को किसके लिए हुई, यह जानने के लिए उसने अपनी जिज्ञासा उनके सामने प्रकट की। मित्र मंडली ने जब सारा वृत्तान्त सुनाया तो उस वृद्ध श्रेष्ठी को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इस शुभ कार्य के लिए उसने ये अमूल्य वस्तुएँ उसने बिना किसी मूल्य के उस मित्र मंडली को प्रदान कर दी।

वैद्यपुत्र जीवानन्द के अथक प्रयास से मुनिराज की चिकित्सा सम्पूर्ण हुई। मुनिराज का समस्त रोग शांत हो गया और उनकी देह कंचन की तरह चमकने लगी। अपने इस शुभ कार्य से उस मित्र मंडली को अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हुई। इस मित्र मंडली ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव-सेवा एवं तप-त्याग में अर्पण कर दिया। कुछ समय पश्चात् इन छहों मित्रों ने संयम व्रत अंगीकार कर लिया और अनेक प्रकार की त्याग-तपस्या से अपनी आत्मा को भावित करते हुए कालधर्म को प्राप्त किया। देवगति से च्यवकर इन छः मित्रों का जन्म इस कर्मयुग के प्रारंभ में हुआ। जीवानन्द ने भगवान् ऋषभदेव, महीधर ने भरत, सुबुद्धि ने बाहुबली, पूर्णचन्द्र ने ब्राह्मी, शीलपुंज ने सुन्दरी और केशवकुमार के जीव ने श्रेयांसकुमार के रूप में जन्म लिया।

ऋषभदेव के पिता का नाम अयोध्यापति नाभिराय था और माता का नाम मरूदेवी था। युवावस्था को प्राप्त होने पर इनका विवाह सुमंगला एवं सुनन्दा नाम की दो कन्याओं के साथ हुआ। सुमंगला से प्रथम युगल रूप में भरत एवं ब्राह्मी उत्पन्न हुए एवं दूसरे प्रसव में 49 युगल पुत्र उत्पन्न हुए। सुनन्दा ने बाहुबली एवं सुन्दरी को युगल रूप में जन्म दिया। इस प्रकार ऋषभदेव के कुल 100 पुत्र एवं दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं। इन सब में भरत सबसे बड़े थे।

प्रभु ऋषभदेव का स्नेह अपनी पुत्रियों के प्रति पुत्रों की भांति भी था। ये जानते थे कि स्त्रियों में पुरुषों से भी सेवा की भावना अधिक होती है। अतः उन्होंने अपनी बड़ी पुत्री ब्राह्मी को इस युग का सर्वप्रथम अक्षर ज्ञान प्रदान किया। इस युग की वर्णमाला का प्रथम अक्षर ब्राह्मी ने अपने हाथों से लिखा। इसी कारण से हमारी लिपि आज भी ब्राह्मी लिपि के नाम से जानी जाती है।

भगवान् ऋषभदेव ने लिपि के अलावा अपनी पुत्री ब्राह्मी को संगीतकला, चित्रकला, काव्यकला आदि चौसठ कलाओं का ज्ञान भी प्रदान किया। ब्राह्मी ने इन चौसठ कलाओं के ज्ञान का प्रचार नारी जगत में किया। वह चाहती थी कि नारी वर्ग इन कलाओं की जानकारी को प्राप्त कर पुरुष वर्ग का मार्ग प्रदर्शन करे। इसी उद्देश्य से उसने आजीवन ब्रह्मचारिणी रहकर अपने पिता द्वारा दी गई शिक्षाओं का प्रचार करने का निश्चय किया। ब्रह्मचारिणी रहकर वह सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने लगी। तीर्थंकर पद को प्राप्त करने के पश्चात् एक बार भगवान् ऋषभदेव का पदार्पण अयोध्या में हुआ। वहाँ की प्रजा अपने पूर्व स्वामी के दर्शनार्थ बादलों की तरह उमड़ पड़ी। भगवान् ऋषभदेव की माता एवं ब्राह्मी की दादी मरुदेवी भी अपने पुत्र के दर्शन करने यहाँ गई। दर्शनों के पश्चात् माता मरुदेवी ने हाथी के ओहदे पर बैठे-बैठे ही अपने मोहनीय कर्मों का क्षय किया और केवल ज्ञान की प्राप्ति करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गयी। इस घटना से प्रेरित होकर ब्राह्मी एवं सुन्दरी दोनों बहनों को इस संसार से विरक्ति हो गई और उन्होंने अपने बड़े भाई भरत से भगवान् के पास संयम अंगीकार करने की आज्ञा मांगी मोहवश भरत ने अपनी बहनों को संयमित होने से रोकने का प्रयास किया । मगर ब्राह्मी को वे किसी प्रकार रोक नहीं पाये ।

इस कर्मयुग में धर्म की आदि करने के कारण आदिनाथ के नाम से जाने जाने वाले भगवान् ऋषभदेव के पास ब्राह्मी ने दीक्षा अंगीकार की। इस प्रकार महासती ब्राह्मी ने इस युग की प्रथम महाश्रमणी होने का सौभाग्य प्राप्त किया।

महासती ब्राह्मी को शत्-शत् वन्दन! ❖❖

(तर्ज : देशी राग ...)

सेवामूर्ति श्रवणकुमार

- श्री गौतमचंद गुगलिया जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

लाला म्हाने विलखता छोड़, गयो किम तोड़, आफत कांई आ पड़ी।
बेटा श्रवण आ, पाणी तो म्हाने पा, जोऊं थारी बाटड़ी ।। टेर ।।

पिता-मात जन्म का अंधा, सेवा करता श्रवण बंदा,
तन-मन से सेवा कोनी, घर नार प्यारी तज दीनी।
चारों धाम 2 तीरथ करवाया, वनों में ले आया,
खांधे पे रखी कावडी।। बेटा श्रवण... ।। 2।।

श्रवण ने शीश झुकायो, वो नीर भरण को धायो,
पाणी में घड़ो डुबायो, भड़-भड़ यों शब्द सुणायो।
श्रवण ने घड़ो उठायो, दशरथ ने बाण चलायो,
बाण लागो 2 कलेजा मांही, सह्यो नहीं जाई।
मिच गई दोनों आंखड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 2 ।।

दशरथ सरवर तट आयो, श्रवण को देख घबरायो,
बोले करमन की गति न्यारी, मैं पाप किया है अति भारी।
मैं तो जाण्यो 2 म्हारो शिकार, बाण दीयो मार,
जुलम को बाटड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 3 ।।

श्रवण दशरथ से बोले, म्हारो मात-पिता में जीव डोले,
मामाजी वन में जाजो, म्हारा मात-पिता ने पाणी पाजो।
म्हारो कीजो 2 चरणां में प्रणाम, जावांगा निज धाम,
लंबी तो खींची सांसड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 4 ।।

जल बिन जीवड़ो घबरायो, म्हारो लाल हजु नहीं आयो,
म्हारा प्राण कंठ बिच अटके, बेटा कांई मारग भूले भटके।
आ छाई 2 अंधारी रात, कोई न थारे साथ,
कोई क कीधी घातड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 5 ।।

जल लेकर दशरथ आयो, श्रवण को हाल सुणायो,
तू तो हट जा रे दुष्ट हत्यारा, कुण देखे मुखड़ो थारो ।
म्हारो यौवन 2 धन लियो लूट, करम गया फूट,
आंधा की तोड़ी लाकड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 6 ।।

राजा अन्त समय थारो आसी, तेरे पुत्र एक नहीं पासी,
श्री राम जायेंगे वन में, तेरे मखियां भमेगी सारा तन में।
आंधा आंधी 2 श्राप सुनायो, जीव घबरायो,
श्रवण की छोड़ी आसड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 7 ।।

राजा क्रिया तीनों का करवाया, वो तो अवधपुरी में आया,
राजा मन ही मन पछताया, यह भेद किसी को न बताया।
यह भजन 2 "मूला" ने बणाया, भगत मन भाया,
प्रभु से जोड़ो प्रीतड़ी ।। बेटा श्रवण... ।। 8।।

बढ़ते मोबाईल - घटते संस्कार

- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य-जैन कॉन्फ्रेंस

मोबाईल सेलफोन आज सभी की जररूत का अभिन्न अंग बन चुका है। संचार क्रांति के इस युग में मानो मोबाईल एक अनमोल वरदान है, जो सच्चे साथी की तरह मददगार है। वर्तमान में मोबाईल पर निर्भरता इस तरह बढ़ गई है मानो हम भाई-बंधु को छोड़ सकते है, लेकिन मोबाईल नहीं। इंसान एक घंटा सामायिक करने के पश्चात् भी सबसे पहले अपने मोबाईल को ही देखना पसंद करता है, इस कदर मोबाईल का प्रयोग हमारे जीवन में समावेश कर चुका है। इसके बिना मानो जीवन की कहानी ही अधूरी है।

बदलती दुनियाँ में साथ का झूठा वादा है-मोबाईल
मंहगाई के दौर में बिना रिचार्ज के आधा है-मोबाईल
इसने रिश्तों को जोड़ा है, मोड़ा है
मगर दुःख इस बात का है कि लोगों के लिए
आज अपनों से ज्यादा प्रिय है- मोबाईल ।।

हम मोबाईल को आज की जरूरत समझते हैं, वैज्ञानिक भी इसके प्रयोग के खिलाफ कतई नहीं है। किंतु अत्यधिक, अनावश्यक प्रयोग से नकारात्मक साइड इफेक्ट्स उत्पन्न होते हैं और मैं इन्हीं बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास करूंगा ।

पहले का दौर, जब मोबाईल नहीं था तो लोगों का अपेक्षाकृत काफी मिलना-जुलना होता था। संवाद का सिलसिला जारी रहता था और दूसरों के दर्द, उनकी भावनाओं को समझ कर निपटारे का प्रयास होता था। प्रत्यक्ष मिलने-जुलने की जगह आजकल तीज-त्यौहार से लेकर बधाइयाँ, शोक समाचारों की पूर्ति हम मोबाईल के द्वारा व्हाट्सऐप पर संदेश भेजकर अपनी जिम्मेदारी को इतिश्री मान लेते हैं।

इंसान जितना ऑनलाइन होता जा रहा है, इंसानियत उतनी ही ऑफलाइन होती जा रही है। सभी मोबाईल की दुनियाँ में खोए हुए हैं, चाहे सफर हो या किसी से मिलने जाना हो, प्रत्यक्ष संवाद की जगह सभी मोबाईल में ज्यादा खोए मिलते हैं।

जिंदगी गुजरने लगी है अब तो किश्तों पर,
यह कुछ ग्राम का मोबाईल भारी पड़ गया है रिश्तों पर।

एक आंकलन के अनुसार औसतन हर भारतीय पाँच घंटे से ज्यादा समय मोबाईल को देता है। जो प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। मनुष्य का एकाकी जीवन बढ़ रहा है और तो और खाली समय, विडियो, गेम आदि में व्यतीत कर रहा है। नशा नहीं होकर एक नशे की तरह एक अजीब सा नशा मानो सर्वत्र छा गया है। परिवार में तीन जन हैं तो अक्सर अलग-अलग तीनों मोबाईल में डूबे हुए मिलेंगे।

जबसे लोग मोबाईल के इतने करीब हो गये है, एक दूसरे को समय देने में उतने ही गरीब हो गये है। साल 1973 में मार्टिन कूपर ने जब पहला मोबाईल बनाया था तो शायद दुनियाँ ने सोचा भी नहीं होगा जितने इंसान जिंदा नहीं होंगे उससे अधिक मोबाईल (वर्तमान में करीब 9 अरब फोन) प्रचलन में आ जायेंगे। हमारे घरों में सदस्यों से अधिक मोबाईल पाए जाएंगे। आजकल तो माता-पिता द्वारा बचपन से ही बच्चों में मोबाईल की लत डाल दी जाती है। बच्चे को रोता हुआ देख उसे मोबाईल थमा दिया जाता है और थोड़ा बड़ा होने पर उसे पर्सनल मोबाईल तक दिला दिया जाता है। लेकिन वे यह ध्यान नहीं दे पाते कि बच्चे मोबाईल में क्या अच्छा, क्या बुरा देखते हैं। अनेकों अवसरों पर बच्चों को गलत चीजें देखते हुए भी पाया गया है। माता-पिता के घर में मोबाईल में मशगूल होने के कारण बच्चा भी मोबाईल को अपना साथी मानकर उसमें खो जाता है। इससे बच्चों में और माँ-बाप में समन्वय, प्रेम, सौहार्द, अपनेपन की जगह एक दरार-सी आने लगती है। बच्चा जिद्दी, चिड़चिड़ा, रहन-सहन में प्रतिकूल और एकाकी होने लगता है तथा उसके मानवीय, सामाजिक, पारिवारिक संस्कारों के विकास में बाधाएं आने लगती है। भविष्य के लिए यह अत्यंत घातक है। युवाओं में बढ़ते गलत ट्रेंड, फैशन का भी यही प्रमुख कारण है। परिवार में मोबाईल तो बढ़ रहे हैं, किंतु संस्कार तीव्र गति से घट रहे हैं। पहले बच्चे खाली समय में दादा-दादी, परिजनों से सारगर्भित कहानी-किस्से सुनते थे, किंतु आज मोबाईल में मशगूल होने के कारण यह प्रथा लुप्त-सी हो गई है। पहले व्यक्ति अपने पूरे कुटुम्ब की

खैर रखता था, किंतु अब वह पति-पत्नी, बच्चों तक ही अत्यंत सीमित सा हो गया है। मोबाईल से उसे दुख दर्द मालूम होने के बावजूद अनजाना सा बना रहता है। मोबाईल के प्रयोग से छोटी-छोटी नकारात्मक बातें जल्द बाहर आ जाती है। कभी-कभार परिवार समाज के विघटन का कार्य भी इसके निमित्त हो जाता है। सास-बहु, पति-पत्नी, पारिवारिक झगड़े में आग में घी डालने का कार्य कई बार मोबाईल ही करता है। पहले माता-पिता, बुजुर्ग, बच्चों के रिश्ते अपने अनुभव के आधार पर तय करते थे, किंतु आजकल मोबाईल प्रमुख भूमिका में रोल अदा कर रहा है। यारी, दोस्ती, प्रेम की गलत राह की संभावना ज्यादा बढ़ गई है। प्रेम विवाह के साथ-साथ तलाक भी त्वरित रफ्तार से बढ़ रहे हैं।

मोबाइल से अनावश्यक रूप से घर के बजट में बढ़ोतरी हो रही है। कर्ज लेकर भी मोबाईल खरीदा जा रहा है। घर में खाना बनने की बजाय मोबाईल के माध्यम से बाहरी **'अस्वस्थकर'** भोजन प्रमुखता से चलन में आ रहे हैं। टी. वी. को पहले हम दोष देते थे, यह पीढ़ी को बिगाड़ रहा है, किंतु मोबाईल उससे कई गुना बच्चों, युवाओं पर गलत प्रभाव डाल रहा है। मोबाइल के अंदर आज अनेकों प्रकार की अश्लील ऐप, सट्टेबाजी ऐप उपलब्ध है, जो चरित्र हनन के साथ-साथ घोर घातकीय है। मोबाईल के कारण मानव शरीर में बहुत-सी बीमारियाँ हो जाती है। मोबाईल टॉवर व सेलफोन, डेटा सेंटर से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक विकिरण किरणों से **'डी एन ए'** क्षतिग्रस्त होने के साथ-साथ महिलाओं में प्रजनन क्षमता कम हो रही है। इसके अलावा अत्यधिक प्रयोग से मानसिक रोग, चक्षु रोग, तनाव, डिप्रेशन, इंसोमानिया, कैंसर, ब्रेन कैंसर, हृदय रोगों का कारण बन रहा है।

आने वाले समय में एक स्टडी में बताया गया है कि वर्ष 2040 तक स्मार्ट फोन और डेटा सैंटर, मोबाईल टावर जैसी टैक्नोलॉजी पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा खतरा होगी। इनका योगदान प्रदूषण में दो प्रतिशत से बढ़कर करीब 15 प्रतिशत तक हो जाएगा। फेंके गये फोन, हानिकारक रसायनों को जल व जमीन में छोड़ दिया जाता है, जो अत्यंत हानिकारक है। आज सूक्ष्म जीव जैसे तितलियाँ, छोटे पक्षी आदि विलुप्त हो रहे हैं।, जिसका कारण मोबाईल टॉवरों से निकलने वाली हानिकारक विकिरण है।

सार-संक्षेप-मोबाईल का उपयोग जरूर करें, लेकिन साथ ही साथ विवेक एवं सावधानी बरतें। मोबाईल को शरीर के अंगों से ज्यादा लगाकर, सोते समय तकियों के नीचे या एकदम पास नहीं रखे। मोबाईल को रिसाइकिलिंग की जगह छोड़ें। बच्चों को सीमित समय के लिए दें। उनके मनोरंजन के लिए अन्य वैकल्पिक व्यवस्था पर ध्यान दें। पारिवारिक सौहार्द हेतु अधिकाधिक प्रत्यक्ष संवाद का माध्यम लें, लगातार अनावश्यक मोबाइल प्रयोग से बचें। अनावश्यक वाद-विवाद विषय मोबाईल से प्रचारित ना करें, शारीरिक गतिविधियाँ व्यायाम, खेल, भ्रमण आदि अन्य माध्यमों से जीवन का भरपूर आनंद ले । ❖❖

स्वास्थ्य समाचार -

अनानास का गर्म पानी ...

आई.सी.बी.एस जनरल अस्पताल के प्रोफेसर डॉ. गिल्बर्ट ए.क्वोक ने जोर देकर कहा है कि गर्म अनानास का पानी बचाएगा आपकी जान। गर्म अनानास कैंसर कोशिकाओं को मारता है। अनानास के 2 से 3 टुकड़ों को एक कप में पीस लें और इसमें गर्म पानी मिलाएं, यह 'नमकीन पानी' बन जाएगा। अगर आप इसे रोजाना पिएंगे तो यह सभी के लिए अच्छा है। गर्म अनानास कैंसर रोधी पदार्थ छोड़ता है, जो प्रभावी कैंसर उपचार के लिए चिकित्सा में नवीनतम प्रगति है। अनानास के गर्म फल में सिस्ट और ट्यूमर को मारने का प्रभाव होता है। यह सभी प्रकार के कैंसर को ठीक करने में सिद्ध हुआ है। गर्म अनानास का पानी एलर्जी, एलर्जी के कारण शरीर में निर्मित सभी कीटाणुओं और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। अनानास के रस से प्राप्त दवा केवल हिंसक कोशिकाओं को नष्ट करती है और स्वस्थ कोशिकाओं को प्रभावित नहीं करती है। इसके अलावा, अनानास के रस में अमीनो एसिड और अनानास पॉलीफेनोल्स उच्च रक्तचाप को नियंत्रित कर सकते हैं, आंतरिक रक्त वाहिकाओं की रुकावट को रोक सकते हैं, रक्त परिसंचरण में सुधार कर सकते हैं और रक्त के थक्के को कम कर सकते हैं। ❖❖

जिन रिफ्लेक्सोलॉजी - अचूक रोग निदान व इलाज

- श्री अनिल जैन, जिन रिफ्लेक्सोलॉजी के अनुसंधानकर्त्ता, छ. संभाजीनगर (महाराष्ट्र)

वर्तमान समय में समाज का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की बीमारी से ग्रसित है। उसे स्वस्थ रहने के लिए जाने-अनजाने में विभिन्न प्रकार की पंचेन्द्रिय जीवों की घात से तैयार औषधियों का सेवन करना पड़ रहा है और जिसके कई दुष्परिणाम भी हो रहे हैं। अगर आप इनसे बचना चाहते हो तो इस अभियान से अवश्य जुड़िये। विश्व की एकमात्र निरवद्य व अहिंसक चिकित्सा पद्धति जिन रिफ्लेक्सोलॉजी को अपनाईये। जिसमें रोग का सही निदान तो होता ही है और साथ ही बीमारियाँ भी जड़मूल से ठीक होती हैं।

विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति -

रिफ्लेक्सोलॉजी एक्युप्रेशर। एक्यु अर्थात् - तीखा, प्रेशर अर्थात् - दबाव और रिफ्लेक्स अर्थात् - प्रतिबिंब। शरीर में स्थित अवयवों के प्रतिबिंब केन्द्र जोकि हाथ, पाँव व अन्य स्थानों पर स्थित हैं उन्हें विशेष प्रकार का दबाव देकर इलाज करने की पद्धति को रिफ्लेक्सोलॉजी एक्युप्रेशर कहते हैं।

इस चिकित्सा पद्धति का विशेष अध्ययन करने पर हमने पाया कि इसमें बहुत सी विभिन्नताएँ हैं। विभिन्न चिकित्सकों ने इसे अलग-अलग रूप से प्रस्तुत किया। जिसमें दबाव देने की विधि से लेकर प्रतिबिंबक केन्द्रों की स्थिति में भी विभिन्नताएँ थी, उन विभिन्नताओं को दूर करने हेतु अनुसंधान का कार्य करने का निर्णय लिया गया। बीस वर्षों की मेहनत व 13,000 से अधिक रोगियों पर किये अनुसंधानात्मक कार्य से हाथ व पाँव में स्थित सटीक प्रतिबिंब केन्द्रों का पता लगाया, साथ शीघ्र परिणामों को प्राप्त करने के लिए उन स्थानों पर सूक्ष्म चुम्बकों का प्रयोग किया गया। समान्तर पद्धतियों से इसकी विभिन्नता दर्शाने के लिए इस पद्धति का नाम - **जिन रिफ्लेक्सोलॉजी** रखा गया।

इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है - रोग निदान। 20,000 लोगों पर किये गये अनुसंधानात्मक कार्यों में से 71% लोगों की जो भी उन्हें तकलीफ थी वह बराबर पाई गई। साथ ही 15% रोगियों की कुछ तकलीफें ज्ञात नहीं हो पाई उसका कारण था, उनके द्वारा प्रयोग में ली गई औषधियों का सेवन। जहाँ सभी चिकित्सा पद्धतियाँ औसत परिणामों पर कार्य करती हैं पर यह एक ऐसी पद्धति है जो कि विशिष्ट तकनीक (Unique System) से काम करती है।

इसी ज्ञान व अनुभव को पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया। जिसका विमोचन दिनांक 22 अक्टूबर 2011 को महाराष्ट्र के शिक्षा मंत्री श्री राजेन्द्रजी दर्डा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। विश्व के सभी लोगों के मार्गदर्शन हेतु इस पुस्तक का अंग्रेजी भाषा संस्करण का विमोचन दिनांक 03 अगस्त 2012 को जिन रिफ्लेक्सोलॉजी पुस्तक के रूप में भारत के स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद, सांसद श्री विजय दर्डा के कर-कमलों द्वारा किया गया।

शीघ्र परिणामों को प्राप्त करने के लिए सूक्ष्म चुम्बकों की प्रयोग विधि के साथ जिन रिफ्लेक्सोलॉजी पुस्तक के नवीन संस्करण (वीडियो सीडी युक्त) का विमोचन वर्ष 2014 में महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हान, शिक्षा मंत्री राजेन्द्र दर्डा के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

विश्व में कौन-सी पद्धति सर्वश्रेष्ठ है?

आज के युग का सबसे महत्वपूर्ण सवाल है कि सबसे सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा कौन-सी है क्योंकि प्रत्येक चिकित्सक अपनी चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ कहता है, लेकिन उलझन में रहता है रोगी। जानकारी के अभाव में वह अनेक चिकित्सकों के पास भटकता है और उसकी बीमारी भी अंदर से अंदर बढ़ती रहती है। हमारे प्राचीन विद्वानों व ग्रंथकारों ने सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति कौन-सी है उसका सही आंकलन करने के लिए पाँच आरोग्य नीतियों (Health Care Policies) को आम लोगों के सामने रखा। उन्होंने कहा जो इन पाँच आरोग्य नीतियों पर खरी उतरेगी, वही चिकित्सा पद्धति सर्वश्रेष्ठ कहलायेगी। प्राचीन विद्धानों की तरह से आधुनिक विद्वानों ने भी पाँच आरोग्य नीतियों (Health Care Policies) का उल्लेख किया है। जिसके माध्यम से हम किसी भी पद्धति की

सर्वश्रेष्ठता का आंकलन कर सकते हैं। इन्हीं नीतियों के आंकलन द्वारा प्राप्त परिणामों ने जिन रिफ्लेक्सोलॉजी को विश्व की सर्वश्रेष्ठ पद्धति के रूप में प्रतिस्थापित किया है।

➢**पाँच प्राचीन स्वस्थ्य नीतियाँ -**

1. बीमारियों की रोकथाम में सहायक 2. सही रोग निदान 3. शीघ्र इलाज 4. दुष्परिणाम रहित 5. पूर्णतया प्राकृतिक व कम खर्चीली।

● **प्रथम नीति - बीमारियों की रोकथाम में सहायक हो।** जिन रिफ्लेक्सोलॉजी पद्धति हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर, बीमारियों की रोकथाम में सहायक बनती है।

● **दूसरी नीति - सही रोग निदान।** सही रोग निदान के बिना इलाज संभव नहीं हो पायेगा। रोग निदान करना जिन रिफ्लेक्सोलॉजी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता रही हुई है। आप किसी भी चिकित्सक के पास जाते हैं तो वह आप से पूछता है कि आपको क्या तकलीफ है? लेकिन जिन रिफ्लेक्सोलॉजीस्ट के पास आप जाते हैं तो वह आपसे एक भी सवाल नहीं पूछता, बल्कि वह बता देता है कि आपको क्या-क्या तकलीफ है।

विश्व में 150 से अधिक चिकित्सा पद्धतियाँ रही हुई हैं। जिनसे इलाज संभव हो पाया है, लेकिन सटीक रोग निदान की बात किसी भी चिकित्सा पद्धति में नहीं समाई हुई है। केवल सबसे प्राचीनतक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद में रोग निदान का उल्लेख मिलता है। जिसमें बताया गया है कि वैद्य नाड़ी देखकर आपके शरीर में क्या तकलीफ है, वह सब बता देता था। वह ज्ञान आज सीमित हो गया है।

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान लक्षण और चिन्हों (Sign or Symptoms) के माध्यम से बीमारी का पता लगाता है और उसका इलाज करता है, जैसे शरीर का तापमान या जीभ की स्थिति, आँखों का पीलापन या लालिमा, लेकिन यह सारे लक्षण तब उभरकर सामने आते हैं जब बीमारी शरीर में अपना घर बना चुकी होती है। इससे उलट प्रभावी रूप से जिन रिफ्लेक्सोलॉजिस्ट बीमारी की शुरुआत में ही परिक्षण से आपके पैरों की जाँच करके, बिना मशीन के केवल 30 मिनट में बता देता है कि आपके मुँह में छाले हैं या गर्दन के कौन से मनके की स्थिति में बदलाव हुआ है। पाचन तंत्र की तकलीफ हो या श्वसन तंत्र की, हार्मोन में बदलाव हुआ हो या सर्दी की शिकायत हो, इन सबका रोग निदान त्वरित रुप से सटीक हो जाता है। जिन रिफ्लेक्सोलॉजिस्ट के पास एक रोगी ने अपनी जाँच करवाई, जाँच करने के बाद उसकी सारी तकलीफों की जानकारी दी और साथ ही कहा कि आपके हृदय में भी तकलीफ है, अतः आप अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करें। उसने कहा मेरे हृदय में कुछ तकलीफ नहीं है, बाकी का सारा रोग निदान आपका सही है। आठ दिन बाद उस रोगी ने जिन रिफ्लेक्सोलॉजिस्ट के पास फोन करके बताया कि आज मेरा एंजियोप्लास्टी हो गया है। आपका रोग निदान 100 प्रतिशत सही था, मैं अगर आपकी बात मान लेता तो मैं ऑपरेशन से बच सकता था। ऐसे ही सटीक रोग निदान कर हजारों रोगियों के जीवन रोशन करने वाली पद्धति जिन रिफ्लेक्सोलॉजी है।

● **तीसरी नीति - इलाज शीघ्र होना चाहिये।** इस चिकित्सा में तुरंत हुई तकलीफ का तुरंत इलाज होता है। दर्द निवारक दवाएँ पहले दिन से बंद कर दी जाती है। रोगी को पहले दिन से ही प्रभावकारी परिणाम प्राप्त होने लग जाते हैं। अतः यह तीसरी बात पर भी खरी उतरी। जो रोगी आता है, उन्हें रोग निदान करने के बाद सात दिन तक चिकित्सा प्रदान की जाती है। चिकित्सा के दौरान जीवन शैली में बदलाव हेतु 21 सर्व सामान्य नियम बताये जाते हैं। जिसे प्रतिदिन की दिनचर्या के पश्चात् सोने से पूर्व भरने को कहा जाता है। साथ ही शीघ्र परिणामों को प्राप्त करने के सूक्ष्म चुम्बकों का प्रयोग भी किया जाता है। सात दिनों तक किसी भी प्रकार का सकरात्मक परिणाम प्राप्त नहीं होने पर उसे कहा जाता है कि आप इच्छानुसार अन्य चिकित्सा का प्रयोग कर सकते हैं। सात दिन के बाद रोगी से इस पद्धति व चिकित्सक के बारें में प्रतिक्रिया प्रपत्र भरा जाता है।

➢**रोगी का अवलोकन (Case Study)**

एक बालक (15 वर्ष) वह उसके पिताजी के साथ हमारे केन्द्र पर आया। उस समय उसके दोनों हाथ में कुहनी से अंगुलियों का भाग निरंतर अनियंत्रित स्वतः ही हील रहे थे। हमने सबसे पहले उसके पैरों के प्रतिबिंब केन्द्रों को दबाव

देकर रोग निदान पत्र बनाया और उसके पिताजी को कहा की इसके सी-7 (सर्वाइकल का सातवां मनका) व टी-1 (पीठ/थोरासिक का पहला मनका) से संबंधित तकलीफ है। ये जानकर उसके पिताजी ने अपने पास रखी एम.आई.आर. की रिपोर्ट सामने रखते हुये कहा कि जो आपने कहा है वही इस रिपोर्ट में भी है। आप का रोग निदान तो सही है पर इसका इलाज क्या है? उसके हाथ सुबह 8 बजे से दोपहर 12 बजे तक व दोपहर में 3 से 7 बजे तक तेजी से हिलते थें। जिसके कारण वह स्कूल में भी नहीं जा पा रहा था। शहर के सारे न्यूरो सर्जन को दिखाया, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों को अपनाया, कहीं पर भी आराम नहीं मिला। किसी ने सुझाव दिया कि आप जिन रिफ्लेक्सोलॉजिस्ट के पास जाईये। तब हमने उनसे कहा कि आपको 7 दिन इलाज करवाना होगा। इन 7 दिनों के परिणामों से आगे हमें क्या करना है, वो ज्ञात होगा। पहले दिन हमने पाँव में स्थित प्रतिबिंब केन्द्रों को दबान के बाद स्पाइनल के प्रतिबिंब केन्द्रों पर सूक्ष्म चुम्बकों का प्रयोग करने के लिए उसके पैरों पर चिन्हित कर दिया और कहा कि सुबह-शाम दोनों समय चुम्बक लगाने को दिया। 4 जी सुपर चुम्बक का प्रयोग हाथों के नीचे भी किया गया, पहले ही दिन 75 प्रतिशत लाभ हुआ। बाद में रविवार का एक दिन का अवकाश होने के बाद वापस तकलीफ बढ़ गई। बाद में नियमित 15 दिन चिकित्सा करने के बाद वह पूरा सामान्य हो गया है। वह अब स्कूल भी जा रहा है और उसके हाथ भी अनियंत्रित नहीं है। ऐसे ही अनगिनत रोगियों का रोग निदान तो सही हुआ है और साथ ही जिन्होंने इस चिकित्सा पद्धति को अपनाया, उनको इसके परिणाम भी शीघ्र ही प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार ये चिकित्सा तीसरी स्वस्थ्य चिकित्सा नीति पर भी खरी उतरी है।

● **चौथी नीति - स्वस्थ्य नीति - दुष्परिणाम रहित** - जहाँ अन्य पद्धियों से इलाज किया जाता है। तो उसमें लाभ हो या न हो, लेकिन उसके कई दुष्परिणाम अवश्य होते हैं, कई देशों के अनुसंधानों ने यह साबित कर दिया है। ऐसा ही एक सर्वे ऑस्ट्रेलियन सरकार ने भी करवाया था, जिसमें उन्होंने बताया कि इन औषधियों का प्रयोग करने से किडनी व यकृत संबंधी तकलीफों के साथ ही अन्य 26 प्रकार के दुष्परिणाम हो रहे हैं। एक बीमारी ठीक होती है साथ ही दूसरी नई बीमारियाँ शरीर में पनप रही हैं, लेकिन जिन रिफ्लेक्सोलॉजी विश्व की एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसमें किसी भी प्रकार का दुष्परिणाम नहीं होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि ये पद्धति चौथी स्वस्थ्य नीति पर भी खरी उतरी है।

● **पाँचवी नीति - स्वस्थ्य नीति - इलाज कम खर्च में व पूर्णतया प्राकृतिक होना चाहिये।** जिन रिफ्लेक्सोलॉजी में अनावश्यक खर्च कुछ भी नही है। आज सबसे ज्यादा खर्च रोग निदान पर होता है और उसमें भी सटीकता नहीं हो पा रही हैं। आप चिकित्सक के पास जाते हैं, उसे आप जो कहते हैं उसी को चिकित्सक लक्ष्य में रखकर इलाज करता है लेकिन इस पद्धति में चिकित्सक आप को जो तकलीफ हो रही है उसके साथ अन्य जो भी आपकी छोटी-मोटी तकलीफें रही हुई हैं उन सबका रोग निदान करता है। साथ में उसका इलाज भी कर देता है और इसमें किसी भी प्रकार की दवाईयों का खर्चा भी नहीं होता है और ये पूर्णतया प्राकृतिक रूप से होता है इसलिये हम कह सकते हैं कि ये पद्धति पाँचवी स्वस्थ्य नीति को भी पूर्ण करती है।

हमने देखा कि पाँचों स्वास्थ्य नीतियों पर यह चिकित्सा पद्धति खरी उतरी है। आप भी इन पाँच स्वस्थ्य नीतियों के माध्यम से दुनियां कि किसी भी पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं। उसके बाद आप भी कहेंगे कि जिन रिफ्लेक्सोलॉजी चिकित्सा पद्धति विश्व की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है।

विश्व में अनेक चिकित्सा पद्धतियाँ हैं, वे सब कार्य करती हैं औसत परिणामों के आधार पर। लेकिन जिन रिफ्लेक्सोलॉजी चिकित्सा पद्धति है, जो अद्वितीय (यूनिक) पद्धति के रूप में कार्य करती है। सबसे पहले जानते हैं, औसत पद्धति क्या है! जिस पद्धति में परिणाम कारक है या नहीं, यह औसत के माध्यम से जाना जाता है। जैसे - एक दवाई निर्माता सबसे पहले वह दवाई का नामांकन करने से पूर्व जानवरों के ऊपर प्रयोग करते हैं। 100 प्राणियों पर दवाई देकर जाँचा जाता है कि कितने प्रतिशत दवा कारगर

हैं। 70 प्रतिशत के ऊपर दवा के परिणाम अच्छे आते हैं तो उस दवा को बहुमत के आधार पर सभी के लिये लागु कर दिया जाता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति का सर दर्द है वह दवा लेता है, उसका सर दर्द ठीक हो जाता है लेकिन अन्य लेता है तो उसको कोई भी लाभ नहीं होता है, ऐसा क्यों होता है? विश्व में जितने भी मानव रहे हैं, उनके शरीर का एक अंगूठा भी अन्य व्यक्ति के अंगूठे से मिलान नहीं हो पाता है तो सारा शरीर का विश्व में किसी अन्य व्यक्ति से मिलान तो हो ही नहीं सकता है, तो सबके शरीर एक हो ही नहीं सकते। किसी व्यक्ति के लिए दुध - अमृत तुल्य होता है, तो किसी के लिये वह तकलीफ दायक भी बन जाता है। यह तो हम प्रत्यक्ष देखते ही हैं।

जिन रिफ्लेक्सोलॉजी एक अनोखी पद्धति से कार्य करती है। किसी रोगी के सर में दर्द है तो चिकित्सक उसके सर के प्रतिबिंब केन्द्र को नहीं दबाता, बल्कि पहले रोग निदान करता है कि उसका सर दर्द किस कारण से हो रहा है और बाद में उसका इलाज किया जाता है।

नर्सिंग प्रक्रिया एक क्रमबद्ध चरणों की एक प्रक्रिया है, जिसका प्रयोग एक नर्स रोगी की देखभाल हेतु करती है। नर्सिंग प्रक्रिया के द्वारा हमें एक ऐसा आधारभूत ढांचा प्राप्त होता है, जिससे रोगी को शीघ्र राहत प्राप्त होती है। उसी प्रकार से जिन रिफ्लेक्सोलॉजी में भी एक क्रमबद्ध चरणों की प्रक्रिया अपनाई जाती है। नर्सिंग प्रक्रिया के पाँच चरणों पर तुलनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन कर जिन रिफ्लेक्सोलॉजी की महत्ता को जान पायेंगे।

जैन कॉन्फ्रेंस के किसी भी सदस्य (18 से 40 वर्ष) को इस पद्धति का प्रशिक्षण (गुप्तदानी परिवार द्वारा अर्द्धमूल्य योजना अंतर्गत प्रथम 100 योग्य सदस्यों हेतु) प्राप्त करना हो, तो इस नंबर-76206 16261 पर नाम, पता व शिक्षण व्हाट्सएप्प करें। संदर्भ- जैन कॉन्फ्रेंस अवश्य लिखें। ❖❖

बुद्धि, धैर्य, विश्वास, हँसी : सब कुछ निःशुल्क

- प्रेषक : बी. महावीरचन्द पगारिया जैन, विरूगमबक्कम-चेन्नई (तमिलनाडु)

ये कहानी आपके जीने की सोच बदल देगी!

एक दिन एक किसान का बैल कुएँ में गिर गया। वह बैल घंटों जोर-जोर से रोता रहा और किसान सुनता रहा और विचार करता रहा कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। अंततः उसने निर्णय लिया कि चूंकि बैल काफी बूढ़ा हो चुका था, अतः उसे बचाने से कोई लाभ होने वाला नहीं था और इसलिए उसे कुएँ में ही दफना देना चाहिए।

किसान ने अपने सभी पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाया। सभी ने एक-एक फावड़ा पकड़ा और कुएँ में मिट्टी डालनी शुरू कर दी। जैसे ही बैल कि समझ में आया कि यह क्या हो रहा है, वह और जोर-जोर से चीख-चीख कर रोने लगा और फिर अचानक वह आश्चर्यजनक रूप से शांत हो गया। सब लोग चुपचाप कुएँ में मिट्टी डालते रहे, तभी किसान ने कुएँ में झाँका तो वह आश्चर्य से सन्न रह गया।

अपनी पीठ पर पड़ने वाले हर फावड़े की मिट्टी के साथ वह बैल एक आश्चर्यजनक हरकत कर रहा था। वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को नीचे गिरा देता था और फिर एक कदम बढ़ाकर उस पर चढ़ जाता था। जैसे-जैसे किसान तथा उसके पड़ोसी उस पर फावड़ों से मिट्टी गिराते वैसे-वैसे वह हिल-हिल कर उस मिट्टी को गिरा देता और एक सीढ़ी ऊपर चढ़ आता। जल्दी ही सबको आश्चर्यचकित करते हुए वह बैल कुएँ के किनारे तक पहुंच गया और फिर कूदकर बाहर निकल आया ।

ध्यान रखें, आपके जीवन में भी बहुत तरह से मिट्टी फेंकी जायेगी, बहुत तरह की गंदगी आप पर गिरेगी, जैसे कि आपको आगे बढ़ने से रोकने के लिए कोई बेकार में ही आपकी आलोचना करेगा। कोई आपकी सफलता से ईर्ष्या के कारण आपको बेकार में ही भला बुरा कहेगा। कोई आपसे आगे निकलने के लिए ऐसे रास्ते अपनाता हुआ दिखेगा, जो आपके आदर्शों के विरुद्ध होंगे। ऐसे में आपको हतोत्साहित होकर कुएँ में ही नहीं पड़े रहना है, बल्कि साहस के साथ हर तरह की गंदगी को गिरा देना है और उससे सीख लेकर, उसे सीढ़ी बनाकर, बिना अपने आदर्शों का त्याग किये, अपने कदमों को आगे बढ़ाते जाना है।

सकारात्मक रहें, सकारात्मक जीए, क्योंकि इस संसार में...

सबसे बड़ी सम्पत्ति - ''बुद्धि''
सबसे अच्छा हथियार - ''धैर्य''
सबसे अच्छी सुरक्षा - ''विश्वास''
सबसे बढ़िया दवा - ''हँसी'' है
और आश्चर्य की बात कि ''ये सब निःशुल्क हैं..!!

❖❖

दूल्हे के दोस्तों की अनर्गल मजाक दुल्हे-दुल्हन के परिवार को महंगी न पड़ जाए

- श्री एन. सुगालचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)

चेन्नई में शादी का सीजन चल रहा है। दूल्हा अपने दोस्तों की खूब भीड़ इकट्ठी कर रहा है अथवा उसके दोस्त, उसके साथ पुराना हिसाब चुकता करने के लिए बिना बुलाए आ जाते हैं। शादी का स्वागत समारोह सामान्यतः सात बजे शुरु हो जाना चाहिए। लेकिन अमूमन ऐसा नहीं होता है। मैंने देरी की जानकारी ली जो काफी चौंका देने वाली थी। दूल्हें के दोस्तों का जमघट, दूल्हा घोड़ी पर चढ़ते ही सब कार्यवाही अपने हाथ में ले लेते हैं। दूल्हें पर प्रेशर बनाते हैं कि वे जैसा कहें वैसा ही वह करें। दूल्हा भी उस समय प्रेशर में आ जाता है कि वह उनके कहें अनुसार नाचने लगता है।

दूल्हें के दोस्तो को अच्छा-बुरा, शादी का समय, स्वागत समारोह का समय आदि से कोई लेना-देना नहीं। उनको मात्र बेभान हो हुड़दंग मचाकर अपना मनोरंजन करना हैं। मुझे एक भाई ने बताया कि बरात 7 बजे सही समय पर पहुँच गई। लड़की वालों ने दूल्हे के स्वागत में कुछ विशेष प्रोग्राम बनाकर रखे थे। लेकिन दूल्हे के दोस्तों के अतिक्रमण के कारण सब निरस्त करने पड़े। फिर बुर्जुगों ने कमान को हाथ में लिया और दोस्तों को फटकारा, फिर भी स्टेज पर दूल्हा-दुल्हन 8:15 तक ही पहुँच पाये। दूल्हे के दोस्तों कि मंशा 11 बजाने की थी। ताकि रिसेप्सन में आये मेहमान बिना आशीर्वाद दिये सिर्फ कवर पकड़ा कर चले जावें और उन्हें मजा आये।

इसी प्रकार दूसरी जगह दूल्हे के दोस्तों ने वरमाला के प्रोग्राम में एवं रिसेप्सन में देरी करने की भरसक कोशिश की। नाच-गाना करते रहे एवं दूल्हे राजा की घोड़ी को सरकने नहीं दे रहे थे। दूल्हे राजा के सासुजी को जब लगा देरी हो रही है तो पहले खुसामद की फिर जब उनकी खुसामद से उन लोगों पर कोई असर नहीं पड़ा तो बड़े/बुर्जुगों को बुलाया एवं जबरदस्ती कार्यक्रम को आगे बढ़ाया।

दूल्हे के दोस्त नाराज होकर बैठ गए कि जब तक दूल्हा उन्हें बुलाने नहीं आयेगा वे अन्दर नहीं आयेंगे। दूल्हा सुलझा हुआ था उसने उनकी धमकी का कोई संज्ञान नहीं लिया। यहाँ तक की शादी की रस्म के समय किसी भी दोस्त को साथ नहीं रखा। शादी शांतिपूर्वक सम्पन्न हुई।

दोस्तों वर्तमान में इस तरह के अनर्गल कार्य होने लगे हैं। गलती एक की होती है पर बदनाम सब होते हैं। इसलिए मेरा दूल्हा-दुल्हन पक्ष के लोगों से निवेदन है कि सांभेला चालू होने के स्थान से दूल्हा-दुल्हन स्टेज पर पहुंचने तक दूल्हे की तरफ से एक या दो वजनदार व्यक्ति दूल्हे के दोस्तों पर नजर रखें। कोई अव्यवहारिक गतिविधि को प्रोत्साहन न देवे। सब कार्य समयानुसार, शिष्टता से, भद्रतापूर्वक सम्पन्न हो।

विवाह एक पवित्र जन्मों-जन्मों का बंधन हैं। इसकी गरिमा को बनाये रखे। पिछले वर्ष बैंगलोर में जैसा हादसा हुआ वैसा नहीं हो एवं कुछ ऊँच-नीच होने पर दोनों परिवार की इज्जत एवं पैसे का कबाड़ा हो जाता है। कृपया गौर करें और ध्यान देवें। आपका शुभेच्छु ! ❖❖

सच्चा मित्र ...

एक सच्चा दोस्त वह होता हैं जो तब भी हमारे साथ चलता जब पूरी दुनिया हमसे मुंह मोड़ लेती हैं। अगर जिंदगी में कभी डरना नहीं चाहते हो तो एक अच्छा मित्र जरूर बनाओ। एक ऐसा दोस्त बनाये जो आपको खुद से ऊपर उठने के लिए मजबूर करें। एक सच्चा मित्र तब तक आपके आड़े नहीं आता जब तक आप नीचे नहीं जाते। सब कुछ संभव हैं। अगर आपके पास सहयोग करने के लिए सही लोग हो। तीन चीजें उम्र के साथ और अधिक कीमती हो जाती हैं। जलाने के लिए पुरानी लकड़ी, पढ़ने के लिए पुरानी किताबें और आनंद लेने के लिए पुराने दोस्त। दोस्त केवल वही हो सकता हैं जो आपको अच्छे से जानता हैं और आपसे प्यार करता हैं। दोस्ती से मिलने वाला प्यार खुशहाल जीवन का मूल पहलु हैं। एक वफादार दोस्त दस हजार रिश्तेदारों के लायक हैं। हमारी जड़ें हमेशा उलझी रहेगी लेकिन हम हैं तो एक ही दृ हम सबसे अच्छे मित्र हैं। एक अच्छा दोस्त आपके उजड़े हुए बगीचे में खिले हुए फूलों की तारीफ करता हैं। ❖❖

सबसे प्यारे सबसे न्यारे, शेरे राजस्थान हमारे

- श्री मोतीलाल टेवाली, सुमेरपुर (पाली)-(राजस्थान)

दोहा - इट्टयासी में आठ का, जो रखते हैं दिल ।
बालक युवा वृद्ध की, रूप गुरु मंजिल ।।

रूप गुरु के रूप है इतने,
जितने आसमान में तारे।
सबसे प्यारे सबसे न्यारे,
शेरे राजस्थान हमारे।

शिव सम अति शीतल है आनन,
जैसे खिला-खिला हो कानन ।

होठों पर रहता नित सुमिरण,
नैनों में चमके जिन शासन ।।

हस्त-चरण में रिद्धि-सिद्धि,
वाणी में अमृत की फुहारें।

सबसे प्यारे ....

मरू नाडोल की धरती धन-धन,
जन्में भेरू - मोती नंदन ।
जोधाणा तोड़ा मोह बंधन,
बन गये मुक्ता मिश्री चंदन ।।

जप - तप, सेवा, घोर साधना,
स्व-पर हित में तन-मन वारे ।

सबसे प्यारे....

कवि कोतिद संज्ञान प्रदाता,
दीन-हीन के भाग्य विधाता ।
श्रद्धा रख जो शरण में आता,
ताप मिटे, सुखशांति पाता ।।

छत्तीस कोम के सच्चे सद्गुरु,
शरणागत के सदा सहारे ।

सबसे प्यारे....

करूणा सागर है गोपाला,
खोली ठोर - ठोर गौशाला ।
लाखों के घर किया उजाला,
गर्व कभी ना मन में पाला ।।

बच्चों जैसा कोमल दिल है,
पहले डाटे फिर पुचकारे।

सबसे प्यारे....

श्रमण संघ के पूज्य प्रवर्तक,
प्रखर वक्ता धर्म प्रभावक ।
मंगलकर्ता कष्ट निवारक,
लोकमान्य संत आत्म विचारक ।।

नित लगता भक्तों का मेला,
खाली न लौटे तेरे हार।

सबसे प्यारे....

आचार्य से बढ़कर मान,
पूजे सारा हिन्दुस्तान ।
देदो भक्ति का वरदान,
भक्तों के भोले भगवान ।।

समदर्शी ही स्वस्थ शतायु,
जन-जन ही क्या पशु पुकारे।
सबसे प्यार सबसे न्यारे,
शेरे राजस्थान हमारे।।

माँ बाप इस दुनियाँ की सबसे बड़ी पूँजी

- श्री सुमति छल्लाणी जैन-राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, चेन्नई (तमिलनाडु)

किसी गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति अपने बेटे और बहु के साथ रहता था। परिवार सुखी संपन्न था, किसी तरह की कोई परेशानी नहीं थी।

बूढ़ा बाप जो किसी समय अच्छा खासा नौजवान था, आज बुढ़ापे से हार गया था, चलते समय लड़खड़ाता था, लाठी की जरुरत पड़ने लगी, चेहरा झुर्रियों से भर चुका था, बस अपना जीवन किसी तरह व्यतीत कर रहा था।

घर में एक चीज़ अच्छी थी कि शाम को खाना खाते समय पूरा परिवार एक साथ टेबल पर बैठ कर खाना खाता था।

एक दिन ऐसे ही शाम को जब सारे लोग खाना खाने बैठे, बेटा ऑफिस से आया था, भूख ज्यादा थी तो जल्दी से खाना खाने बैठ गया और साथ में बहू और उसका एक बेटा भी खाने लगे। बूढ़े हाथ जैसे ही थाली उठाने को हुए थाली हाथ से छिटक गयी, थोड़ी दाल टेबल पर गिर गयी। बहू बेटे ने घृणा की दृष्टि से पिता की ओर देखा और फिर से अपना खाने में लग गए।

बूढ़े पिता ने जैसे ही अपने हिलते हाथों से खाना खाना शुरू किया, तो खाना कभी कपड़ों पे गिरता तो कभी जमीन पर। बहू ने चिढ़ते हुए कहा - हे राम कितनी गन्दी तरह से खाते हैं, मन करता है इनकी थाली किसी अलग कोने में लगवा देते हैं, बेटे ने भी ऐसे सिर हिलाया जैसे पत्नी की बात से सहमत हो। उनका बेटा यह सब मासूमियत से देख रहा था।

अगले दिन पिता की थाली उस टेबल से हटाकर एक कोने में लगवा दी गयी । पिता की डबडबाती आँखे सब कुछ देखते हुए भी कुछ बोल नहीं पा रहीं थी। बूढ़ा पिता रोज़ की तरह खाना खाने लगा, खाना कभी इधर गिरता कभी उधर। छोटा बच्चा अपना खाना छोड़कर लगातार अपने दादा की तरफ देख रहा था।

माँ ने पूछा - क्या हुआ बेटे, तुम दादा जी की तरफ क्या देख रहे हो और खाना क्यों नहीं खा रहे?

बच्चा बड़ी मासूमियत से बोला - माँ मैं सीख रहा हूँ कि वृद्धों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, जब मैं बड़ा हो जाऊँगा और आप लोग बूढ़े हो जाओगे, तो मैं भी आपको इसी तरह कोने में खाना खिलाया करूँगा।

बच्चे के मुँह से ऐसा सुनते ही बेटे और बहू दोनों काँप उठें, शायद बच्चे की बात उनके मन में बैठ गयी थी क्योंकि बच्चा ने मासूमियत के साथ एक बहुत बड़ा सबक दोनों लोगों को सिखा दिया था।

बेटे ने जल्दी से आगे बढ़कर पिता को उठाया और वापिस टेबल पर खाने के लिए बिठाया और बहू भी भाग कर पानी का गिलास लेकर आई कि पिताजी को कोई तकलीफ ना हो।

तो मित्रों, माँ-बाप इस दुनियाँ की सबसे बड़ी पूँजी हैं, आप समाज में कितनी भी इज्जत कमा लें या कितना भी धन इकट्ठा कर लें, लेकिन माँ-बाप से बड़ा धन इस दुनियाँ में कोई नहीं है। माँ-बाप की हमेशा निःस्वार्थ भाव से सेवा एवं इज्जत करिए, हम जैसा करेंगे, वैसा ही हमें भी मिलेगा। ❖❖

कामयाब होने के लिए अकेले ही आगे बढ़ना पड़ता है,
लोग तो पीछे तब आते हैं जब आप कामयाब होने लगते हैं।
खुद की तरक्की में इतना वक्त लगा दो,
कि किसी दूसरे की बुराई करने का वक्ष्त न मिले।
मिसाल कघयम करने के लिए,
अपना रास्ता स्वयं बनाना होता है।
असंभव शब्द का प्रयोग केवल कायर ही करते हैं,
बहादुर और बुद्धिमान व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं बनाते हैं।।

छोटी - छोटी बातें

- श्री इन्दरचंद कोठारी जैन, कोयम्बतूर (तमिलनाडु)

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप विवाहित हैं या अविवाहित, अगर पूरा पढ़ेंगे, तो प्रेम के आंसू छलक आयेंगे

मुकदमा दो साल तक चला, आखिर पति-पत्नी में तलाक हो गया। तलाक का कारण बहुत मामूली बातें थीं, इन मामूली बातों को बड़ी घटना में रिश्तेदारों ने बदला। हुआ यों कि पति ने पत्नी को किसी बात पर तीन थप्पड़ जड़ दिए, पत्नी ने इसके जवाब में अपना सैंडिल पति की तरफ फेंका, सैंडिल का एक सिरा पति के सिर को छूता हुआ निकल गया। मामला रफा-दफा हो भी जाता, लेकिन पति ने इसे अपनी तौहिन समझी, रिश्तेदारों ने मामला और पेंचीदा बना दिया, न सिर्फ पेंचीदा बल्कि संगीन, सब रिश्तेदारों ने इसे खानदान की नाक कटना कहा। यह भी कहा कि पति को सैंडिल मारने वाली औरत न वफादार होती है न पतिव्रता। इसे घर में रखना, अपने शरीर में मियादी बुखार पालते रहने जैसा है।

कुछ रिश्तेदारों ने तो यह भी उद्घोषणा की कि ऐसी औरत को घर में ही नहीं रहने देना चाहिए। बुरी बातें चक्रवृत्ति ब्याज की तरह बढ़ती है। दोनों तरफ से खूब आरोप उछाले गए। ऐसा लगता था जैसे दोनों पक्षों के लोग आरोपों का वॉलीबॉल खेल रहे हैं। लड़के ने लड़की के बारे में और लड़की ने लड़के के बारे में कई असुविधाजनक बातें कही। मुकदमा दर्ज कराया गया।

पति ने पत्नी की चरित्रहीनता का तो पत्नी ने दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया। छह साल तक शादीशुदा जीवन बिताने और एक बच्ची के माता-पिता होने के बाद आज दोनों में तलाक हो गया।

पति-पत्नी के हाथ में तलाक के कागजों की प्रति थी। दोनों चुप थे, दोनों शांत, दोनों निर्विकार। मुकदमा दो साल तक चला था। दो साल से पत्नी अलग रह रही थी और पति अलग। मुकदमे की सुनवाई पर दोनों को आना होता। दोनों एक-दूसरे को देखते जैसे चकमक पत्थर आपस में रगड़ खा गए हों। दोनों गुस्से में होते। दोनों में बदले की भावना का आवेश होता। दोनों के साथ रिश्तेदार होते, जिनकी हमदर्दियों में जरा-जरा विस्फोटक पदार्थ भी छुपा होता, लेकिन कुछ महीने पहले जब पति-पत्नी कोर्ट में दाखिल होते तो एक-दूसरे को देखकर मुँह फेर लेते। जैसे जानबूझकर एक-दूसरे की उपेक्षा कर रहे हों, वकील और रिश्तेदार दोनों के साथ होते। दोनों को अच्छा-खासा सबक सिखाया जाता कि उन्हें क्या कहना है, दोनों वही कहते। कई बार दोनों के वक्तव्य बदलने लगते। वो फिर सँभल जाते।

अंत में वही हुआ जो सब चाहते थे यानी तलाक। पहले रिश्तेदारों की फौज साथ होती थी, आज थोड़े से रिश्तेदार साथ थे। दोनों तरफ के रिश्तेदार खुश थे, वकील खुश थे, माता-पिता भी खुश थे। तलाकशुदा पत्नी चुप थी और पति खामोश था। यह महज इत्तेफाक ही था कि दोनों पक्षों के रिश्तेदार एक ही टी-स्टॉल पर बैठे, कोल्ड ड्रिंक्स लिया। यह भी महज इत्तेफाक ही था कि तलाकशुदा पति-पत्नी एक ही मेज के आमने-सामने जा बैठे।

लकड़ी की बेंच और वो दोनों 'कांग्रेच्यूलेशन' आप जो चाहते थे वही हुआ 'स्त्री ने कहा।' 'तुम्हें भी बधाई, तुमने भी तो तलाक देकर जीत हासिल की' 'पुरुष बोला।' 'तलाक क्या जीत का प्रतीक होता है?' 'स्त्री ने पूछा। 'तुम बताओ? पुरुष के पूछने पर स्त्री ने जवाब नहीं दिया, वो चुपचाप बैठी रही, फिर बोली, 'तुमने मुझे चरित्रहीन कहा था, अच्छा हुआ अब तुम्हारा चरित्रहीन स्त्री से पीछा छूटा।' 'वो मेरी गलती थी, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था, पुरुष बोला।' 'मैंने बहुत मानसिक तनाव झेला है', स्त्री की आवाज सपाट थी न दुःख, न गुस्सा। 'जानता हूँ पुरुष इसी हथियार से स्त्री पर वार करता है, जो स्त्री के मन और आत्मा को लहू-लुहान कर देता है। तुम बहुत उज्ज्वल हो। मुझे तुम्हारे बारें में ऐसी गंदी बात नहीं करनी चाहिए थी। मुझे बेहद अफसोस है, 'पुरुष ने कहा।' स्त्री चुप रही, उसने एक बार पुरुष को देखा। कुछ पल चुप रहने के बाद पुरुष ने गहरी साँस ली। कहा, 'तुमने भी तो मुझे दहेज का लोभी कहा था।' 'गलत कहा था, पुरुष की ओर देखती हुई स्त्री बोली।

कुछ देर चुप रही फिर बोली, 'मैं कोई और आरोप लगाती लेकिन मैं नहीं, प्लास्टिक के कप में चाय आ गई। स्त्री ने चाय उठाई, चाय जरा-सी छलकी। गर्म चाय स्त्री के हाथ पर गिरी।, स्सी.. की आवाज निकली। पुरुष के गले में उसी क्षण 'ओह' की आवाज निकली। स्त्री ने पुरुष को देखा। पुरुष स्त्री को देखे जा रहा था। 'तुम्हारा कमर दर्द कैसा है?' 'ऐसा ही है कभी वोवरॉन तो कभी काम्बीफ्लेम,' स्त्री ने बात खत्म करनी चाही। 'तुम एक्सरसाइज भी तो नहीं करती।' पुरुष ने कहा तो स्त्री फीकी हँसी हँस दी। 'तुम्हारे अस्थमा की क्या कंडीशन है... फिर अटैक तो नहीं पड़े?' स्त्री ने पूछा। 'अस्थमा। डॉक्टर सूरी ने स्ट्रेन... मेंटल स्ट्रेस कम करने को कहा है, 'पुरुष ने जानकारी दी।' स्त्री ने पुरुष को देखा, देखती रही एकटक। जैसे पुरुष के चेहरे पर छपे तनाव को पढ़ रही हो। 'इनहेलर तो लेते रहते हो न?' स्त्री ने पुरुष के चेहरे से नजरें हटाई और पूछा। 'हाँ, लेता रहता हूँ। आज लाना याद नहीं रहा, 'पुरुष ने कहा।' 'तभी आज तुम्हारी साँस उखड़ी-उखड़ी-सी है, 'स्त्री ने हमदर्द लहजे में कहा।' 'हाँ, कुछ इस वजह से और कुछ...'पुरुष कहते-कहते रुक गया।'

'कुछ... कुछ तनाव के कारण, 'स्त्री ने बात पूरी की। पुरुष कुछ सोचता रहा, फिर बोला, 'तुम्हें चार लाख रुपए देने हैं और छह हजार रुपए महीना भी।' 'हाँ... फिर?' स्त्री ने पूछा। 'वसुंधरा में फ्लैट है... तुम्हें तो पता है। मैं उसे तुम्हारे नाम कर देता हूँ। चार लाख रुपए फिलहाल मेरे पास नहीं है।' पुरुष ने अपने मन की बात कही। 'वसुंधरा वाले फ्लैट की कीमत तो बीस लाख रुपए होगी? मुझे सिर्फ चार लाख रुपए चाहिए' स्त्री ने स्पष्ट किया। 'बिटिया बड़ी होगी सौ खर्च होते हैं...'पुरुष ने कहा।' 'वो तो तुम छह हजार रुपए महीना मुझे देते रहोगे, 'स्त्री बोली।' 'हाँ, जरूर दूँगा।' 'चार लाख अगर तुम्हारे पास नहीं है तो मुझे मत देना, 'स्त्री ने कहा।' उसके स्वर में पुराने संबंधों की गर्द थी। पुरुष उसका चेहरा देखता रहा... कितनी सहृदय और कितनी सुंदर लग रही थी सामने बैठी स्त्री जो कभी उसकी पत्नी हुआ करती थी।

स्त्री पुरुष को देख रही थी और सोच रही थी, 'कितना सरल स्वभाव का है यह पुरुष, जो कभी उसका पति हुआ करता था, कितना प्यार करता था उससे... एक बार हरिद्वार में जब वह गंगा में स्नान कर रही थी तो उसके हाथ से जंजीर छूट गई। फिर पागलों की तरह वह बचाने चला आया था उसे। खुद तैरना नहीं आता था लाट साहब को और मुझे बचाने की कोशिशें करता रहा था ... कितना अच्छा है मैं ही खोट निकालती रही...' पुरुष एकटक स्त्री को देख रहा था और सोच रहा था, 'कितना ध्यान रखती थी, स्टीम के लिए पानी उबालकर जग में डाल देती। उसके लिए हमेशा इनहेलर खरीद कर लाती, सेरेटाइड आक्यूहेलर बहुत महँगा था। हर महीने कंजूसी करती, पैसे बचाती, और आक्यूहेलर खरीद लाती। दूसरों की बीमारी की कौन परवाह करता है? ये करती थी परवाह! कभी जाहिर भी नहीं होने देती थी। कितनी संवेदना थी इसमें। मैं अपनी मर्दानगी के नशे में रहा। काश, जो मैं इसके जज्बे को समझ पाता।'

दोनों चुप थे, बेहद चुप। दुनियाँ भर की आवाजों से मुक्त हो कर, खामोश। दोनों भीगी आँखों से एक-दूसरे को देखते रहे...

'मुझे एक बात कहनी है, 'उसकी आवाज में झिझक थी। 'कहो, 'स्त्री ने सजल आँखों से उसे देखा। 'डरता हूँ,' पुरुष ने कहा। 'डरो मत। हो सकता है तुम्हारी बात मेरे मन की बात हो,' स्त्री ने कहा। 'तुम बहुत याद आती रही,' पुरुष बोला। 'तुम भी,' स्त्री ने कहा। 'मैं तुम्हें अब भी प्रेम करता हूँ।' 'मैं भी 'स्त्री ने कहा।' दोनों की आँखें कुछ ज्यादा ही सजल हो गई थीं। दोनों की आवाज जज्बाती और चेहरे मासूम। 'क्या हम दोनों जीवन को नया मोड़ नहीं दे सकते?' पुरुष ने पूछा। 'कौन-सा मोड़?' 'हम फिर से साथ-साथ रहने लगें... एक साथ... पति-पत्नी बन कर... बहुत अच्छे दोस्त बन कर।' 'ये पेपर?' स्त्री ने पूछा। 'फाड़ देते हैं।' पुरुष ने कहा और अपने हाथ से तलाक के कागजात फाड़ दिए। फिर स्त्री ने भी वही किया। दोनों उठ खड़े हुए। एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर मुस्कराए।

दोनों पक्षों के रिश्तेदार हैरान-परेशान थे। दोनों पति-पत्नी हाथ में हाथ डाले घर की तरफ चले गए। घर जो सिर्फ और सिर्फ पति-पत्नी का था। ❖❖

माँ-स्वरूपा बहन - एक भावात्मक कथा

- सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन-पूर्व राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा-जैन कॉन्फ्रेंस, पुणे (महाराष्ट्र)

बहन की शादी को छः साल हो गए हैं। राकेश कभी उसके घर नहीं गया। होली, दिवाली भईया दूज पर कभी-कभी उसके मम्मी-पापा जाते हैं। राकेश की बीवी एक दिन राकेश से कहने लगी आपकी बहन जब भी आती है उसके बच्चे घर के हाल बिगाड़ कर रख देते हैं। खर्च डब्बल हो जाता है और तुम्हारी माँ हमसे छुप, छुपाकर कभी उसको साबुन की पेटी देती है, कभी कपड़े, कभी सर्फ के डिब्बे और कभी-कभी तो चावल का थैला भर देती है, अपनी माँ को बोलो "ये हमारा घर है कोई खैरात सेंटर नहीं।"

यह बात सुनकर राकेश को बहुत गुस्सा आया। राकेश बोला मैं मुश्किल से खर्च पूरा कर रहा हूँ और माँ सब कुछ बहन को दे देती है। बहन एक दिन घर आई हुई थी उसके बेटे ने टीवी का रिमोट तोड़ दिया, जिसके बाद राकेश माँ से गुस्से में बोला माँ, बहन को बोलो कि यहाँ भैयादूज पर आया करे बस और ये जो आप साबुन, सर्फ और चावल का थैला भरकर देती हैं ना उसको बन्द करें सब। माँ चुप रही, लेकिन बहन ने राकेश की सारी बातें सुन ली थी, बहन कुछ ना बोली।

चार बज रहे थे अपने बच्चों को तैयार किया और कहने लगी - 'भाई मुझे बस स्टॉप तक छोड़ आओ, राकेश ने झूठे मुँह कहा रह लेती कुछ दिन और लेकिन वह मुस्कुराई नहीं भाई बच्चों की छुट्टियाँ खत्म होने वाली है। फिर जब दोनों भाईयों में जमीन का बंटवारा हो रहा था तो राकेश ने साफ इनकार किया भाई मैं अपनी जमीन से बहन को हिस्सा नही दूँगा। बहन सामने बैठी थी। वह खामोश थी कुछ ना बोली। माँ ने कहा- बेटी का भी हक होता है, लेकिन राकेश ने गाली देकर कहा - कुछ भी हो जाये मैं बहन को हिस्सा नहीं दूँगा।

राकेश की बीवी भी बहन को बुरा भला कहने लगी। वह बेचारी खामोश रही। राकेश का बड़ा भाई अलग हो गया। कुछ वक्त बाद राकेश के बड़े बेटे को टीवी हो गई राकेश के पास उसके ईलाज करवाने के पैसे नहीं थे। राकेश बहुत परेशान था, एक लाख रुपया कर्ज भी ले लिया था। राकेश बहुत परेशान था कमरे में अकेला बैठा अपने हालात पर रो रहा था। उस वक्त वही बहन घर आ गई। राकेश गुस्से से बोला - अब ये आ गई है मनहूस। राकेश ने बीबी को कहा कुछ तैयार करो बहन के लिए तो बीबी राकेश के पास आकर बोली - कोई जरूरत नहीं कुछ भी पकाने की इसके लिए। फिर एक घण्टे बाद राकेश की बहन राकेश के पास आई। भाई परेशान हो? बहन ने राकेश के सर पर हाथ फेरा और कहा - बड़ी बहन हूँ तुम्हारी। अब देखो मुझसे भी बड़े लगते हो। फिर राकेश के करीब हुई अपने पर्स से सोने की कंगन निकाले। राकेश के हाथ में रखे और आहिस्ता से बोली - पागल तू ऐसे ही परेशान होता है, ये कंगन बेचकर अपना खर्चा कर, बेटे का इलाज करवा। शक्ल तो देख जरा क्या हालत बना रखी तुमने। राकेश खामोश था। बहन की तरफ देखे जा रहा था। वह आहिस्ता से बोली किसी को ना बताना कंगन के बारे में, तुमको मेरी कसम है।

राकेश के सिर को प्यार से सहलाया और एक हजार रुपये राकेश को दिये जो सौ, पचास के नोट थे शायद बहन की यही जमा पूंजी थी। राकेश की जेब मे डालकर बोली - बच्चों को कुछ खाने के लिए ला देना, परेशान ना हुआ कर। जल्दी से अपना हाथ राकेश के सर पे रखा। देख तेरे बाल सफेद हो गए। वह जल्दी से जाने लगी। उसके पैरों की तरफ राकेश ने देखा। टूटी हुई जूती पहनी थी, पुराना सा दुपट्टा ओढ़ रखी थी। जब भी आती थी वही दुपट्टा ओढ़ कर आती। हम भाई कितने मतलब परस्त होते हैं। बहनों को पल भर में बेगाना कर देते हैं और बहनें भाईयों का जरा सा दुःख बर्दाश्त नही कर सकती। वह हाथ में कंगन पकड़े जोर-जोर से रो रहा था उसके साथ राकेश की पत्नी की आँखे भी नम थी।

अपने घर में भगवान जाने कितने दुःख सह रही होती हैं। कुछ लम्हा बहनों के पास बैठकर हाल पूछ लिया करें। शायद उनके चेहरे पे कुछ लम्हों के लिए एक सुकून आ जाये। 'दोस्तो बहनें मां का रूप होती हैं...!!

❖❖

घर को घर वही बनाती है ...

- सौ. रत्नीबाई मेहता जैन-राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्या, बैंगलोर (कर्नाटक)

घर जाने के लिए निकला। अशांत और विचलित मन लिए सब्जी मंडी पहुँचा कुछ सब्जियाँ खरीदीं। आज कुछ देर हो गई थी तो घर पहुँचकर खिचड़ी अथवा मैगी बना लेने का विचार चल रहा था। पिछले सप्ताह के एक भी कपड़े धुले नहीं थे अतः 5-6 दिन से एक ही जीन्स को रगड़ रहा था।

एक हाथ से काँधे पर लटके बैग को सम्हालता और दूसरे हाथ में दूध की थैली पकड़े पसीने से तरबतर चेहरा लिए घर पहुँचा। द्वार का ताला खोलना चाहा तो देखा, पल्ले भर भिड़के हुए थे, ताला खुला था। कुछ चिंतित हुआ।

जैसे ही घर में प्रवेश किया तो यूँ लगा मानो स्वर्ग में आ गया हूँ। शंका हुई कि किसी दूसरे के घर में तो नहीं आ गया? खामोशी से अंदर के कमरे में गया। फ्रीज खोला तो भीतर की ठंडक चेहरे से टकराई। कोने में अचार रखा हुआ था। मैथी की भाजी बारीक और व्यवस्थित कतरी हुई करीने से रखी थी। सुबह तो फ्रीज में एक ठो बिस्किट पैकेट रखने की जगह नहीं थी, सारा फ्रीज भरा पड़ा था और अब देखो, साफ सुथरी जगह ही जगह थी। धीरे से साथ लाई हुई सब्जियाँ भी फ्रीज में ही रख दीं।

कोने में रखी पानी की टंकी, जिसने हफ्ते भर से पानी का मुँह नहीं देखा था अब, पूरी भरी हुई चमक रही थी। तभी ध्यान गया कि पीछे पीछे अगरबत्ती की खुशबू भी चली आ रही थी, मन को आनंदित कर रही थी। अपना बैग एक कुर्सी पर पटका तो याद आया कि, सुबह अपना टॉवेल बिस्तर पर ही छोड़ दिया था, देखा तो वहाँ न होकर वह खिड़की के बाहर तार पर लटका सूख रहा था। अलमारी का पल्ला खोला जिसमें बिना धुले कपड़े थे, लेकिन अब सारे ही धुले, इस्त्री किए व्यवस्थित रखे थे।

सुबह एक रुमाल मिलकर नहीं दे रहा था और अब, अंदर साफ सुथरे रुमाल पर रुमाल की गड्डी रखी हुई थी। सुबह सॉक्स की जोड़ी नहीं मिली तो अलग-अलग डिजाइन के मोजे पहनकर निकल गया था, लेकिन अब सारे सॉक्स एक स्थान पर व्यवस्थित पड़े मुझे देख मुस्कुरा रहे थे। लाल, पीली, नीली शर्ट्स बढ़िया हैंगर पर टंगी हुई थीं।

धीरे से टीवी के सामने बैठा, टीवी जिस पर धूल की परतें जम गई थीं अब चमक रहा था और स्क्रीन पर चित्र भी स्पष्ट दिख रहे थे। प्यास लगी तो पानी पीने किचिन में पहुँचा, जिस किचिन में लहसुन, प्याज और न जाने किस किस किस्म की गंध भरी रहती थी, अब भूख जगा देने वाले भोजन की सुगंध से महक रहा था। भावनाओं में बहता, बाहर आकर टीवी के सामने एक चेयर पर बैठ गया और अपनी आँखें बंद कर लीं और सोचने लगा। फिर आँखें खोलकर अपनी ही बाँह पर चिमटी ली कि कहीं ये सब स्वप्न तो नहीं। तभी गरमागरम पकौड़ों की प्लेट और भाप निकलती चाय किसी ने सामने टेबल पर रख दी। भीतर का अहम जैसे जर्रा जर्रा होकर बिखर गया। जब थककर आता था तो जैसे तैसे दही चावल पर गुजारा कर लिया करता था और आज भाप निकलती स्वादिष्ट चाय और गरम पकौड़ों का आनंद ले रहा था। न चाहते हुए भी आँसू की दो बूंदें आँखों से निकलकर गालों पर बह निकलीं। फिर खुद को सम्हाला तो अहसास हुआ.....

'क्योंकि आज वो घर पर है !!!'

संसार के सारे सुख और समृद्धि की प्रदाता वो...

किसी के लिए माँ,
किसी की पत्नी,
किसी की बहन,
तो
किसी के लिए बेटी है।

आप कितने ही बड़े हों, महान हों लेकिन सुखमय जीवन के लिए किसी न किसी रूप में एक स्त्री आपके जीवन में अतिआवश्यक है।

वो किसी भी रूप में हो मगर, घर को घर वही बनाती है।

❖❖

फरवरी 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति फरवरी माह में भी गति प्रदान की गई है। वर्तमान में विहार चल रहे हैं और हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फरवरी माह में भी अप्रत्याशित कार्य हुए।

फरवरी माह में राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना की केन्द्रीय समिति ने विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 11,21,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की गई है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 1,28,600 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च कर एक कीर्तिमान स्थापित किया गया। इस प्रकार कुल 12,49,600 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में फरवरी माह में सेवार्थ खर्च की गई।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा, योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलताजी राजावत, राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती मनीषाजी कागरेचा, योजना के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुलजी जैन ने सभी दानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए वैय्यावच्च या सेवा में अभिरुचि रखने वाले सभी महानुभावों से योजना में अधिक से अधिक सहयोग देने की पुरजोर करबद्ध अपील की है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचन्दजी सिंघवी द्वारा साधु-साध्वीवृन्द के प्रति सेवा कार्यों को जहाँ मुक्तहस्त से पूर्ण किया जा रहा है, वहीं आप पूज्य संत-सतीवर्ग की सेवा को अपना परम सौभाग्य मानते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी को इस पुण्यात्मक कार्य से जोड़ने के लिए अपनी एवं अपनी टीम की ओर से तहेदिल से आभार प्रकट किया।

VAYYAVACCH YOJANA ACCOUNT

SHRI ALL INDIA S. S. JAIN CONFERENCE
CANARA BANK BRANCH
GOLE MARKET, NEW DELHI - 110 001
ACCOUNT NO - 0270101137280
IFSC CODE : CNRB0000270

'साहित्य वारिधि' की मानद उपाधि के साथ डॉ. दिलीप धींग को 'श्रुतसेवा सम्मान'

चेन्नई (तमिलनाडु) : विश्रुत जैनविद्या मनीषी डॉ. दिलीप धींग को श्रुतसेवा निधि न्यास द्वारा 4 फरवरी, 2024 को फिरोजाबाद (उ. प्र.) में **'साहित्य वारिधि'** की मानद उपाधि के साथ **'शांतिदेवी गुप्त श्रुतसेवा अलंकरण'** से सम्मानित किया गया। न्यास के 18वें वार्षिक समारोह **'अक्षराभिषेकोत्सव'** में उन्हें यह राष्ट्रीय सम्मान प्राकृत भाषा, साहित्य व अहिंसा के क्षेत्र में उनके सतत्, सुदीर्घ व उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया। मुख्य अतिथि रमेशचंद्र गुप्त (पुणे), अध्यक्ष मुकेशकुमार जैन एवं पदाधिकारियों ने उन्हें प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न, शॉल, पुष्पहार, साहित्य और 25 हजार रुपये के मानधन के साथ सम्मानित किया।

प्रेषक : अमितकुमार जैन 'राजा' महामंत्रीः श्रुतसेवा निधि न्यास

समाचार प्रकाश

महापुरुषों की जन्म जयंति एवं पुण्य स्मरण दिवस त्याग-तपस्या से मनाई

ब्यावर (राजस्थान) : श्रमण संघीय पूज्य प्रवर्तक श्री सुकनमुनिजी म.सा., उप-प्रवर्तक ज्योतिषाचार्य री अमृतमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं मधुर व्याख्यानी पू. श्री रितेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा, उप-प्रवर्तिनी विदुषी महासती पू. श्री मैनाकंवरजी म.सा. एवं विदुषी महासती पू. श्री कंचनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में दिनांक 9 फरवरी 2024 को शुक्रवार को ब्यावर में स्थित मुक्तामिश्री भवन में आचार्य सम्राट्पू. श्री रघुनाथजी म. की 315वीं जन्म जयंति एवं कर्नाटक गज केसरी, खद्दरधारी घोर तपस्वी पू. श्री गणेशीलालजी म.सा. की 62वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में त्याग तपस्या एवं धर्म ध्यान, आराधना के साथ मनाई गई।

म.सा. ने व्याख्यान में आचार्य श्री रघुनाथजी म.सा. एवं गणेशीलालजी म.सा. के जीवन चरित्र का वर्णन कियागया एवं उनके जीवन में धर्म-ध्यान और उनके संयमित जीवन गुणों के महत्व की महिमा का वर्णन किया गया है, साथ ही सभी को उनके जीवन चरित्र को अपनाने की प्रेरणा दी गई है। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस अल्पसंख्यक योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी ओस्तवाल जैन ने बताया कि श्रावक-श्राविकाओं ने इस दिन जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर पर त्याग-तपस्या एवं धर्म-ध्यान के रूप में मनाने का लक्ष्य रखा गया था, उसके अंतर्गत सभी ने तीन-तीन सामायिक, एकासन में बैठकर सैंकड़ों की संख्या में पूरा किये। सभी ने कूपन ग्रहण करके उपवास किया। संचालन वीरसंघ अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी सांखला जैन ने किया। डॉ. अर्पितजी छाजेड़ जैन ने महापुरुषों पर भजन प्रस्तुत किया। पू. श्री सुकनमुनिजी म. सा. ने मंगलपाठ का श्रवण किया। श्री पारसमलजी लोढ़ा जैन एवं श्री प्रकाशजी मकाणा जैन द्वारा श्री धर्मीचंदजी कांठेड़ का साला-माला एवं गौमाता का मोमेंटों द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री राजेन्द्रजी ओस्तवाल जैन, श्री अर्पितजी छाजेड़ जैन, श्री विनोदजी कोठारी जैन, श्री प्रकाशजी मकाणा जैन, श्री पारसमलजी लोढ़ा जैन, पूनमजी भंसाली जैन, प्रिन्स मकाणा सहित अनेकों कार्यकर्ताओं का योगदान रहा। प्रेषक : राजेन्द्रकुमार ओस्तवाल जैन

2550वें निर्वाण कल्याणक वर्ष में जारी होंगे सिक्के

उदयपुर (राजस्थान) : जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक महोत्सव 2023-24 के उपलक्ष्य में भारत सरकार 100 रुपये मूल्य वर्ग के स्मारक सिक्के जारी करेगी। दिनांक 23 फरवरी 2024 को भारत के राजपत्र में जारी अधिसूचना के अनुसार 44 मिलीमीटर के वृत्ताकार ये सिक्के 50 प्रतिशत चाँदी, 40 प्रतिशत ताँबा और 5-5 प्रतिशत निकल व जस्ते से बनेंगे। सिक्के के अग्रभाग में **'सत्यमेव जयते'** उद्‌घोष युक्त राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तंभ एवं सिक्के का मूल्य 100 रुपये अंकित होगा। श्रमण पू. डॉ. श्री पुष्पेन्द्रमुनिजी म.सा. ने बताया कि सिक्के के पृष्ठभाग में तीर्थंकर महावीर की निर्वाण भूमि नालंदा पावापुरी के जलमंदिर का अंकन होगा तथा उस पर 'पावापुरी निर्वाण भूमि' लिखा रहेगा। सिक्के की परिधि में हिंदी और अंग्रेजी में भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण कल्याणक अंकित होगा। हिंदी व अंग्रेजी के नाम के बीच वर्ष '2023' अंकित होगा।

वर्ष 2001 में जब भगवान महावीर का 2600वाँ जन्म कल्याणक मनाया गया, तब पाँच और सौ रुपये के सिक्के जारी किये गये थे। उन सिक्कों के पृष्ठ भाग में संस्कृत भाषा के प्रथम जैन ग्रंथ तत्वार्थ सूत्र के बोधवाक्य **'परस्परोपग्रहो जीवानाम'** के साथ जैन प्रतीक अंकित किया गया था। उल्लेखनीय है कि यह वर्ष तीर्थंकर महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक 2550 वर्ष चल रहा है और इसी संबंध में भारत सरकार के डाक विभाग से भी संपर्क कर अति शीघ्र तीर्थंकर महावीर के जीवनवृत्त पर विस्तृत एक डाक टिकिटों की श्रृंखला जारी करने का अनुरोध किया जा रहा है। प्रेषक : श्रमण पुष्पेन्द्र

मातोश्री वृद्धाश्रम के नवनिर्मित भवन का श्री रमनलालजी लुंकड जैन द्वारा उद्‌घाटन संत-सतियों एवं समाज ने किया अभिनंदन

नासिक (महाराष्ट्र) : जैन संस्थाओं के सेवा कार्य पूरे देश में प्रेरणादायक हैं और इन संस्थाओं को इस कार्य में और अधिक सक्रियता से लगकर गरीबों और जरूरतमंदों की निरंतर सेवा करनी चाहिए, ऐसा आह्वान जैन साध्वियों और संतों ने किया। समनगांव (नासिक रोड़) में थोरल्या मासाहेब जिजाऊ सेवा संस्था द्वारा मातोश्री वृद्धाश्रम के अद्यतन नए भवन का पुणे के प्रसिद्ध दानशूर भामाशाह श्री रमणलालजी लुंकड़ जैन द्वारा भव्य उद्‌घाटन किया गया। सौ. आशाबाईजी लुंकड़ के मंगल हस्त से और 70 से अधिक जैन साध्वियों और संतों की उपस्थिति में यह संपन्न हुआ। श्री रमणलालजी लुंकड़ ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि ऐसे अनूठे समाज उपयोगी कार्य के लिये धन की कमीं नहीं पड़ने दी जाएगी, इतना ही नहीं उन्होंने अपने परिवार की ओर से एक करोड़ इक्यावन लाख रुपये की दानराशि वृद्धाश्रम के लिए घोषित की।

महासाध्वी कमलावतीजी के जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर एवं साध्वी पू. श्री चंदनाजी म.सा. की प्रेरणा से एवं प्रज्ञामूर्ति डॉ. अक्षयज्योतीजी म.सा. के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पुणे के श्री विनोदजी मांडोत जैन ने की। मुख्य अतिथि श्री शांतिलालजी बरमेचा जैन तथा विशिष्ट अतिथि भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री चिमनजी डांगी जैन थे। समनगांव स्थित मातोश्री वृद्धाश्रम के ट्रस्टियों का काम उल्लेखनीय है। संतों ने उनसे इस काम को मजबूती से जारी रखने की अपील की। गणमान्य अतिथियों और कार्यक्रम में उपस्थित साध्वियों एवं संतों की उल्लेखनीय उपस्थिति से इस क्षेत्र में संतों की नगरी की तस्वीर देखने को मिली। वृद्धाश्रम में फिलहाल 85 बुजुर्ग रह रहे हैं। इस भवन में उन्हें बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। भविष्य में आधुनिक रेस्तरां जैसा भोजनगृह बनाने की इच्छा जताने के बाद उन्हें काफी अच्छा प्रतिसाद मिला और तुरंत रमेशजी फिरोदिया ने इस प्रोजेक्ट के लिए 45 लाख रुपये दान देने की घोषणा की। वृद्धाश्रम के लिए करोड़ों का दान जमा हुआ। हर किसी को इस वृद्धाश्रम की खूबसूरत इमारत का दौरा करना चाहिए। ट्रस्ट के महामंत्री अनिल खिंवसरा ने प्रास्ताविक किया।

प्रेषक : संजय बाफना जैन

द्वितीय पुण्य स्मरण दिवस पर श्रद्धांजलि !

जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुनीलजी सांखला जैन सुपुत्र श्री तेजराजजी सांखला जैन का जन्म 9 जून 1966 को हुआ था। कर्नाटक गजकेसरी पू. श्री गणेशीलालजी म.सा. के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धानिष्ठ सांखला परिवार बैंगलोर के प्रथम जैन परिवारों में से एक हैं। श्री सुनीलजी सांखला जैन श्रमण संघ के आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा., पू. श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. एवं पू. डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के कृपा पात्र रहें। अल्पायु में ही आपने संघ समाज एवं व्यापार में अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कर अपनी सरलता, कर्मठता, कुशल व्यवहारिकता, मिलनसारिता से एक कुशल संचालक एवं प्रबंधक के रूप में जैन-जैनेत्तर समाज में एक अलग पहचान बनाई।

आप सदैव जरुरतमंदों की सेवा, मानव सेवा, विहार सेवा आदि कार्यों में सहभागी रहे। जैन कॉन्फ्रेंस में अपने विभिन्न पदों जैसे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री, कर्नाटक प्रांतीय शाखा में विभिन्न पदों पर रहते हुए अपनी निरंतर सेवाएं प्रदान की है। संघ एवं समाज में आपकी कमीं सदा ही महसूस की जाएगी। आपके प्रथम पुण्य स्मरण दिवस पर जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हम सभी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। वंदन, नमन !

शोक समाचार

महासती पू. श्री मनीषाजी म.सा. का संथारा सहित देवलोकगमन

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय प्रथम युवाचार्य प्रवर पू. श्री मिश्रीलालजी म.सा. 'मधुकर', महाश्रमणी महासती परम् श्रद्धेया पू. श्री मनोहरकंवरजी म.सा. की वरिष्ठ सुशिष्या सरलमना परम् विदुषी महासती पू. श्री मनीषाजी म.सा. का संथारा संलेखना सहित पडिंतमरण दिनांक 22 फरवरी 2024 को इंदौर नगरी में हुआ। आपका अकास्मिक देवलोकगमन सम्पूर्ण श्रमण संघ के लिए अपूरणीय क्षति है। आपने अपने चार दशक से अधिक के दीर्घ दीक्षा पर्याय में स्वयं की उत्कृष्ट साधना, आत्म-कल्याण के साथ-साथ जिनशासन की अभूतपूर्व प्रभावना प्रदान की है। आपका सम्पूर्ण जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस का राष्ट्रव्यापी परिवार आपकी निर्मल उज्जवल आलौकिक आत्मा को श्रद्धायुक्त भावों से वंदन, नमन करते हुए वीर प्रभु परमात्मा से यही प्रार्थना करता है। आपकी दिव्य ज्योति उत्तरोतर प्रगति कर अरिहंत स्वरुप को प्राप्त करते हुए सिद्ध स्वरूप को प्राप्त करें इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ हार्दिक आदरांजलि गुणाजंलि समर्पित करते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से वंदन, नमन एवं श्रद्धांजलि। प्रेषक : महेश डाकोलिया जैन

श्रीमती मदनकंवरजी तातेड़ जैन का देवलोकगमन

जोधपुर (राजस्थान) : श्रीमती मदनकंवरजी तातेड़ जैन धर्मपत्नी श्री हुक्मीचंदजी तातेड़ जैन का 6 मार्च 2024 को देवलोकगमन हो गया। आप एक आदर्श सुश्राविका थी तथा सदैव गुरु भगवंतों की सेवा, गोचरी आदि का ख्याल रखती थी। आपका संपूर्ण जीवन सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहेगा। स्वधर्मी आतिथ्य सत्कार आपके जीवन का आदर्श था। आपने अपनी संतानों को धर्म और सामाजिकता के संस्कार बखूबी प्रदान किये है, जिनका पालन समस्त परिवार कर रहा है। ऐसी पुण्य आत्मा का विछोह परिवार के लिए अत्यंत कठिन हैं।

प्रभु महावीर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा मोक्षगामी हो और अपने अंतिम लक्ष्य सिद्धालय को प्राप्त हो। दिवंगत आत्मा को जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि। प्रेषक : प्रकाशचंद तातेड़ जैन

सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी मेहता जैन का देवलोकगमन

सूरत (गुजरात) : सरलमना, धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती कमलाबाईजी मेहता जैन धर्मपत्नी स्व. सेठ श्री सुल्तानसिंहजी मेहता जैन, बड़ी सादड़ी (मातुश्री श्री अशोकसा मेहता जैन, सूरत-राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस) का अकास्मिक देवलोकगमन हो गया। आप सरलता की प्रतिमूर्ति थी एवं देव-गुरु-धर्म में अगाढ़ रूचि रखती थी। आपने धर्म और व्यवहार के सुंदर संस्कार अपनी संतानों को प्रदान किये है, जिनके बीजारोपण से आपका समस्त परिवार धर्म, समाज और व्यापार तीनों जगह लौह स्तम्भ की भांति विद्यमान है और आपके द्वारा प्रदत्त संस्कारों को भलिभांति फलीभूत कर रहे हैं। ऐसी पुण्य आत्मा का विछोह परिवार के लिए अत्यंत कठिन हैं। पूज्य मातुश्री के श्रीचरणों में समस्त जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से भाव नमन करते हुए हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वीर प्रभु परमात्मा से सद्गति की प्रार्थना करते हैं तथा समस्त मेहता परिवार के प्रति हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। प्रेषक : जयंतिलाल कूकड़ा जैन

सुश्रावक श्री एस. उत्तमचंदजी बंब जैन का देवलोकगमन

अजमेर (राजस्थान) : वरिष्ठ समाजसेवी सुश्रावक श्री एस. उत्तमचंदजी बंब जैन सुपुत्र स्व. सेठ श्री दीपचंदजी बंब जैन पीह का देहावसान दिनांक 16 फरवरी 2024 को हो गया। आप अत्यंत मिलनसार, हंसमुख और कुशल वक्ता तथा सदैव सेवा कार्यो में तत्पर रहते थे। ईश्वर आपको उच्चगति प्रदान करें। प्रेषक : गौतमचंद दुग्गड़ जैन

दिवंगत आत्माओं के प्रति जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

द्वितीय पुण्य स्मरण

न जायते म्रियते वा कदाचि नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

।। यह आत्मा किसी काल में भी न जन्मता है और न मरता है और न यह एक बार होकर फिर अभावरुप होने वाला है।
यह आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता।।

भावभीनी श्रद्धांजलि

जन्म
09.06.1966

स्वर्गवास
18.03.2022

युवा समाज रत्न, निर्भीक, स्पष्ट वक्ता, दूरदर्शी, हंसमुख, मधुरभाषी, सभी के स्नेही, सतत श्रमशील, बहुमुखी प्रतिभा के धनी

स्व. श्री सुनीलजी साँखला जैन

सतरा मारच बावीस, हस-बोल चल रहे थे।
अठरा मारच को होली, बधाई भेज रहे थे।।

जिसने भी सुना, भरोसा-विश्वास न हुआ।
कैसी लीला, हम सबसे, पल में जुदा हुआ।।

भगवान तेरी क्या, ये अजब-गजब दुवा।
क्यों वहाँ भी अच्छे की, जरुरत जादा हुआ।।

जिसके कलम में कमाल, वाणी में जादु भरा।
जबान में थी सरस्वती, दिमाग में कल्पना भरी।
कई संघ समाज से जुड़ा, श्रमण संघ का हीरा।।

-:|| भावभीनी श्रद्धांजलि श्रद्धासुमन || :-

हम उस महान आत्मा के प्रति श्रद्धावनत हैं
जिनका कर्मयोगी जीवन ही हमारा प्रेरणा स्त्रोत
एवं मार्गदर्शन रहा है,
आपकी द्वितीय पावन स्मृति में हम सब
आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

गणेश बाग का हँसता फूल, आचार्य शिवमुनि का चहेता-प्यारा।
फोटो खींचने के शौकीन, स्पीकर का चमकता सितारा।।

साँखला कुल उजियारा, संत सती मुनि का प्यारा।
सुनील चमकते रहना सदा चाँद गगन का तारा।।

तेजराजजी - विजयादेवी, तपस्वीजी का सितारा।
लुट गया सोनल, राजीव का एक उज्जवल सहारा।।

सगे संबंधी स्नेही परिजन, भुल कदा नही पायेंगे।
" निर्मला " संबल धैर्य धारण कर, धर्म शरणा धारेंगे।।

श्रद्धावनत : समस्त साँखला परिवार, मोहरा कलां - बेंगलूरु

प्रेषक : राजीव लिखितराज सांखला (9844133988 / 9844546014)

श्रमण संघ व जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियाँ

सूरत : आचार्य भंगवत डॉ. श्री शिवमुनिजी म. सा.
तेरापंथ धर्मसंघ मुनि श्री कुलदीपकुमारजी एवं श्री मुकुलकुमारजी
परस्पर साहित्य का आदान - प्रदान व मंगल भेंटवार्ता।

अदोनी - कर्नाटक आंध्र क्षेत्रों में युवाचार्य भंगवत
श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा. आदि ठाणा का धर्मजागरण साथ में
उपस्थित वैय्यावच्च योजना अध्यक्ष श्री रतनजी सिंघवी व अन्य महानुभाव।

दिल्ली : शास्त्री पार्क में शास्त्री श्री उपेन्द्रमुनिजी म. सा. के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुए
त्रिवेणी संगम महोत्सव में मंचासीन प्रवर्तक पूज्य डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.
उपप्रवर्तक पूज्य श्री सुव्रतमुनिजी म. आदि संतवृंद एवं पूज्या महासाध्वीजी म.।

बैंगलोर - उपप्रवर्तक श्री पंकजमुनिजी म. सा. से धर्म-चर्चा कर
आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनन्दमलजी छल्लाणी जैन आदि महानुभाव।

नासिक : मातुश्री आश्रम में दानवीर भामाशाह
विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री रमणलालजी लुंकड भूमि पूजन पश्चात
भवन निर्माण का अपने हाथों से शुभारंभ करते हुए।

दिल्ली - जैन भवन में जारी भवन नवीनीकरण का अवलोकन कर शिष्टाचार
फोटो श्री रमणलालजी लुंकड, श्री आनन्दजी छल्लाणी, श्री संजयजी बाफना
श्री सुनीलजी बाफना, श्री संजीवजी जैन, श्री जयप्रकाशजी ललवानी आदि।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन — राष्ट्रीय अध्यक्ष
अशोक मेहता जैन — राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
अतुल जैन — राष्ट्रीय महामंत्री
पदमचंद कांकरिया जैन — राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित